RNI:RJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2018

शिव आमंत्रण

आध्यात्म की नई उड़ान...

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

वर्ष 07 अंक 04 हिन्दी (मासिक) अप्रैल 2019 सिरोही पृष्ठ 16 मूल्य ₹ 9.50

05   किसी भी समस्या का संपूर्ण समाधान....

14   जब आपसी मतभेद समाप्त होगा, तभी..

ब्रह्माकुमारीज़ के विश्वभर के सेवाकेंद्रों पर धूमधाम से मनाया गया 83वां शिव जयंती महोत्सव

महाशिवरात्रि पर आठ लाख से ज्यादा लोगों ने बुराइयों से मुक्त होने का लिया संकल्प

8000 से ज्यादा कार्यक्रम देशभर में

800000 लाख लोग हुए शामिल

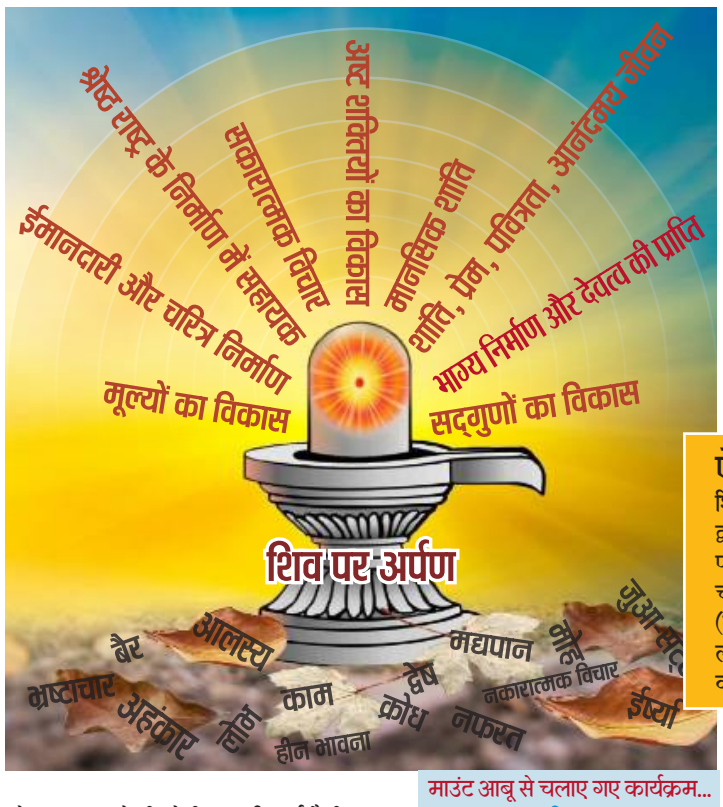

शिव आमंत्रण » आबू रोड। महाशिवरात्रि पर्व ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा 83वीं शिव जयंती महोत्सव के रूप में विश्वभर के सेवाकेंद्रों पर मनाया गया। इसके तहत सेवाकेंद्र से लेकर उपसेवाकेंद्र, गीता पाठशाला और तपस्वी ब्रह्माकुमार भाई- बहनों के घर पर शिव ध्वजारोहण किया गया। विश्वभर में हुए कार्यक्रमों में आठ लाख से अधिक लोगों ने शिव ध्वज के नीचे बुराइयों से मुक्त रहने, सद्गुण अपनाने और श्रेष्ठ भारत निर्माण का संकल्प लिया।

ये चले कार्यक्रम... शिव संदेश शोभायात्रा, संगोष्ठी, सेमीनार, परिचर्चा, रैली, ध्यान योग, प्रभात फेरी, झांकी, समारोह और शिव झंडावंदन कार्यक्रम

यह कराया संकल्प... जीवन में सदा व्यसनों से मुक्त रहने, सकारात्मक सोच, मूल्यों की धारणा, आत्मिक सशक्तिकरण और बुराइयों का दान

देश-विदेश में चली मुहिम... ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के विश्वभर में स्थित सेवाकेन्द्रों द्वारा लोगों को बुराइयों से मुक्त करने के लिए शिवरात्रि का महापर्व 15 दिवसीय महोत्सव के रूप में मनाया गया। इस दौरान लोगों को जहां नशे के दुष्परिणाम बताए गए वहीं जीवन को सुख-शांतिमय बनाने के टिप्स भी दिए गए।

अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय में चला अभियान... शिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में 15 फरवरी से 15 दिवसीय 200 गांवों में चार अभियान चलाए गए। इनके माध्यम से लोगों को शाश्वत जैविक-यौगिक खेती के बारे में रुबरु कराते हुए नशामुक्ति के लिए प्रेरित किया और संकल्प कराया। साथ ही जल संवर्धन, स्वच्छ स्वस्थ भारत को लेकर स्कूलों, सरकारी कार्यालयों, आंगनवाड़ी केन्द्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

माउंट आबू से चलाए गए कार्यक्रम...

जल संवर्धन
22 गांव
25 स्कूल
50 कार्यक्रम
30 हजार प्रतिभागी

व्यसनमुक्ति अभियान
30 गांव
38 स्कूल
15 पब्लिक कार्यक्रम
10 हजार प्रतिभागी

जैविक और यौगिक खेती
65 गांव
71 स्कूल
15 बड़े कार्यक्रम
18 हजार बच्चे शामिल
60 हजार लाभार्थी लाभ

स्वच्छ स्वस्थ भारत अभियान
50 गांव
60 स्कूल
55 कार्यक्रम
10,500 प्रतिभागी

देशभर में निकालीं शोभायात्राएं...

महाशिवरात्रि महोत्सव के तहत देशभर में रैली व शोभायात्राएं निकालीं गईं। इसमें जीवन में व्याप्त बुराइयों को छोड़ने के लिए आमजन को जागरूक किया गया। साथ ही संदेश दिया गया कि गीता में वर्णित धर्मग्लानि का ये वही समय है जब इस धरा पर परमात्मा आकर मनुष्यात्माओं का उद्धार करते हैं। साथ ही सहज राजयोग की शिक्षा से पतित से पावन बनाते हैं। वर्तमान में कलियुग के अंत और सतयुग के आदि की संधि वेला पुरुषोत्तम संगमयुग चल रहा है। यही समय श्रेष्ठ भाग्य बनाने का समय है। परमात्मा का इस धरा पर अवतरण हो चुका है।

ऐसे डाली विकारों की आहुति

शिवरात्रि महोत्सव पर ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा लोगों से जीवन में मन-वचन-कर्म की पवित्रता बनाए रखते हुए श्रेष्ठ मार्ग पर चलने का संकल्प कराया गया। विकारों (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, द्वेष, ईर्ष्या, लालच, नफरत, नकारात्मक विचार और व्यसन) की आहुति डाली गई।

विदेशी मेहमान भी हुए शामिल...

मुख्यालय में आयोजित मुख्य कार्यक्रम में मुख्य प्रशासिका दादी जानकी, संयुक्त प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, महासचिव बीके निर्वैर, यूरोप के सेवाकेन्द्रों की निदेशिका बीके जयंती, जर्मनी की प्रभारी बीके सुदेश, सेंट पीटर्सबर्ग की प्रभारी बीके संतोष, रशिया की निदेशिका बीके चक्रधारी, बीके सुधा सहित देशी-विदेशी मेहमान शामिल हुए।

माउंट आबू में तीनों स्थानों पर फहराया गया शिवध्वज

देशभर सहित अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय के शांतिवन, माउंट आबू, ज्ञान सरोवर परिसर में भी शिव ध्वज फहराकर संकल्प कराया गया।

विकारों पर विजय प्राप्त करने का पर्व

यह पर्व परमात्मा पर अपनी बुराइयों को अर्पण करने का पर्व है। परमात्मा शिव हमसे बुरी चीजें लेकर अच्छी चीजें अर्थात् मूल्यों का वरदान देते हैं। इसलिए इस पर्व पर हमें जीवन में अच्छाइयों को धारण करने का संकल्प लेना चाहिए।

राजयोगिनी दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

नई दुनिया बना रहा परमात्मा

परमात्मा नई दुनिया बनाने के लिए इस सृष्टि पर आते हैं। इसलिए इस पर्व को हम धूमधाम से मनाते हैं। यही कारण है कि यह रात्रि के रूप में मनाते हैं। रात्रि अर्थात् अज्ञानता की रात्रि।

राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी
संयुक्त मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

हमारा प्रयास नई दुनिया की स्थापना

परमात्मा का जो संकल्प है वही हमारा भी संकल्प है। परमात्मा ने इस संस्थान की स्थापना नई दुनिया बनाने के लिए की है। हमारा भी प्रयास है कि विकारों की आहुति देकर अपनी बुराइयों को समाप्त करें।

राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर
महासचिव, ब्रह्माकुमारीज़, माउण्ट आबू

ब्रह्माकुमारीज़ का कार्य सराहनीय

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ने शिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में जो समाजोत्थान का वीणा उठाया है, वह काबिले तारीफ है। इससे लोगों में परमात्मा के दिव्य कर्मों का पता पड़ेगा। इसके साथ ही जो सामाजिक कार्य है उसके प्रति जागरूकता आएगी।

पायल परसराम पुरिया
जिला प्रमुख, सिरोही, राजस्थान

लोगों में आएगी जागरुकता

इन कार्यक्रमों से लोगों में जागरुकता आती है। लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के चक्कर में असली चीजों को भूल जाते हैं। इससे कर्म का बोध रहेगा। आज ऐसे कार्यक्रमों की जरूरत है।

समाराम गरासिया
विधायक, आबू-पिंडवाड़ा, सिरोही, राजस्थान

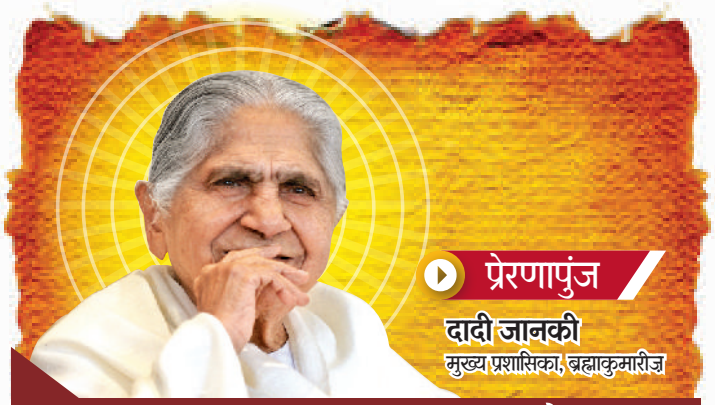

प्रेरणापुंज

दादी जानकी
मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

योगयुक्त स्थिति बनानी है तो व्यर्थ बातों से मुक्त बनो

शिव आमंत्रण आबू रोड। किसी भी बीमार-रोगी पर दया आती है ना, हमारी दृष्टि से दुआ मिले वह ठीक हो जाये, तो यह भी संस्कार बाबा अभी भर रहे हैं। यह थोड़े ही कहेंगे कि यह इसके कर्मों का भोग है। बाबा की दया और दुआ से ही हम सब इतने दिन ऐसे एवर हेल्दी रह सके हैं। पांच फीसदी दवाई है बाकी तो बाबा की ही दुआ है, मदद है। हेल्थ हो, चाहे वेल्थ हो यह भी खजाना इतना बुद्धि में बैठे, धारणा में आए यह भी बाबा हिम्मत देता है। तो एवर हैप्पी रह सकते हैं। हम लोगों को बाबा ने सेवा के लिये इतनी अच्छी-अच्छी बातें दी हैं तो वह देवी हो करके रहो, अभी तुम्हारा पार्ट है। सब पर दया, दुआ करना है। यह कैसा है, वैसा है असुल रिंचक मात्र भी हमको टच न हो। कैसा भी है इसका भी भला हो। ऐसा हमारा दुआओं भरा आवाज हो तो कैसा भी बदल जायेगा।

डायमंड हॉल में बैठे बाबा के गुण गाते हैं, मीठे बाबा ने हमारी जीवन हीरे तुल्य बनाने के लिये कितने प्रकार के साधन हमारे लिये बनाये हैं। इतने बड़े संगठन में, शक्तिशाली वातावरण में अपने आपको देख, मीठे बाबुल ध्यान नहीं हैं और सब बातों से फ्री हैं। हमारी चलन और चेहरा अन्दर की धारणा को प्रत्यक्ष रूप में दिखाता है। यह भी बाबा ने कहा है कि जितना याद की शक्ति होगी उतना राजाई पद पाने के अधिकारी हैं क्योंकि अधिकारी बनना है तो उसके लिए योगबल चाहिए। सही योग किसको कहा जाता है? चलते-फिरते, कार्य-व्यवहार में आते हुए भी अपने ऊपर अटेंशन हो तो योगयुक्त स्थिति रह सकती है। जिसे मां-बाप को फालो करना है, उनकी योगयुक्त स्थिति रह सकती है। जो हदों से पार रहने के लिये अन्दर ध्यान रखते हैं, उनकी योगयुक्त स्थिति रह सकती है। अपने आपको परचिंतन से फ्री रखें। यह हमारी जिम्मेवारी है। यह जिम्मेवारी भी बहुत अच्छा साधन है अपने आपको चेंज करने के लिये, तो इस जिम्मेवारी को जो अच्छी तरह से निभाता है उनको अच्छा रेस्पांड मिलता है।

समेटने और समाने की शक्ति योगयुक्त बनने में बहुत मदद करती है, क्योंकि अन्त मते हमारी स्थिति बहुत ऊंची रहे, बाबा ही सामने हो तो बाप समान बनेंगे। बाबा सामने तब आयेगा जब पढ़ाई और सच्चे पुरूषार्थ पर, सच्ची दिल से सेवा पर ध्यान दिया होगा। बहुत काल का योग माना बहुत काल से सच्चे बाबा के साथ सच्चा रहा हुआ हो। सच्ची दिल से साहेब को सदा राजी रखा हुआ हो तो अंत मते बाबा सामने आयेगा। बाबा मेरे ऊपर सदा राजी रहे, जैसे बाबा कहते बच्चे नियत साफ, दिल साफ तो मुराद हासिल। बाबा की मदद के बिगर तो हम मददगार बन भी नहीं सकते हैं। परन्तु हिम्मत हम बच्चों की मदद बाबा की है। हिम्मते बच्चे मददे बाप- यह भी एक स्टोरी है। सच्ची दिल पर साहेब रजी। सच्ची दिल है हमारी तो साहेब राजी है। फिर कोई भी हमारे से नाराज नहीं हो सकता है। साहेब को राजी रखना हो तो जो भूल एक बार हुई वह दोबारा न हो। हमारी चलन कोई साधारण न हो। अगर बाहर लोगों जैसी हमारी चलन है तो नाम बाला करने के बजाए उसका प्रभाव लोगों पर क्या पड़ेगा। प्रभाव तो छोड़ो पर अपना ही मन खाता रहेगा। तीसरी बात नियत साफ यानी दिल साफ तो मुराद हासिल।

सिर्फ अपने निजी पुरूषार्थ अर्थ या सेवा अर्थ संकल्प है तो भी सफलता नहीं मिलती। भले सेवा की तो अनेकों के सहयोग से सफलता होगी, एक हमारे से नहीं होगी। सेवा अर्थ तो बाबा किसी को भी टच करके करा लेगा। परन्तु अपने पुरूषार्थ के लिये संकल्प इतना शुद्ध, श्रेष्ठ हो जो हमारा हर संकल्प साकार होता रहे। सच्ची दिल से सच्चे बाप को याद करें। दिल में कोई प्रकार के दु:ख-दर्द की फीलिंग न हो। भले देने वाला कोई दे भी लेकिन अन्दर अपने आपको बड़ा शांत और प्रेम वाला ऐसा बनायें जो हमारी दिल में शान्ति और प्रेम हो। चलो किसी का संस्कार कुछ है, जानते हैं कोई बड़ी बात नहीं है। उसको बड़ी बात करके उठा करके अपनी दिल को खराब मत करें। इसमें बहुत ध्यान रखना होता है। योग तभी अच्छा लगता है जब दिल सच्ची है, साफ है, कोई खिटखिट नहीं है। कोई प्रकार का व्यर्थ चिंतन नहीं है। मैं बाबा की मदद कहूं, बहुत मेहरबानी कहूं, हमारे ऊपर इतनी जिम्मेवारी होते हुए भी हम एकदम हल्के रहते हैं क्योंकि हम कभी समझते ही नहीं कि हमारी कोई जिम्मेवारी है क्योंकि बाबा किसलिए है। जिससे हमारी बुद्धि बहुत हल्की रहती है। जो अपने आपको सदा हल्का रखता, खुश रखता, वह नशीबवान है।

क्रमश:...

राजयोग के अभ्यास से मिट गए विधवा और अबला होने जैसा अभिशाप

शिव आमंत्रण आबू रोड। हमारे समाज में नारी का सफर चुनौती भरा जरूर है, परंतु उसमें चुनौतियों से लड़ने का साहस आ गया है। आज की नारी आर्थिक व मानसिक रूप से आत्मनिर्भर है। परिवार व अपने कॅरियर दोनों में तालमेल बैठाती नारी का हिम्मत वाकई काबिले तारीफ है। आज तक विधवा और अबला कहलाने वाली नारी भी हिम्मत और आत्मबल से समाज की पुरानी रूढ़ीवादी परंपरा को तोड़ते हुए खुशनुमा जिंदगी जीने की राह पर दिखाई दे रही है। इसी बात की गवाह बिहार के बेगुसराय जिले के खम्हार गांव में जन्मी शबनम सोनी हैं जो अपने पति के आकस्मिक मौत से आहत होकर खुद को कमजोर, अबला और विधवा मानकर कुंठित जिंदगी जी रही थीं लेकिन राजयोग के अभ्यास ने उन्हें समाज की प्रेरणादायी सशक्त नारी बना दिया है। ब्रह्माकुमारीज़ के शांतिवन परिसर में पधारने पर शिव आमंत्रण पत्रिका के साथ खास बातचीत में उन्होंने अपने जीवन के प्रेरणादायी अनुभव सांझा किए। उन्हीं के शब्दों में उनकी कहानी...

> 38 वर्षीय शबनम सोनी आज कुशलतापूर्वक पूरी परिवार को चला रही हैं। जो पति की मृत्यु के बाद टूट चुकी थीं फिर भी साहस और आत्मबल की बदौलत अपने बच्चों और परिवार को खुशियों से भरी जिंदगी संतुलित करने में कामयाब रही हैं। वह इस कामयाबी का श्रेय राजयोग के निरंतर अभ्यास को देती हैं।

भगवान की खोज में उठते प्रश्न

मेरा जन्म वर्ष 1980 में एक शिक्षित और समृद्ध परिवार में हुआ। मेरी मां शिव भोलेनाथ की बहुत बड़ी भक्त थीं। मैं बचपन से गंभीर स्वभाव की होने के कारण मां के भक्ति भाव से बहुत प्रेरित थी। इससे भगवान के बारे में सोचते रहना एक स्वभाव में आ चुका था। जैसे- क्या कोई इस संसार को चलाने वाला है? इंसान को कौन बनाता है? न जाने यह सृष्टि कितनी बड़ी और कब तक चलती है? भगवान कौन है और कैसा हो सकता है? ऐसे कई सवालों के जबाब न मिल पाना मेरे लिए एक चिंता का विषय जैसा था।

राष्ट्रप्रेम के वजह से झूम-झूम कर गाना

मैं मां को देखकर शिवभक्ति तो करती ही थी परंतु ज्ञान की देवी सरस्वतीजी की पूजा-वंदना करना बहुत अच्छा लगता था। क्योंकि बचपन से मुझे संगीत के साथ-देशभक्ति में बहुत रुचि थी। हमेशा स्कूल-कॉलेज के दिनों में देशभक्ति गीत राष्ट्रप्रेम से अभिभूत होकर झूम-झूम कर गाती रहती थी। हमेशा प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त किया। अपने देश का बचपन से बखान सुन-सुन कर मेरे अंदर देशप्रेम भी भावना इस कदर उमर चुकी थी कि मुझे लगता था काश मैं भी देश की आजादी में शामिल हुई होती तो आज मेरा सौभाग्य कुछ और ही होता।

जीवन में एक नए अध्याय की शुरुआत

मेरे सुमधुर गीतों की आवाज के कायल होने के कारण एक-दो लड़के ने मुझसे प्रेम विवाह के लिए प्रस्ताव रखा। इस बीच मेरी शादी एक किसान परिवार में हो गई। शुरुआती दस साल पति के समय तो खट्टे-मीठे अनुभव भरे रहे। जिंदगी खुशनुमा गुजर रही थी। ऐसे में एक घटना ने मेरे जीवन की दिशा बदल दी।

जीवन का वो दु:खद हादसा...

मेरी शादी के दस साल बीतने के बाद मैं अपने दो बच्चों के साथ घर पर थी उसी समय मेरे पति और उनके छोटे भाई करंट की करंट लगने से मौत हो गई। घर के दोनों चिराग एक साथ बुझ जाना यह मेरे और मेरे बच्चों सहित पूरे परिवार के लिए पहाड़ टूटने जैसा ही था। मेरे रो-रोकर आंसू सूख चुके थे। मैं जिंदगी जीने की आश छोड़ चुकी थी। मैं इतना टूट चुकी थी कि भगवान पर से पूरी तरह आस्था उठ गई थी। खुद को संसार में असहाय मानने लगी थी। घर में दो बच्चे मेरे और दो बच्चे देवरानी के यानी चार बच्चों की पढ़ाई सहित बुजुर्ग मां- बाप की

> "हम तेरे बिन अब रह नहीं सकते, तेरे बिना क्या वजूद मेरा। तुझसे जुदा अगर हो जाएंगे तो खुद से ही हो जाएंगे जुदा, क्योंकि तुम हो बाबा मेरी जिंदगी"

देखभाल कर जीवन चलाना मेरे लिए बहुत बड़ी चुनौती भरा था। उस चुनौती के दबाब में मैं आत्महत्या करने जा रही थी।

एक अदृश्य ताकत और बच्चों की ममता ने मुझे अंदर से थाम कर रखा

घर में बड़ी बहू होने के नाते मेरे ऊपर सबका पालन-पोषण करने की जिम्मेदारी थी। परिस्थितियों से घबराकर मैंने आत्महत्या तक का मन बना लिया था, तब मेरे अंदर मानो एक अदृश्य शक्ति ने जीने के लिए प्रेरणा दी कि तुम्हें जिंदा रहकर इन लोगों की देखभाल करनी है। तब मैंने भी सोचा कि अपने बच्चों की ममतावश मुझे जिंदा रहना ही होगा। तब मैं एक बार फिर हिम्मत के साथ जिंदगी की जंग जीतने के लिए तैयार हो गई। क्योंकि मेरे आलावा मेरे परिवार को देखने वाला कोई नहीं था। मैंने हिम्मत के साथ पैथोलॉजी की पढ़ाई पूरी कर प्राइवेट पैथोलॉजी संस्थान ज्वॉइन किया। साथ ही अपने बच्चों सहित पूरे परिवार का भरण-पोषण करने लगी। फिर भी जीवन में एक प्रकार की हताशा और निराशा बनी रहती थी।

भगवान का मेरे जीवन में पति और प्रेमी के रूप में आगमन

एक समय ऐसा आया जब ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से जुड़ी एक बहन ने मुझे एक बार संस्थान की पत्रिका भेंट कर राजयोग मेडिटेशन सीखने की बात कही। उस पत्रिका के एक प्रेरणादायी लेख पढ़कर मैं बेहद प्रभावित हुई। उसके बाद ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग मेडिटेशन सेवाकेंद्र पर सात दिन का कोर्स करने के लिए प्रेरित हो गई। पहली बार मेडिटेशन केंद्र के सुमधुर सुंदर वातावरण में पहुंच कर गहरी शांति का अनुभव किया, जहां पहुंच कर मेरा रोम-रोम खिल उठा। मुझे एहसास हुआ कि मैं कोई अलग दुनिया में आ चुकी हूं। वहां के भाई-बहनों के स्नेह-प्रेम ने ऐसा एहसास कराया जैसे लगा इन लोगों से मैं कई जन्मों से बिछुड़ी हुई थी जो मुझे यहां आकर सब मिले हैं। सात दिन का राजयोग कोर्स पूरा करने के बाद मुझे अनुभूति हुई कि भगवान मिल गए, मैं फूली नहीं समाती थी। खुशी से परमात्मा की याद में मेरे आंसू बहने लगे। क्योंकि परमात्मा का मेरे जीवन में पति और प्रेमी के रूप में आगमन हुआ। जो पाना था सो पा लिया।

राजयोग के निरंतर अभ्यास से हमारा मनोबल काफी बढ़ गया

वर्ष 2013 से ब्रह्माकुमारीज़ की ज्ञान-मर्यादाओं के साथ राजयोग का निरंतर अभ्यास कर रही हूं। जिस राजयोग के अभ्यास के दौरान मुझे परमात्मा द्वारा मिली हुई अपार शक्तियों के खजानों से मेरा मनोबल काफी बढ़ गया है। अब मैं सदा परमात्म नशे में इतना उड़ती रहती हूं कि विधवा और अबला कहलाने जैसा अभिशाप मिट चुका है। हर कठिन लगने वाला कार्य सफलतापूर्वक आसानी से कर पा रही हूं। अब अपने बच्चों की देखभाल के साथ अनेकों विधवा अबला नारी की एक प्रेरणास्रोत बन चुकी हूं। परिवार के देखभाल के साथ ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र के गीता पाठशाला को भी संचालित कर सामाजिक सेवाओं में लगनशील हूं।

अब अबला नहीं खुद को सबला नारी समझती हूं

अब मैं खुद को अबला नहीं सबला नारी मानती हूं। अब मैं खुद को एक सामाजिक कुरीतियों से बंधा हुआ विधवा नारी नहीं सौभाग्यशाली ब्रह्माकुमारी मानती हूं। अब मुझे विधवा होने का कोई अफसोस नहीं रह गया है। अब मेरे साथ घटी हुई सारी दु:खद घटनाओं को एक कल्याणकारी चक्र समझकर बेहद खुशनुमा जिंदगी जी रही हूं। जिसके लिए अब बार-बार मेरे दिल से परमात्मा पिता के लिए पदमापदम शुक्रिया निकलता है। जो परमात्मा पतियों के भी पति हैं, प्रेमियों के भी प्रेमी हैं। उनके लिए अब दिल से एक ही गीत गुन -गुनाती रहती हूं कि "हम तेरे बिन अब रह नहीं सकते, तेरे बिना क्या वजूद मेरा। तुझसे जुदा अगर हो जाएंगे तो खुद से ही हो जाएंगे जुदा, क्योंकि तुम हो बाबा मेरी जिंदगी"। अंत में खुद को कमजोर समझने वाली महिलाओं से अपील करना चाहूंगी कि अब परमात्मा की याद में हिम्मत ना हारिये खुशी के गीत गाइये। इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर प्रत्येक आत्मा का पार्ट फिक्स है। आज हमारे जो भी मित्र-संबंधी और परिजन हैं उनसे हमारा पिछले जन्मों का हिसाब-किताब है। यदि पिछले जन्म में हमने किसी आत्मा को सुख दिया होगा तो वह इस जन्म में हमें सुख देगी और दुख दिया होगा तो दुख।

कोल्हापुर कारागृह बना ईश्वरीय सुधारगृह... सात वर्षों से ब्रह्मबेला में कैदी करते हैं मेडिटेशन

कोल्हापुर जेल में सात वर्षों से चल रही योग और आध्यात्म की पाठशाला

महाराष्ट्र के कोल्हापुर जेल में ध्यान के बाद प्रवचन का लाभ लेते हुए बंदी।

शिव आमंत्रण कोल्हापुर/महाराष्ट्र। हमारे सामाज में यदि अपराध पर काबू पाना है तो अपराधी की मनोवृत्ति को प्रेमपूर्वक समझकर उसे नेक राह पर चलने के लिए प्रेरित करना होगा। क्योंकि अपराध का मूल कारण नकारात्मक मनोवृत्ति और नकारात्मक विचारधारा है। इस मनोवृति को बदलने के लिए एक सशक्त प्रयास की आवश्कता है। इसी आवश्कता को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय ने देशभर में जेलों के अंदर राजयोग-मेडिटेशन का प्रशिक्षण बंदी भाई-बहनों को दे रहा है। देश के अधिकतर जेलों में ब्रह्माकुमारीज़ के भाई-बहनें अपने तन-मन और धन से बंदियों को सभ्य सकारात्मक बनाने की दिशा में निरंतर प्रयासरत हैं। इसी प्रयास के तहत महाराष्ट्र के कोल्हापुर कारागृह में पिछले सात साल से आध्यात्मिक शिविर लगाकर बंदियों को तनाव, बदले की भावना, नकारात्मक सोच जैसी कई अपराध प्रवृति से निजात दिलाने में प्रयत्नशील है। वर्ष 2013 से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा इस जेल में राजयोग शिक्षा देकर कई बंदियों का जीवन पूरी तरह से बदल दिया है। करीब 65-85 कैदी भाई प्रतिदिन ध्यान लगाते हैं।

2013 से जारी है राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण

65-85 बंदी प्रतिदिन लगाते हैं ध्यान

राजयोग से जेल में इन बंदियों का बदला जीवन

राजयोग के अभ्यास से जेल की सजा जिंदगी में भी चार चांद लगा दिए

बंदी रामचंद्र बिट्ठल ने बताया राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण लेने से पहले ब्रह्माकुमारीज़ की एक पत्रिका का लेख राजयोग के करीब लाने में बेहद मददगार बना। जो मेरे जेल की सजावार जिंदगी में चार चांद लगा दिए। इसके लिए परमात्मा और गाइड करने वाले भाइयों का शुक्रगुजार हूं।

अब मैं अपने जीवन से हमेशा बहुत खुश रहता हूं

बंदी प्रीतम गणपति पाटिल ने कहा मैं कारागृह में एक गुनाहगार कैदी रूप में आया था, लेकिन सौभाग्य से मुझे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के भाइयों द्वारा जो ज्ञान प्राप्त हुआ जिसके वजह से मेरे अंदर का डर, हताशा, निराशा और अकेलापन पूर्णतः समाप्त हो गया। अब मैं अपने जीवन से हमेशा बहुत खुश रहता हूं।

विकारों का चक्कर छोड़ आध्यात्मिक चक्र में आ चुके हैं

बंदी उमेश सुरेश सुनवने ने कहा कि मैंने अपनी आंखों से कई लोगों को बदलते देखा है। विकारों में डूबकर खुद को ही भूल चुका था। कोई काम विकार, कोई क्रोध, लोभ, मोह और कोई तो अहंकार के चक्कर में जेल आ गए थे वे भी अब आध्यात्मिक मार्ग के चक्र पर अग्रसर हो चुके हैं।

अलसुबह से हो जाती है दिनचर्या की शुरुआत

ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोगी साधक भाई बंदियों के बैरक में आध्यात्मिक पाठशाला लगाते हैं। ईश्वरीय महावाक्य सुनकर बंदी जेल के अंदर अपने को बहुत ही सौभाग्यशाली, आनंदमयी, प्रेममयी सुख पा रहे हैं। जेल में उन्हें ब्रह्माकुमार भाइयों द्वारा बदला नहीं बदल कर दिखाना है का स्लोगन रोज पढ़ाया जाता है। प्रतिदिन ब्रह्ममुहूर्त में उठ कर राजयोग का ध्यान करना इनकी दिनचर्या में शामिल हो गया है। वे लोग रोज सुबह एक नियमित स्थान पर ईश्वरीय महावाक्य यानी ज्ञान रूपी गंगा जल से रोज स्नान करते हैं। इस तरह से कैदी अपना आचरण दिन-प्रतिदिन सकारात्मक रूप से सुधारते जा रहे हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र जैसा बन चुका है जेल के अंदर का परिवेश

जिस प्रकार ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर आध्यात्मिक वातावरण रहता है, उसी प्रकार जेल के अंदर भी खुशनुमा आध्यात्मिक वातावरण बन गया है। सेवाकेंद्र की तरह ही जेल में प्रदर्शनी पोस्टर, मेडिटेशन चित्र, अनमोल पुस्तक लाइब्रेरी, प्रेरणादायी स्लोगन आदि बैरक में सभी कैदियों के लिए मौजूद हैं। वहां कई कैदियों का जीवन परिवर्तन होता देख, उनके साथी भी प्रेरित होकर, इस पावन पुनीत कार्य में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे हैं। जेल में नए-नए कैदी भाईयों को पुराने कैदी भाई मेडिटेशन कोर्स का प्रशिक्षण उमंग-उत्साह के साथ देते हैं।

कुछ महान राजयोगी की अथक मेहनत, लगन और परिश्रम से बदली जेल की सूरत

सेवाकेंद्र संचालिका बीके सुनंदा बहन के मार्गदर्शन में जेल में पिछले सात साल से नियमित राजयोग मेडिटेशन का प्रशिक्षण बंदियों को दिया जा रहा है। इस कार्य में बीके डॉ. अश्विन निबालकर, बीके नामदेव जांभके, बीके आनंद सगपाल तथा बीके रघुनाथ भाई का विशेष सराहनीय योगदान है। ये सभी भाई-बहनें जेल में जाकर बंदियों को कर्म सिद्धांत, सकारात्मक चिंतन आदि की कला सिखा रहे हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान के साथ सकारात्मक जीवनशैली के बारे में जो पाठ ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा जेल के अंदर पढ़ाया जा रहा है, इससे बंदियों की गुनाहगार प्रवृत्ति में तीव्र गति से सकारात्मक बदलाव आ रहा है। बंदियों को बहुत मानसिक संतुष्टि मिल रही है। इससे प्रतीत होता है कि उनमें आध्यात्मिक ज्ञान के आधार से पूर्णतः बदलाव करने में कामयाबी हासिल की जा सकती है। इस श्रेष्ठ सेवा से कारागृह प्रशासन परमात्मा और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का आभारी है।
दत्तात्रय गावडे, जेल अधीक्षक, कोल्हापुर मध्यवर्ती कारागृह, महाराष्ट्र

समाज को एक नया रूप देने में आज अनेक कैदी भाई सहयोगी बन रहे हैं। इसके लिए ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान ओर से बेहद शुभभावना और शुभ कामना देती हूं। हम सब जेल में रह रहे कैदी और समाज हित के कार्य को प्रोत्साहित करने के लिए जेल प्रशासन का भी आभारी हैं। मेरा मानना है कि हर वर्ग राजयोग को जीवन में अपनाकर जीवन में सुख, शाति, प्रेम, आनंद से भरपूर करने में अधिक से अधिक समय खुद में लगाए।
बीके सुनंदा बहन, पुणे सबजोन इंचार्ज, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

मुझे पिछले 5 वर्ष से जेल की सेवाएं करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तब से कैदियों में बहुत सकारात्मक परिवर्तन आया है। ऐसे परिवर्तन से एक दिन अवश्य ही दुनिया बदलेगी। आज कैदियों के चेहरे पर देवताई आनंद देखने को मिल रहा है। इस परिवर्तन के लिए परमात्मा के साथ-साथ जेल प्रशासन का भी शुक्रिया अदा करता हूं।
बीके डॉ. अश्विन निबालकर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

वर्ष 2004 में पत्नी से झगड़ा हुआ इस पर उसने सुसाइड कर लिया। इसके इल्जाम में मुझे जेल जाना पड़ा। 2013 से ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा चलाए जा रहे ईश्वरीय पाठशाला से सौभाग्यवश प्रेरित होकर जब मैं बाहर आया तो अपने घर में भी ईश्वरीय पाठशाला खोलकर अपने समाज में खुद का खोया हुआ सम्मान पाकर बेहद खुशनुमा जीवन जी रहा हूं। इसके लिए परमात्मा पिता और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का दिल से धन्यवाद देता हूं।
बीके नामदेव जांभके, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

कोई भी व्यक्ति जन्म से गलत नहीं होता है, उसके सोचने के नजरिये से ही वह अच्छा या बुरा बन जाता है। जिसकी जितनी महान सोच होगी, उसका व्यक्तित्व उतना ही महान होता है। जेल की सेवाओं का जब मुझे अवसर मिला तो खुद को बेहद सौभाग्यशाली समझने लगा। शिवबाबा की कृपा से आज कई कैदियों को आध्यात्मिक ज्ञान से श्रेष्ठ भाग्य बनाने का नशीब प्राप्त हो रहा है। जो बंदी पहले गाली-गलौज के साथ नकारात्मक विचारों से बहुत ग्रसित थे वे आज आध्यात्म के बल से खुद का जीवन बदल दूसरों को भी सकारात्मक विचारों की ओर प्रेरित कर रहे हैं, जो काबिले तारीफ है। कई बंदियों का जीवन प्रेरणादायी बन गया है।
बीके आनंद संकपाल, कोल्हापुर, महाराष्ट्र

बदलाव

बंदी भाई भजनों से प्रभु प्रेम में हुए मग्न, जेल बनी संगीतशाला

जेल में आध्यात्मिकता और संगीतरस में डूबे बंदी भाई

बीके रघुनाथ भाई
(मीडिया) सेवाधारी, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

शिवआमंत्रण कोल्हापुर (महाराष्ट्र)। प्रायः जेल का नाम सुनते ही सबके मन में एक डर-सा पैदा हो जाता हो जाता है। मन में विचार चलते हैं कि जेल के बंदी लोग जो कई तरह के अपराध करके जेल के अंदर आते हैं शायद उनकी मनोवृति कितनी भयानक होगी? उनके अंदर की भावनाएं उनकी वृति बेहद खूंखार, क्रोधी, डरपोक, तनाव चिंता से भरा होगी। ऐसा मेरा मानना था। उन लोगों के अंदर किसी तरह का आध्यात्मिक आत्मज्ञान, परमात्म ज्ञान, तथा ईश्वरीय भजन कीर्तन से भी उनका कोई दूर-दूर तक नाता नहीं होगा। वे लोग नफरत और ईर्ष्या से भरे होंगे लेकिन ऐसी मेरी सोच के विपरीत बिल्कुल सकारात्मक स्थिति जेल के अंदर देख कर मैं दंग रह गया। एक दिन जब ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की ओर से एक राजयोगा शिविर के कार्यक्रम के दौरान मुझे जेल के अंदर जाने का मौका मिला तब एक सख्त पहरेदारी के साथ हम लोगों का सख्ती से जांच पड़ताल की गई। उसके बाद जब हम लोगों का जेल वार्ड में पहुंचना हुआ तो वहां सारे कैदी बिल्कुल अनुशासित तरीके से चेहरे पर मुस्कान लिए तैयार होकर बैठे थे। मुझे आश्चर्य हुआ ये लोग बंदी हैं या कोई बाहर से आए हुए अतिथिगण। तभी कई बंदी भाईयों को हमने देखा कि हारमोनियम, तबला, झांझ लेकर गीत-संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए ज्ञान योग तथा भजन कीर्तन में डूबे हुए थे। कई कैदियों को देख कर मुझे ऐसा लगा कि यह जेल नहीं कोई शरीफ इंसानों के बस्ती में आ चुका हूं। जहां सैकड़ों कैदी भाई गीत भजन की मस्तियों में मद मस्त होकर प्रभु प्रेम में मग्न थे। यह दृश्य देखकर मुझे अनुभव हुआ कि इंसान के अंदर कितने भी कड़े, पुराने, बुरे संस्कार क्यों न हों लेकिन उसे ज्ञान, योग और दृढ़ संकल्पों से बदला जा सकता है।

जेल में बंदियों के भजन-कीर्तन कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी एवं ब्रह्माकुमारीज़ के सदस्य।

मैंने देखा जेल के अंदर बड़े अधिकारी और अनेक बंदी भाई ईश्वरीय सेवाओं में विशेष रुचि रखते हुए वहां चलने वाली ब्रह्माकुमारीज़ की ज्ञान योग के कार्यक्रम में बढ़-चढ़कर भागीदारी निभा रहे हैं। उसके लिए उन लोगों को हृदय से धन्यवाद देता हूं। साथ में मैं परमात्मा पिता का बहुत शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने भी मुझे ऐसी सेवा प्रदान कर धन्य कर दिया है। आगे यही बदलाव पूरे देश के जेलों में देखने की लालसा है जिससे ही हमारा यह कलयुगी दुनिया फिर से सतयुग बनने की राह पर चल पड़ा है। जिसे देखकर बेहद खुशी हुई।

संपादकीय

अहिंसा का पाठ जरूरी

जब व्यक्ति के अंदर मूल्य, सद्भाव और प्रेम बढ़ेगा, तब अशांति, असंतोष और हिंसा रूकेगी। हर व्यक्ति इसके बारे में सोचे कि हमारा मूल कर्त्तव्य क्या है। क्योंकि जो भी व्यक्ति मानवता को समर्थन करता होगा वह निश्चितताैर पर मूल्यों को प्रोत्साहित करेगा। यह हर किसी को समझ लेना चाहिए कि जब मनुष्य के मन में किसी प्रकार का उन्माद उठता है तो वह कर्म के जरिए बाहर निकलता है। उसका परिणाम समाज में अराजकता के तौर पर दिखती है। चाहे वह अपना परिवार हो या दूसरों का हर कोई इस दूषित वातावरण का शिकार होता है। परमात्मा ने प्रत्येक मनुष्य को इस सृष्टि पर नवाचार और नया समाज बनाने के लिए भेजा है ना कि बने हुए को उजाड़ने के लिए। यह भी कर्म का सिद्धांत है जो व्यक्ति दूसरों का उजाड़ता है उसका एक समय के बाद निश्चित तौर पर उजड़ जाता है। यदि हर कोई इस सिद्धांत को भी सोचे तो वह बुरे कर्मों से बच जाएगा। क्योंकि यही स्मृति उसे इन चीजों से बचाती है। आज के समय में व्यक्ति की रियलाइज पावर समाप्त होती जा रही है। इसलिए वह छोटी-छोटी बातों में उलझ जाता है। इससे बचने के लिए सकारात्मक कर्म और सिद्धांत दोनों को ही फालो करना चाहिए।

मेरी कलम से

प्रो. दिनेश डांगे, कोल्हापुर, महा.]
(महाराष्ट्र के प्रसिद्ध लेखक)]

कागज के फूल

रूप धारण करना तो आसान है परंतु गुण धारण करना थोड़ा कठिन जरूर होता है। रात और दिन के ज्ञान का वर्णन तो हमसे हो जाता है परंतु ज्ञान को धारण करके उसके जैसा व्यवहार यदि नहीं होता है तो गर्म तवे पर पानी की बूंद गिरने जैसा है। साधु-संतों का भेष धारण करने से कोई साधु-संत नहीं बन सकता है। बहुरूपी अपनी कला से लोगों का मनोरंजन करता है और अपना पेट पालता है। यदि साधक बहुरूपी बनता है तो साधना मजाक का विषय बन जाती है। रंग-रूप और गंध में गुलाब से ज्यादा कई फूल श्रेष्ठ हैं। फिर भी गुलाब को फूलों का राजा क्यों कहते हैं? ऐसा प्रश्न एक राजा ने अपने दरबार में पूछा जिसके अनेक उत्तर आए परंतु राजा को बहुत सारे उत्तर में से एक पसंद आया। वह इस प्रकार था जो मरुभूमि में जन्मे, धूप में पले और कांटों पर चलकर खिले फिर भी अपनी स्वाभाविक हंसी को ना भूले, वही राजा बनेगा। चाहे फूलों का राजा हो, चाहे मनुष्यों का राजा अर्थात् रूप से कहीं अधिक गुणयुक्त होना असली सौंदर्य है। वैसे देखा जाए तो प्लास्टिक का गुलाब असली गुलाब से कई गुना आकर्षक होता है, मगर उससे खुशबू नहीं मिल सकती है। ज्ञान और गुण का मतलब है, गुलाब के अंदर की खुशबू रूपी गुण स्वाभाविक हैं। इसी तरह मनुष्य के अंदर भी गुण स्वाभाविक होते हैं। परंतु कई तरह का रूप बाहर से ओढ़ा जा सकता है। अत: हमें भूलना नहीं चाहिए कि हम कागज के फूल नहीं हैं। यह सब बना बनाया ड्रामा है। यह सब सच है। परंतु पवित्रता और शांति को ड्रामा नहीं बनने देना है। हंस के भीड़ में दो-चार बगुले आसानी से समा कर चल सकते हैं। उसका चाल तो बगुले की चाल ही चलेंगे परंतु अपने आप को हंस भी कहलाने की कोशिश करेंगे, मगर ज्ञान के मोती कैसे चुगेंगे? दुनिया में ज्यादातर लोग शरीर को ही रंगवाकर सच्चा जोगी अर्थात योगी तपस्वी के रूप में पेश करने की कोशिश करते रहते हैं। परंतु मन को सच्चाई और पवित्रता के रंग से रंग कर असली जोगी नहीं बन पाते वो बगुले ही तो हैं। बगुले का तन तो उजला होता है ही परंतु मन मैला होता है इसलिए मराठी के संत चोखामेका की दो पंक्तियां याद आती है... काय भूललासीं वरलिया रंगा, ऊस डोंगा परि रस नोहे डोंगा अर्थात् तुम क्यों ऊपरी रंग रूप से भ्रमित होता है? गन्ना यदि ऊपर से टेढ़ा-मेढ़ा है तो क्या उसके अंदर का रस टेढ़ा- मेढ़ा हो सकता है। इस प्रकार मनुष्य भले कुरूप हो सकता है परंतु उसके गुणों को ही हमें देखकर गुणवान बनना है। हमें कागज के फूल नहीं बनना है।

बोध कथा जीवन की सीख

महाभारत में अर्जुन की प्रतिज्ञा पूरी हुई

महाभारत का भयंकर युद्ध चल रहा था। लड़ते-लड़ते अर्जुन रणक्षेत्र से दूर चले गए थे। अर्जुन की अनुपस्थिति में पांडवों को पराजित करने के लिए द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु चक्रव्यूह भेदने के लिए उसमें घुस गया। उसने कुशलतापूर्वक चक्रव्यूह के छः चरण भेद लिए, लेकिन सातवें चरण में उसे दुर्योधन, जयद्रथ आदि सात महारथियों ने घेर लिया और उस पर टूट पड़े। जयद्रथ ने पीछे से निहत्थे अभिमन्यु पर जोरदार प्रहार किया। वह वार इतना तीव्र था कि अभिमन्यु उसे सहन नहीं कर सका और वीरगति को प्राप्त हो गया। अभिमन्यु की मृत्यु का समाचार सुनकर अर्जुन क्रोध से पागल हो उठा। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि अगले दिन सूर्यास्त से पहले उसने जयद्रथ का वध नहीं किया तो वह आत्मदाह कर लेगा। जयद्रथ भयभीत होकर दुर्योधन के पास पहुंचा और अर्जुन की प्रतिज्ञा के बारे में बताया। दुर्योधन उसका भय दूर करते हुए बोला-चिंता मत करो, मित्र! मैं और सारी कौरव सेना तुम्हारी रक्षा करेंगे। अर्जुन कल तुम तक नहीं पहुंच पाएगा। उसे आत्मदाह करना पड़ेगा। अगले दिन युद्ध शुरू हुआ। अर्जुन की आंखें जयद्रथ को ढूंढ रही थीं, किंतु वह कहीं नहीं मिला। दिन बीतने लगा। धीरे-धीरे अर्जुन की निराशा बढ़ती गई। यह देख श्रीकृष्ण बोले-पार्थ! समय बीत रहा है और कौरव सेना ने जयद्रथ को रक्षा कवच में घेर रखा है। अतः तुम शीघ्रता से कौरव सेना का संहार करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ो। यह सुनकर अर्जुन का उत्साह बढ़ा और वह जोश से लड़ने लगे। लेकिन जयद्रथ तक पहुंचना मुश्किल था। संध्या होने वाली थी। तब परमात्मा ने लीला रच दी। इसके फलस्वरूप सूर्य बादलों में छिप गया और संध्या का भ्रम उत्पन्न हो गया। 'संध्या हो गई है और अब अर्जुन को प्रतिज्ञावश आत्मदाह करना होगा।' यह सोचकर जयद्रथ और दुर्योधन खुशी से उछल पड़े। अर्जुन को आत्मदाह करते देखने के लिए जयद्रथ कौरव सेना के आगे आकर अट्टहास करने लगा। जयद्रथ को देखकर श्रीकृष्ण बोले-पार्थ! तुम्हारा शत्रु तुम्हारे सामने खड़ा है। उठाओ अपना गांडीव और वध कर दो इसका। वह देखो अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है। यह कहकर उन्होंने अपनी लीला समेट ली। देखते-ही-देखते सूर्य बादलों से निकल आया। सबकी दृष्टि आसमान की ओर उठ गई। सूर्य अभी भी चमक रहा था। यह देख जयद्रथ और दुर्योधन के पैरों तले जमीन खिसक गई। जयद्रथ भागने को हुआ लेकिन तब तक अर्जुन ने अपना गांडीव उठा लिया था। तभी श्रीकृष्ण चेतावनी देते हुए बोले-हे अर्जुन! जयद्रथ के पिता ने इसे वरदान दिया था कि जो इसका मस्तक जमीन पर गिराएगा, उसका मस्तक भी सौ टुकड़ों में विभक्त हो जाएगा। इसलिए यदि इसका सिर जमीन पर गिरा तो तुम्हारे सिर के भी सौ टुकड़े हो जाएंगे। हे पार्थ! उत्तर दिशा में यहां से सौ योजन की दूरी पर जयद्रथ का पिता तप कर रहा है। तुम इसका मस्तक ऐसे काटो कि वह इसके पिता की गोद में जाकर गिरे। अर्जुन ने भगवान की चेतावनी ध्यान से सुनी और अपने लक्ष्य की ओर ध्यान कर बाण छोड़ दिया। उस बाण ने जयद्रथ का सिर धड़ से अलग कर दिया और उसे लेकर सीधा जयद्रथ के पिता की गोद में जाकर गिरा। जयद्रथ के पिता चौंककर उठे तो उनकी गोद में से सिर जमीन पर गिर गया। सिर के जमीन पर गिरते ही उनके सिर के भी सौ टुकड़े हो गए। इस प्रकार अर्जुन की प्रतिज्ञा पूरी हुई। ऐसे ही हम आत्मा रूपी अर्जुन को विकारों रूपी माया दानव को मिटाने के लिए दृढ़ निश्चय की प्रतिज्ञा लेनी है, क्योंकि स्वयं परमात्मा हमारे साथ हैं।

संदेश: यदि जीवन में कोई विपरीत परिस्थिति आती है तो घबराएं नहीं। शांति से सर्वशक्तिमान परमात्मा का ध्यान करें तो उसका समाधान अपने आप मिल जाता है। हर कदम परमात्मा की याद में आगे बढ़ाएंगे तो उनकी मदद मिलना निश्चित है।

आध्यात्म की नई उड़ान...

डॉ. सचिन]
मेडिटेशन एक्सपर्ट

'परचिंतन' रोमिंग की तरह जो दोनों तरफ से कटते

पिछले अंक में आपने जाना चक्रव्यूह का तीसरा से छठा घेराव के बारे में जो इस प्रकार था...

सुख-सुविधाओं का चक्रव्यूह, दैहिक दृष्टि या दैहिक आकर्षण का चक्रव्यूह, इलेक्ट्रॉनिक्स अर्थात् डिजीटल चक्रव्यूह और फैमीलियरिटी यानी दोस्ती लगाव का चक्रव्यूह आदि क्या है और कैसे इस चक्रव्यूह से छुटकारा पाएं... अब आगे...

सातवां चक्रव्यूह

फैशन अर्थात् देह को शृंगारने का चक्रव्यूह

सफेद वस्त्र तो धारण कर लिया परंतु सफेद में भी फैशन। वैसे तो ब्राह्मणों ने वो संसार के शृंगार छोड़ दिए हैं लेकिन कभी-कभी देखने को आते हैं सेंट, पाउडर, क्रीम, नेल पॉलिश, मेंहदी, गहनें, आभूषण, बाल रंगना यह फैशन और फैशन की दुनिया। भगवान का महावाक्य है- सफेद साड़ी पहनी हो बाल खुले हों, हाथ में मुरली हो क्योंकि तुम हो राजऋषि। तुम वो नहीं पहन सकते जो संसार के लोग पहन रहे। तुम्हारा चेहरा, तुम्हारी चलन, तुम्हारी रूहानियत श्वेत में है, निर्मल जीवन में है, पवित्रता में है। तुम वह रंगीन की दुनिया छोड़ चुके हो। तुमने कफन धारण किया है। कईयों को डर लगता है परंतु जो निकल पड़े वो इस मार्ग में निकल पड़े। अब पीछे नहीं जाना है। महान आत्माएं एक ही बार प्रतिज्ञा करती हैं।

जिस कचड़े से बाहर आ गए फिर लौटकर उस गटर में नहीं जाना है। मलमूत्र से बने इस देह को अब क्या शृंगारना है? ब्राह्मण आत्माओं का शृंगार पवित्रता है, दैविक गुण हैं न कि वह शृंगार। स्वयं को सजाना है पवित्रता से, न कि संसार के उस छी-छी शृंगार से। शृंगार कर रहे अर्थात् शृंगार कौन करेगा? जो सुंदर है वह करेगा या जो असुंदर है वह करेगा। शृंगार कर रहे अर्थात् सुंदर नहीं हैं।

विनोबा भावे के जीवन में एक वृतांत है एक दिन ट्रेन में सफर कर रहे थे। एक महिला थी जिसने गजरा पहना था। वो पूछते हैं क्या यह गजरा तुम्हें दिखाई दे रहा है। वो कहती नहीं तो क्यों पहना है, किसलिए पहना है, दिखाने के लिए पहना है। यदि हम अपनी देह के तरफ किसी दूसरी आत्मा को आकर्षित करने का प्रयत्न रहे हैं तो हम उस आत्मा को विकारों के गर्त में डुबोने का महापाप कर रहे हैं। यदि हमारी देह हम ऐसे रखते हैं जिससे दूसरी आत्माओं का ब्रह्मचर्य खंडन हो रहा है तो वह महापाप की श्रेणी है। इस चक्रव्यूह से स्वयं को बाहर निकालना है। श्वेत में बल है।

आठवां चक्रव्यूह

फूड अर्थात् भोजन का चक्रव्यूह

यह भी एक जबदस्त चक्रव्यूह है। एक वह आत्मा है जो जीने के लिए खा रही है और एक दूसरी आत्मा है जो खाने के लिए जी रही है। मैं कहां हूं? ब्रह्माभोजन करते-करते यह संकल्प लाना है। मैं यह किसलिए कर रहा हूं। वह जो गरिष्ट भोजन है, जो इंद्रियों को चंचल करने वाला है। जो सम्यक भोजन नहीं है। जो सम्यक आहार नहीं है। जिस आहार से इंद्रियों में चंचलता निर्माण होती है। दृष्टि-वृति में चंचलता निर्माण होती है। वो सात्विक आहार नहीं, हम कितना भी ब्रह्माभोजन के नाम पर उसे खाएं परंतु यदि वो इंद्रियों को चलायमान कर रही है। जो स्वाद के वश होकर किया जा रहा है। उतना किया जा रहा जितना कि उस देह को आवश्यकता नहीं है। जो रसेन्द्रियों को संभाल नहीं सकता वो जनेंद्रियों को कैसे संभाल सकते। सम्यक आहार मतलब जहां प्रमाद और निंद्रा न हो, जिससे चंचलता न हो। जो शरीर का पुष्टिवर्धन करें। ये तीन चीज आहार में होनी चाहिए। ऐसा आहार जो लेते ही नींद आ जाए। इतना खा रहे जितना कि इस पेट को आवश्यकता ही नहीं है। योगी अर्थात् एक संयमित आहार लेने वाला। मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात् स्वाद से परे। भोजन भी एक चक्रव्यूह जैसा बन सकता है। जैसे वो शिष्य रूक गया उसी गांव में जहां पर स्वादिष्ट भोजन रोज-रोज मिलता है। फिर उसे आश्रम का भोजन फीका लगने लगा।

नौवां चक्रव्यूह

गॉसिप अर्थात् झगमुई-झगमुई का चक्रव्यूह

फरवरी के बोधकथा अनुसार एक शिष्य जो गांव में रूक गया। उसने सुना कि यहां के जो इंचार्च हैं वो ऐसा-ऐसा है। यहां की बाते, वहां की बातें, इसकी बातें उसकी बातें, उसने क्या कहा, उसने क्या कहा, इसी में लगे हुए हैं। करना क्या था और कर क्या रहे हैं? यूनान के सुकरात की जीवन कहानी में वर्णन है तीन फिल्टर परीक्षण का जिसमें व्यक्ति उनके पास आता है और वो कहता है कि आपने सुना है? उसके विषय में ऐसा-ऐसा हुआ है? सुकरात कहते रूको एक मिनट तुमसे पहले मेरे तीन प्रश्न पूछने उसके बाद ही सुनाना। पहला -जो बात तुम मुझे बताने जा रहे हो, क्या तुम्हें पता है कि वह सही है। सौ प्रतिशत सही है? वो व्यक्ति कहता है नहीं वैसे मैंने भी कहीं से सुना है। दूसरी बात- जो बात तुम मुझे बताने जा रहे हो वह अच्छी है या बुरी है? वो कहता है वैसे बात तो बुरी है। तीसरी बात- जो बात मुझे तुम सुनाने जा रहे हो उससे मुझे फायदा होगा या नुकसान होगा? वो कहता है फायदा तो ऐसा कुछ है नहीं। फिर सुकरात कहते बस मुझे तब नहीं सुनाओ। कई लोग ऐसे ही कहते अरे तुमको पता ही नहीं तुम्हारे बाजू में क्या हो रहा है? इसका क्या हुआ उसका क्या हुआ? परचिंतन और परदर्शन ऐसी पतन की जड़ है जिसकी तुलना रोमिंग कॉल से की जा सकती है जो कि कहने और सुनने दोनों स्थिति में दर काटे जाते हैं। इसलिए तो हमें किसी से क्या काम, बस अपने काम से काम रखना है अब। हमेशा दूसरों की ताक-झांक करना यही झगमुई-झगमुई का चक्रव्यूह है।

दसवां चक्रव्यूह

हाईली सेंसेटिव नेचर अर्थात अत्यधिक संवेदनशील प्रकृति का चक्रव्यूह

फीलिंग देवी को किसी ने कुछ कहा बस उदास, आंसू तो बस जैसे यहीं रखे हैं। उसके बटन तो मानों यहीं रखें हैं बटन दबा बस आंसू चालू। रूठना, रूसना, नाराज होना अत्यंत सेंसेटिव नेचर। आध्यात्म अर्थात् इस मार्ग पर सिक-सिक, झुक-झुक, मर-मर यानी हर कदम में मरना है। यदि व्यक्ति बार-बार दुःखी हो रहा, उदास वाला नेचर है तो वह आध्यात्म में उन्नती नहीं कर सकता। प्रायः माना जाता है कि लोगों को संवेदनशील होना चाहिए। परंतु कौन-सी संवेदनशीलता? इस तरह की नहीं जिसमें आंसू बार-बार आते रहें। यह मौजों के नजारे का युग है। भगवान ने कहा है मौजों में जीते हो, मौजों में खाते हो, मौजों में उठते हो, मौजों में बाप को याद करते हो फिर दुःख के आंसू काहे का। भगवान का एक महावाक्य है-योग की धूप से आंसुओं की टंकी को सुखा दो। यह ब्राह्मण जीवन योग की अग्नि पर चलने का मार्ग है। यह कोई बकरी अर्थात् कमजोर बनकर नहीं चलेगा सिर्फ शेरनी बनना पड़ेगा। किसी ने कुछ कह दिया बस उदास, बात-बात पर रूंठना, बात नहीं करना। क्या ये एकरस स्थिति है? नहीं। तो पहले समझना है कारण क्या है? फिर उसका निवारण कर सकेगें। ये सारी दस चक्रव्यूह आपको अब तक बताया गया।

छत्रपति शिवाजी महाराज, भारत के सपूत

"बदला लेने की भावना मनुष्य को जलाती रहती है संयम ही प्रतिशोध को काबू करने का एक मात्र उपाय है"

गौतम बुद्ध, धर्मपिता, बौद्ध धर्म

"तुम अपने क्रोध के लिए दंड नहीं पाओगे, तुम अपने क्रोध के द्वारा दंड पाओगे"

जीवन प्रबंधन

बी.के. शिवानी
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञ
अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर और ब्रह्माकुमारीज़ की टीवी ऑइकॉन, गुरुग्राम, हरियाणा

किसी भी समस्या का संपूर्ण समाधान खुद पर विश्वास के साथ यकीन करने से होता है

अपने मन का इलाज स्वयं करें तभी आप किसी भी तरह की बीमारी और समस्याओं का हल संपूर्ण रूप से कर सकेंगे

शिव आमंत्रण माउंट आबू। आज के समय में जबकि बहुत सारी बातें चारों तरफ सुनने को मिलती हैं और मीडिया भी हमें बहुत सारी सूचनाएं घर बैठे देता रहता है। तो आज के समय लोगों में एक डॉक्टर पर विश्वास करना भी बहुत कठिन हो चुका है। दुनिया में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो डॉक्टर हैं नहीं, लेकिन वो लोगों का उपचार कर देते हैं। कई लोग कहते हैं हम उनके पास गए, उन्होंने ऐसे हाथ लगाया हमारा दर्द चला गया। वो लोग कैसे कर लेते हैं एक दूसरे का उपचार? ना कोई दवाई, कोई सर्जरी नहीं, ना कोई इलाज, ना कोई स्कैन बस कहते हैं थोड़ा-सा मुझे छुआ, थोड़ा इधर दबाया, थोड़ा उधर दबाया बस ठीक हो गया। वह कौन सी विधि है इस तरह का उपचार करने का? वह है यकीन। यकीन ही एक ऐसी दवा है जो रोगी के तरफ से उपचार करने वालों पर किया जाता है और उनकी सकारात्मक प्रकंपन के वजह से दवा भी काम करने लगती है।

पहले अपने मन का इलाज स्वयं करें

विश्वास ही इलाज में मदद करता है। फिर जहां संदेह पैदा हुआ बस इलाज की स्थिति डाउन होने लगेगी। पिछले कुछ सालों में नकारात्मकता और संदेह रूपी अवरोध बड़े से बड़ा रूप में आ चुका है। डॉक्टर हमें कहता है पहले स्कैन कराओ तो पहले संदेह पैदा होता है कराऊं की नहीं कराऊं। कोई डॉक्टर कहे आपको सर्जरी करानी है डाउट आ जाता है। तो फिर मन में आता है सच में सर्जरी करानी है या अपने फायदे के लिए कहते हैं? इस तरह रोगियों को संदेह होता रहे तो अपने ही उपचार में अवरोध पैदा कर रहे हैं। अब एक उपचार करने वाले के नाते हम क्या ऐसा करें जो हम पर उसका विश्वास हो जाए? विश्वास तो जबरन किसी को दिला नहीं सकते हैं। एक डॉक्टर होने के नाते रोगियों को सहजता से विश्वास में लेने के लिए जब उनसे मिलें तो हमारे प्रकंपन से उसे एहसास हो जाए कि इन पर मुझे संपूर्ण विश्वास है। खुद पर संपूर्ण विश्वास रखकर अपने मन का इलाज स्वयं करें, तभी हर तरह की बीमारी और समस्याओं का हल संपूर्ण रूप से कर सकेंगे।

अपनी महसूसता की शक्ति में कोई मिलावट न हो

दुनिया में जो छोटी-मोटी बातें हो रही हैं कि वह डॉक्टर ऐसा है, वैसा है। ऐसी बातों से मीडिया ने जो बातें टीवी, रेडियो, अखबार के द्वारा ऐसी सूचनाएं हम लोगों के दिमाग में भर दिया है। क्योंकि मीडिया हमारे दिमाग पर बहुत ही शक्तिशाली भूमिका निभा रहा है। एक तरफ जागरुकता भी पैदा हो रही है और साथ में उपचार करने की शक्ति का मार्ग भी अवरूद्ध हो रहा है। इसलिए प्रत्येक उपचार करने वाले की जिम्मेदारी है कि वो अपना चेहरा हाव-भाव इतना सुंदर, सकारात्मक, शक्तिशाली बना कर रोगियों का इलाज करे कि रोगी सुनी-सुनायी बातें भूल जाएं। कहे इन पर तो मेरा पूरा विश्वास है। विश्वास-यकीन वह चीज है जो उपचार के लिए दवाई पर दवाई कितना भी खाते रहो लेकिन अंदर से डाउट बना रहे तो दवाई अपना काम करेगी और संदेह अपना काम करता रहेगा। तो मेहनत ज्यादा हो जाएगी। रिजल्ट कम मिलेगा। जैसे ही रिजल्ट कम मिलेगा वैसे ही रोगी का संदेह और भी ज्यादा बढ़ता जाएगा। इसलिए अपनी महसूसता की शक्ति को बहुत क्लीन करना पड़ेगा। इतना शुद्ध की जिसमें कोई तरह की मिलावट नहीं है।

रोगियों के साथ करें अपनत्व व्यवहार

पुराने डॉक्टर से इलाज कराने में बहुतों को सुन कर थोड़ा विश्वास बंधा होता है। लेकिन नए डॉक्टर के पास एक अनजाना सा डर के साथ संदेह भी बरकार रहता है। इसलिए डॉक्टर को सफल इलाज करने के लिए रोगी को अपने विश्वास में बांधना आना चाहिए। रोगी के सामने अनजाना-पराया सा व्यवहार करके पुराने डॉक्टर भी अपना विश्वास खो सकते हैं। लेकिन नया डॉक्टर भी रोगी के साथ अपनत्व के साथ दोस्ताना व्यवहार से रोगी के मन की बात करें तो रोगी को लगता है यह बढ़िया डॉक्टर है। मेरे से इतना प्यार से बात किया। जो बात बताने में मैं डर रही थी शर्मा रही थी वैसी ही बातें कर वह तो मेरा दिल जीत लिया। वो मेरे बहुत ध्यान रखते हैं। इस तरह डॉक्टर विश्वास जीत कर इलाज में सफल हो सकते हैं।

विश्वास के वजह से जादू हो जाता

डॉक्टर की पढ़ाई भी आजकल यही सोच कर करते हैं कि यह बन जाने के बाद बहुत पैसा कमाएंगे। डॉक्टर को भी लगता है कि बहुत रोग बढ़ना ही उनके लिए कमाई का जरिया है। इसलिए डॉक्टर के बात पर भी आज लोगों का भरोसा उठता जा रहा है कि वो कई तरह के जांच कराने अपने फाइदे के लिए कह रहा है या हमारे फाइदे के लिए। क्योंकि इस समय हर कोई अपने फाइदे की बात पहले करते रहते हैं। इसलिए विश्वासी उपचार करने वाले का कमाल हो जाता है क्योंकि उन पर इतना मोटा फीस लेने का टेग नहीं लगा हुआ है। वो सिर्फ दे रहे हैं क्योंकि सामने वाले को जो देना है देकर चला जाना है। जो उपचार कर रहा है उसके दिमाग पर ये नहीं है कि अभी इनसे क्या मिलना है। तो उनकी पावरफुल ऊर्जा डाइरेक्ट उनको मिलती है। सामने वाला कम्पलीट विश्वास पर टिका होता है। फिर वह जादू हो जाता है। फिर लोग कहते हैं यह तो कमाल का जादू हो गया। इसलिए मेडिटेशन हमारे ऊर्जा क्षेत्र को पावरफुल बनाने में मदद करता है।

खुद का डर और तनाव सामने वालों पर भी असर डालता

भले हम गलत तरीके से धन नहीं कमा रहे परंतु खुद का तनाव भी सामने वाले पर बुरा असर डालता है। आज भी जब हम कोई जटिल सर्जरी करने जाते हैं तब हम कितनी भी सर्जरी किए हों जीवन में परंतु थोड़ा सा डर उत्पन्न होता ही है। जब एक ऑपरेशन होने वाला होता तो उससे पहले कितनी तैयारी की जाती है। बहुत बातों का ख्याल रखते हुए भी एक बात का ध्यान प्रायः नहीं रख पाते वो है हमारे मन के विचार कैसे चल रहे हैं? तो हम ऑपरेशन थियेटर में जाने से पहले दो मिनट शांति में बैठ कर सकारात्मक विचार पर ध्यान देकर ही जाएं यह संभव है। आज तक नेचुरली कोई भी बड़े काम से पहले क्या करके जाते थे ? जैसे परीक्षा के समय माथा टेक कर निकलते थे। भगवान को याद करके जाते थे। जब छोटे-मोटे बातों के लिए भगवान को याद करके जाते थे तो जब किसी के जीवन के साथ काम करने जा रहे हैं तो उस परमात्मा को याद करके हमें हाथ लगाना चाहिए।

कोई भी कार्य को आरंभ करने से पहले परमात्मा को याद करें

अगर हम सर्जरी में जाने से पहले एक मिनट साइलेंस में बैठें और विचार करें कि मैं एक पावरफुल आत्मा हूं और भगवान मुझे अपने उपकरण के रूप में उसके लिए यूज करने जा रहा है। मैं केवल भगवान का भेजा हुआ उपकरण मात्र ही हूं। वह रोगी तो भगवान आपका बच्चा है उसकी सलामती के लिए आप मुझे सद्बुद्धि प्रदान करना। जो रोगी सर्जरी के लिए आया होता है वह तो प्रायः भगवान को याद कर के आया होता है। जितना देर डॉक्टर ऑपरेट करते उतना देर उसका परिवार बाहर मंदिर में बैठा होता है। वो लोग तो जुड़े हुए हैं ही भगवान से लेकिन मुख्य रूप से उनको भगवान से जुड़ने की आवश्यकता है जिसके हाथ में सारा पावर है। रोगी को कुछ भी करने का उस ऑपरेशन के टाइम पर। जैसे ही एक मिनट शांति में बैठेंगे और ऐसे विचार उत्पन्न करेंगे तो डर के विचार खत्म हो जाएंगे।

हमेशा अपनी ऊर्जा प्रवाह देने के मोड में रहे...

जब आप किसी से मिलते हैं तो प्रायः दो प्रकार के विचार मन में चलते हैं कि इन्हें क्या देना है और इनसे क्या मिलना है। तो हमारा ऊर्जा प्रवाह किस दिशा में होना चाहिए। हमें रोगी के नाते डॉक्टर को अपनी एनर्जी से संचारित करनी है तो ऊर्जा का प्रवाह किस दिशा में होना चाहिए? मुझे इसको क्या देना है? लेकिन थोड़ी विचार इस तरह की आई कि मुझे इससे क्या मिलना है तो जो मुझे मिलता है वह तो मिलना ही है। लेकिन सामने वाले को हमें क्या देना है? स्वतंत्रता दिवस के मौके पर आप ने प्रधानमंत्री का भाषण सुना होगा। उन्होंने बहुत सुंदर एक लाइन कही कि जब हम लोगों से मिलते हैं तो हम एक विचार उत्पन्न करते हैं कि इसमें मेरा क्या है? अगर मेरा इसमें कुछ नहीं है तो मेरा क्या जाता है? उसका मतलब सारा दिन हम लेने वाली अवस्था में हैं। इसमें मेरा क्या है? मुझे क्या मिलना है? और होना कौन सी अवस्था में था? मुझे तो देने वाले की अवस्था में होना था। मुझे इसको क्या देना है? जितना हम देने वाले मोड में जाएंगे। उतना उपचार तुरंत काम करेगा। उतना सामने वाले को विश्वास में बांधना आसान हो जाएगा।

डॉ. अजय शुक्ला | बिहेवियर साइंटिस्ट
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर (स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड ट्रेनिंग सेंटर, बंजारी, देवास, मप्र)

ब्रह्ममुहूर्त की पवित्रता में आत्मिक अनुभूति का आनंद

जीवन का मनोविज्ञान- 11

जीवन की विराटता के जीवंत प्रमाण वर्तमान युग के भीतर वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से शरीर में जीवात्मा की उपस्थिति को सिद्ध करते हैं। आत्मिक अनुभूति का सुदृढ़ पक्ष स्वयं को अव्यक्त स्थिति तक पहुंचाने और आत्म कल्याण करने में सदैव सहायक होता है। व्यक्तिगत स्तर पर आत्म समृद्धि के लिए मनन-चिन्तन की क्रियाएं उस समय गौरव से भर उठती हैं जब आत्मा ब्रह्ममुहूर्त की पवित्रता को आत्मसात कर लेती है। स्वयं की अन्तर्मुखी अवस्था को अमृतवेले की गहनता जब अपनी ओर खींचती है तब आत्म अभिव्यक्ति की मुखरता - आनंद, ज्ञान, शांति, प्रेम, सुख, पवित्रता एवं शक्ति स्वरूप बन कर प्रकट होती है। आत्मिक अनुभूति के आनंद से अभिभूत मानव जीवन स्वयं को ब्रह्माण्ड के असीम स्वरूप तक पहुंचा देता है जहां प्रकृति के पंच तत्व की दिव्यता को अनहद के भाव द्वारा सूक्ष्म जगत से अनुभव किया जा सकता है ।

ईश्वरीय ज्ञान की शक्ति से सुख-शांति का अभ्युदय

स्वयं आत्मा के द्वारा व्यक्त सात्विकता का परिवेश इतना व्यापक होता है कि सत्संग का परिणाम अपने शक्तिशाली स्वरूप में कार्य करने लगता है। जीवन में प्रत्येक व्यक्ति की वृहद् इच्छा यही रहती है कि ईश्वरीय ज्ञान की शक्ति से सुख-शांति एवं आनंद का स्थायी भाव निर्मित हो जाए। आत्मिक अनुभति के केंद्र में मनुष्य द्वारा इस सत्य को स्थापित किया जाने लगा है जिसमें आत्मा के सुख-शांति का मुख्य स्रोत ज्ञान की शक्ति को बताया गया है। स्वयं के वास्तविक स्वरूप को उसके अजर- अमर एवं अविनाशी सत्ता के समृद्धशाली वृहद् रूप में स्वीकृति प्रदान करते हुए आत्मा की अचल -अडोल एवं स्थित प्रज्ञता की उच्च स्थिति को स्पष्ट किया जाता है। जीवन के प्रांगण में आत्म तत्व की विवेचना का नैसर्गिक आनंद आत्मिक अनुभूतियों को गुण एवं शक्ति की सम्पन्नता से सराबोर कर देता है जिसे आध्यात्मिक पुरुषार्थ की महानतम उपलब्धि के रूप में स्वीकार किया जाता है ।

आत्मिक भाव द्वारा शक्तिशाली कर्मयोग से व्यावहारिक निपुणता

जीवन की प्रक्रिया में निष्काम भक्ति के मार्ग पर गतिशील होना व्यक्तिगत पुण्य की विशेष परिणिति होती है क्योंकि इसके पश्चात् आत्मिक ज्ञान मार्ग का अभ्युदय सुनिश्चित होता है। स्वयं के द्वारा शक्तिशाली कर्मयोग से जीवन में व्यावहारिक निपुणता हेतु आत्मिक भाव की निजता को निरंतर स्वीकारोक्ति का आधार बनाना होता है। मानव अपने स्वभाव से भक्ति , ज्ञान एवं कर्म की ओर बढ़ता है लेकिन वह इसकी ऊंचाई पर स्वयं को तब देख पाता है जब आत्मा-भक्तियोग, ज्ञानयोग, कर्मयोग, प्रेमयोग तथा राजयोग के व्यापक संदर्भ को अन्तः करण से अनुकरण करती है। स्वयं को कर्ता के भान से उन्मुक्त रहकर देखना इस सत्य को उद्घाटित करता है जिसमें व्यक्ति जीवन में समर्पण की अनुभूति से गुजरता है और आत्मिक भाव जगत के योग को व्यावहारिक बना लेता है। जीवन में कर्म कुशलता यह प्रमाणित करती है कि आत्मा के वास्तविक स्वरूप को सदा अनुभूति के द्वारा ही नैसर्गिक रूप से गतिशील बनाया गया है।

जीवन में परमात्म अनुभूति से आत्मिक प्रेम की समृद्धि

आत्म चेतना के प्रति सतत जागृत भाव व्यक्ति को वृहद् आत्म सम्मान से परिपूर्ण कर देता है जो आराध्य के सम्मुख आत्म जगत की महानता के समर्पण का सूक्ष्म स्वरूप होता है। जीवन के सार्थक परिवेश को जब आत्म तत्व अपने स्तर पर अवलोकन करता है तब स्वयं को देव आत्मा की अति श्रेष्ठ अभिव्यक्ति से जोड़ना ईश्वरीय सत्ता की स्वीकारोक्ति का प्रमाण बन जाता है। आत्म चेतना के परिष्कार से कर्मक्षेत्र की दक्षता जहां समृद्ध होती है वहीं परमात्म अनुभूतियों से आध्यात्मिक उच्चता की स्थितियां विकसित होती हैं। लोक व्यवहार में आत्मिक पुरुषार्थ वास्तविक रूप से आत्म अनुभूति के द्वारा गतिशील होता है तथा इसकी श्रेष्ठता का व्यावहारिक संस्करण जीवन का पर्याय बन जाए यह परमात्म अनुभूति का परिणाम होता है। स्वयं का सर्वोच्च सत्ता से अनवरत संबंध तथा मंसा, वाचा और कर्मणा की अखंड पवित्रता का धारणात्मक स्वरूप आत्मानुभूति एवं परमात्मानुभूति का मुख्य कारक होता है।

रियल लाइफ

ओम राधे के जवाब को जज साहब ने गंभीरता से लिया

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा

संस्थापक
प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

रियल लाइफ कॉलम में हम आपको प्रत्येक अंक में बताएंगे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मार्ग में क्या बाधाएं आईं और उनका सामना ब्रह्मा बाबा ने कितनी सरलता से किया.... जीवन को पलटने वाली अद्भुत जीवन कहानी पुस्तक से क्रमश...

> पिछले अंक में आपने जाना कि किस तरह जज साहब ने ओम राधे से सवाल किए और कैसे ओम राधे ने उनका जवाब निडरता के साथ दिया।

जज- दादाजी के कितने बच्चे हैं?

ओम राधे-जज साहब हम दादाजी के शरीर को नहीं देखती हैं। हमें तो दिव्य-चक्षु द्वारा साक्षात्कार होता है। अब आप ही बताइए कि भगवान के कितने बच्चे हैं? क्या कोई मनुष्य पूरी गिनती कर सकता है? भगवान तो त्रिलोकीनाथ हैं, सभी उनके बच्चे हैं। केवल हम उनकी बच्चियां या बच्चे नहीं बल्कि आप भी उनके बच्चे हैं।

जज साहब ये सभी उत्तर शांत होकर सुनते रहे और लिखते रहे। ओम राधे भी कटघरे से नीचे उतर कर हमारी ओर आईं। जनता ने एक बार फिर तालियां बजाईं। विभिन्न समाचार-पत्रों के रिपोर्टर या संवाददाता भी कोर्ट में बैठे ये प्रश्न-उत्तर लिख रहे थे। हम जज से विदाई लेकर चली आईं।

दूसरे दिन प्रातः हमने कराची में लौटकर बाबा को सारा समाचार सुनाया परंतु बाबा को समाचार-पत्रों द्वारा पहले ही सब मालूम हो गया था। वे शांत, साक्षी और निश्चिन्त अवस्था में थे।

अब कराची में कन्याएं-माताएं और परिवार ज्ञानामृत द्वारा अपना जीवन उच्च बनाने लगे परंतु वहां जाने पर भी लोगों ने विरोध न छोड़ा। उन्होंने वहां के साधु टीएल वासवानी को भी भड़का कर अपने साथ मिलाया।

इस वृतांत के बारे में ब्रह्माकुमारी चन्द्रमणि जी ने इस प्रकार लिखा-एक और परीक्षा कराची में साधु टीएल वासवानी ने कन्याओं के लिए मीरा स्कूल खोल रखा था और वे सत्संग भी करते थे। एक दिन बाबा ने हम बच्चों को कहा कि आप जाकर साधु वासवानी जी को ईश्वरीय संदेश भी दे आओ और ज्ञान-वार्तालाप भी कर आओ।

उन दिनों यह मालूम हुआ था कि साधु वासवानी जी ओम मंडली के विरुद्ध पिकेटिंग करने की बात सोच रहे हैं। अतः बाबा ने हमें कहा कि वासवानी जी को कहना कि पहले आप स्वयं ओम मंडली को अच्छी तरह देखिए, वहां आने वाले सत्संगियों के अनुभव पूछिए और यूं ही सुनी-सुनाई बात पर कोई निर्णय न कीजिए और बिना जाने आंदोलन करने की भूल न कीजिए। अतः हम कुछ बहनें इकट्ठी होकर उनके पास गईं और ईश्वरीय संदेश का एक ग्रामोफोन रिकॉर्ड भी साथ ले गईं। हम लोगों से उनका ज्ञान-वार्तालाप हुआ। हमने उन्हें अपना अनुभव भी सुनाया और यह भी बताया कि अब परमपिता परमात्मा हमें क्या ज्ञान दे रहे हैं, उसका लक्ष्य क्या है, उससे हमें प्राप्ति क्या हुई है और उससे हमारे जीवन में परिवर्तन क्या आया है। यह सब सुनकर वासवानी जी बहुत खुश हुए। हमने बाबा की ओर से ओर ओम मंडली की ओर से ओम निवास में आने का निमंत्रण भी दिया।

वे कहने लगे- अच्छा, मैं आपके साथ ही चलता हूं। वे हम सभी के साथ ही कार में बैठकर चलने लगे। ज्यों ही वे कार में बैठे त्यों ही कार के चारों ओर उनके सत्संग में आने वाले तथा प्रशंसक नर-नारी घेरा डालकर खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि हम नहीं जाने देंगे। साधु वासवानी ने कहा कि डरिए नहीं, मैं एक घंटे में वापस लौट आऊंगा परंतु उन लोगों को यह झूठा डर था कि यदि वे भी वहां चले गए और इन पर भी ओम मंडली का ऐसा प्रभाव पड़ गया कि यह वहीं के हो गए तो हम सबका क्या होगा? अतः उन्होंने वासवानी जी को नहीं जाने दिया। आखिर वासवानी जी कार से उतर आए और बोले कि दादा से मिलने का बहुत ही मन था परंतु अभी नहीं चल सकूंगा, फिर कभी आऊंगा।

अब साधु वासवानी जी के शिष्यों ने तथा मुखी लोगों ने उन्हें खूब भड़काया। एक दिन आया कि साधु वासवानी जी ने उन सभी के साथ मिलकर ओम निवास के बाहर पिकेटिंग की। हजारों लोग वहां इकट्ठे हो गए। सभी ने बहुत जोर से आक्रमण किया। वे दीवार तोड़कर अंदर भी घुस आए लेकिन शीघ्र ही पुलिस ने पहुंचकर सभी को भगा दिया। वासवानी जी को पुलिस ले गई। साधु वासवानी जी श्रीकृष्ण के भक्त थे और गीता में उनकी बहुत श्रद्धा थी। यदि लोग उन्हें न भड़काते और वे एक बार दादा से सम्मुख ज्ञान वार्तालाप करते तो वे पिकेटिंग न करते बल्कि बहुत ही खुश होते परंतु। अब पिकेटिंग से वातावरण और भी बिगड़ गया। मुखी लोगों ने साधु वासवानी जी को भी साथ मिलाकर सिंध सरकार पर दबाव डालना शुरू किया कि वह ओम् मंडली पर प्रतिबंध लगाए। इस कारण हिन्दू सदस्यों तथा मंत्रियों ने मुख्यमंत्री तथा विधि मंत्री पर दबाव डाला और उन्हें धमकियां भी दीं।

आगे क्या हुआ अगले अंक में क्रमशः....

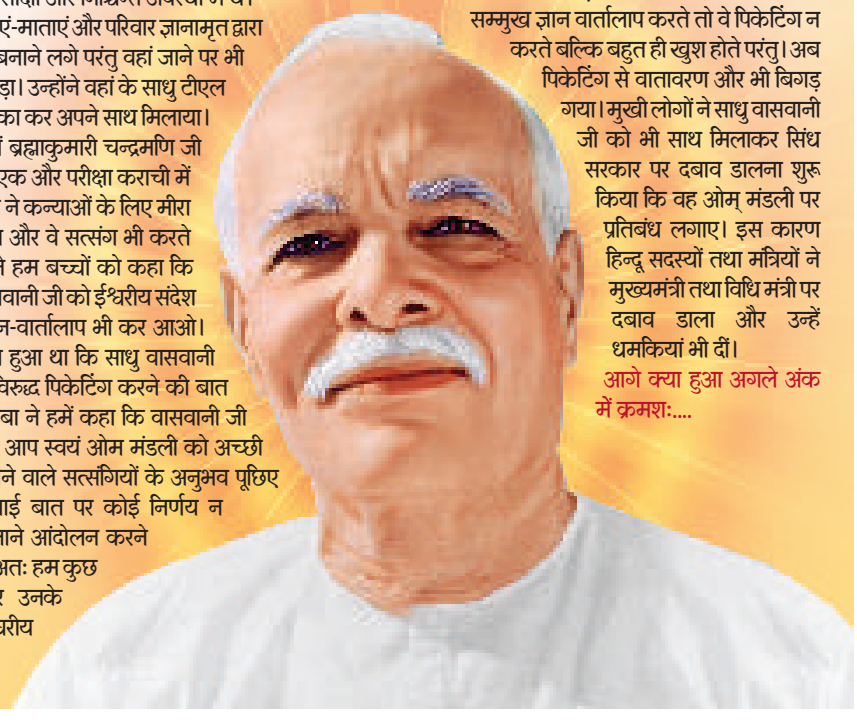

माइंड पॉवर ऑफ YOUTH

रोज मेडिटेशन करने से एकाग्रता की शक्ति बढ़ गई

संजु कुमारी
छात्रा, मेडिकल, इंदौर
मध्यप्रदेश

मेरी बहुत ज्यादा भूलने की प्रवृति से बेहद परेशान रहती थी। आत्म विश्वास दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा था। इससे पढ़ाई में भी मन नहीं लगता था। मन नकारात्मक विचारों से भर कर मन को कमजोर किये जा रहा था। इसी क्रम में एक साल पहले मुझे ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की एक मैगजीन पढ़ते हुए मेडिटेशन सीखने की प्रेरणा मिली। उसके बाद मैंने अपने नजदीकी सेवाकेंद्र पर जा कर मेडिटेशन की शिक्षा ली और रोज मेडिटेशन करने से मेरे अंदर गजब की एकाग्रता बढ़ने लगी। उसी के बदौलत आज मैं मेडिकल की छात्रा हूं। इस उन्नती के लिए मैं परमात्मा और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का बहुत-बहुत शुक्रगुजार हूं। मैं युवाओं से अपील करूंगी कि वह अपने जीवन में राजयोग को अवश्य अपनाएं।

राजयोग के प्रयोग से प्रत्येक कार्य में मिलती है सफलता

रंजीत कुमार
पैथोलॉजिस्ट(आस्था जांच)
बेगूसराय, बिहार

पिछले 15 वर्षों से लगातार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के साथ सामाजिक सेवाओं में संलग्न होकर अपने को बेहद खुशी से व्यस्त रखता हूं। खुद को 24 घंटे में 18 घंटा बिजी लाइफ होकर भी इजी लाइफ महसूस करता हूं। मानो हर कठिन कार्य जैसे सहजता से हुआ ही पड़ा है। किसी भी तरह के विघ्न-बाधाओं को झेलना जैसे खेल बन चुका है। ऐसी सफलता का श्रेय ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान द्वारा सिखाया जा रहा राजयोग मेडिटेशन के निरंतर अभ्यास को जाता है। इस प्रकार की अभ्यास विधि परमात्मा द्वारा दिया जा रहा वरदानी उपहार ही समझता हूं जिसे अपनाकर मैं खुद को बेहद सौभाग्यशाली मानता हूं। इतना मैं खुद के अनुभव से कह सकता हूं कि राजयोग का प्रयोग प्रत्येक कार्य में अवश्य सफलता दिलाता है।

वंडर्स ऑफ BRAHMAKUMARIS

इस कॉलम में हम आपको हर बार ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भाई-बहनों को मिले पुरस्कार या सम्मान से रुबरु कराएंगे। इस बार आप जानेंगे दादीजी जानकी को मिला लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड और बीके शिवानी को नारी शक्ति अवार्ड...

103 वर्षीय दादी जानकी को लाइफ टाइम अवार्ड से सम्मानित किया

सावित्रीबाई फुले विद्यापीठ द्वारा पुरस्कार स्वीकारते हुए दादी जानकी

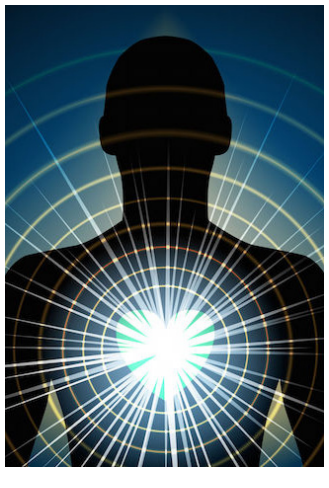

शिव आमंत्रण » दिल्ली। अन्तर्राष्ट्रीय आध्यात्मिक संस्थान बह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका 103 वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी जी अपने जीवन के 104वें वर्ष में हैं और विश्व भर में संस्थान के सदस्यों के लिए यह गौरव की बात है। जिस संस्था का नेतृत्व एक ऐसी महान हस्ति करें तो वह अपने आप में ही गर्व का अनुभव कराती है। दादी जानकी आज भी देश और दुनिया में चक्कर लगाकर बेहद की सेवाएं कर रही हैं और इसी कड़ी में दादी के मुंबई पहुंचने पर महाराष्ट्र जोन की तरफ से उनके 103वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में सहकार बडाला में विशाल कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें 10 हजार से ज्यादा लोग शामिल हुए। इस मौके पर दादी जानकी को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। महाराष्ट्र में सावित्रीबाई फुले पुणे यूनिवर्सिटी ने अपने 70वें स्थापना दिवस पर दादी जी को इस अवार्ड से सम्मानित किया। अपने-अपने क्षेत्रों में मानव जाति के लिए सेवाएं प्रदान करने वाले लोगों को सावित्री बाई फुले पुणे विश्वविद्यालय हर साल सम्मानित करता है। इस वर्ष विश्वविद्यालय ने दादी जानकी को सम्मानित किया। कुलपति प्रो. नितिन आर. करमलकर ने दादी जी द्वारा आध्यात्मिकता के क्षेत्र में किए गए अग्रणी प्रयासों के लिए दिल से उनकी प्रशंसा की।

बीके शिवानी को नारी शक्ति अवार्ड

शिव आमंत्रण » दिल्ली। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका तथा जीवन प्रबन्धन विशेषज्ञ बीके शिवानी को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द ने नारी शक्ति अवार्ड से सम्मानित किया। राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में राष्ट्रपति ने यह अवार्ड प्रदान किया। ब्रह्माकुमारी शिवानी को यह अवार्ड समाज में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों के समावेश के महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया। बीके शिवानी लंबे समय से ब्रह्माकुमारीज संस्थान से जुड़ी हैं और जीवन प्रबन्धन, मन प्रबन्धन समेत तमाम विषयों पर लाखों लोगों के सकारात्मक बदलाव के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया है।

अगले अंक में आप जानेंगे संस्था की अन्य उपलब्धियों के बारे में... पढ़ते रहिए शिव आमंत्रण।

विज्ञान, आध्यात्म, शिक्षा और पर्यावरण विषय पर दिल्ली में वैश्विक सम्मेलन आयोजित

मूल्यों को पढ़ने की जगह अपने जीवन में लाकर उदाहरणमूर्त बनना होगा: एरनेस्टो

शिव आमंत्रण ➤ नई दिल्ली। जो सूक्ष्म शरीर आत्मा और भौतिक शरीर में समन्वय स्थापित कर लेता है वह प्रकृति से जुड़ जाता है। क्योंकि यह शरीर भी उन पांच तत्वों से बना है जो प्रकृति के तत्व हैं। आध्यात्मिकता यानी आत्मा की शक्ति जो कि संकल्प तरंगे हैं वह किसी दूसरे तक पहुंचाना विज्ञान है। यह बात मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जल संसाधन एवं पार्लियामेंट्री अफेयर्स केन्द्रीय राज्यमंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कही। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान और वन एवं पर्यावरण तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा संयुक्त रूप से विज्ञान, आध्यात्म, शिक्षा और पर्यावरण विषय पर वैश्विक शिखर सम्मेलन तालकटोरा सभागार में आयोजित किया गया।

विज्ञान, आध्यात्म, शिक्षा और पर्यावरण विषय पर वैश्विक सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथि।

मैक्सिको के अर्थशास्त्री एरनेस्टो कैस्टलनोस ने कहा भ्रष्टाचार चारों ओर फैल रहा है। इसके लिए अपने अन्दर परिवर्तन की शक्ति लानी होगी जिससे समाज में परिवर्तन कर सकें। हम मूल्यों के बारे में पढ़ते हैं लेकिन उन्हें अपने जीवन में लाकर उदाहरण रूप बनना होगा। हमें विज्ञान, आध्यात्म, शिक्षा और पर्यावरण सभी में ऐसे ही नेतृत्व की आवश्यकता है जिनसे सोचने, बोलने और करने में समानता हो।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अनुसुइया ने कहा बाहर के धुएं को, प्रदूषण को नियंत्रण करने के लिए तो कानून बनते हैं लेकिन मानव के अन्दर की नकारात्मकता और काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, विकारों रूपी धुएं और प्रदूषण को आध्यात्मिकता और राजयोग से ही नियंत्रित किया जा सकता है। डोंट ड्रिन्क एंड ड्राईव होता है लेकिन ड्रिन्क ही न करें यह जरूरी है।

वाइस एडमिरल सतीश एन घोरमाडे ने कहा कि राजयोग जो भगवान सिखाते हैं वह दिनोंदिन ज़रूरी होता जा रहा है क्योंकि राजयोग ही विज्ञान और आध्यात्मिकता के बीच सम्बन्ध जोड़ता है। ब्रह्माकुमारी के राजयोग और मूल्य शिक्षा से मन को शान्त व सुरक्षित कर समाज, देश व पर्यावरण को सुरक्षित किया जा सकता है। कार्यकारी सचिव बीके मृत्युंजय ने कहा कि भारत में स्वच्छता होगी तो विश्व भी स्वच्छ बन जायेगा। ग्रैमी पुरस्कार विजेता तथा मशहूर पर्यावरण एक्टिविस्ट रिकी केज एवं विश्व ग्रैमी पुरस्कार विजेता पदमभूषण पं. विश्व मोहन भट्ट ने म्यूज़िक कन्सर्ट से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। केंद्रीय विज्ञान और पर्यावरण मंत्री डॉ. हर्षवर्धन ने कहा मानवता के कल्याण हेतु विज्ञान और अध्यात्मिकता साथ-साथ काम करें। आध्यात्म और विज्ञान आपस में परिपूरक हैं, विरोधी नहीं है। इस देश का मूल संस्कार निष्काम कर्मयोग है और मानवता ही सच्चा धर्म है उसी के लिए कार्य करना है। सत्यता, ईमानदारी, प्रेम तथा करूणा, कर्म और ईश्वरीय शक्ति हमें सफलता की चर्म सीमा पर ले जाती है। अन्तिम विजय सत्य की होगी। आप ईमानदारी, गहराई और प्रमाणिकता के साथ प्रेम की शक्ति लोगों में जागृत करने का कार्य कर रहे हैं।

ग्लोबल पीस सांग अवॉर्ड्स के फाइनलिस्ट में जनानीय का एल्बम

शिव आमंत्रण ➤ आबूरोड। गॉडलीवुड स्टूडियो में निर्मित तमिल एल्बम - 'शिव महिमाई पार्ट-2 के गीत पुडिया उलागम' को यूएसए लॉस एंजेलिस के ग्लोबल पीस सांग अवॉर्ड्स द्वारा वर्ल्ड म्यूजिक कैटेगरी के टॉप 10 फाइनलिस्ट में चुना गया है। इस गीत की म्यूजिक कम्पोजर तथा सिंगर ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान से काफी समय से जुड़ी चेन्नई के नुंगमबक्कम सेवाकेन्द्र की रेगुलर स्टूडेंट बीके एसजे जनानीय हैं। इस गीत के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर टॉप 10 में चुना जाना अपने आप में स्टूडियो की गुणवत्ता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृति है।

सीख

माइंड बॉडी मेडिसिन पर राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस आयोजित, देशभर के विशिष्ट चिकित्सक जुटे

मन की बीमारी ठीक तो सभी बीमारियों का इलाज संभव

सम्मेलन का उद्घाटन करते अतिथि तथा सभा में उपस्थित देशभर से पधारे डॉक्टर्स।

शिव आमंत्रण ➤ आबूरोड। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के शांतिवन में माइंड बॉडी मेडिसिन का 37वां सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें भारत तथा नेपाल से पांच हजार वरिष्ठ चिकित्सक भाग लेने पहुंचे। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि आज लोगों में मन की बीमारी तेजी से फैल रही है। अधिकतर बीमारियों की जड़ मन है। यदि मन ठीक है तो सब ठीक है। इसलिए मन को सकारात्मक और स्वस्थ बनाने के लिए राजयोग ध्यान को जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए। इससे ही हमारा सम्पूर्ण और सर्वांगीण विकास होगा। पहले के समय में लोग प्राकृतिक तरीके से रहते थे तो बीमारियों की गुंजाइश कम थी। लेकिन आज जितनी तेजी से जीवनशैली बदल रही है उतनी ही गति से नई-नई बीमारियां भी फैल रहीं हैं। यदि सकारात्मक सोच और मन को स्वस्थ बनाया जाए तो निश्चित तौर पर इस पर नियंत्रण पाया जा सकता है। क्योंकि पिछले कुछ वर्षों में दिनचर्या और जीवनशैली में तेजी से बदलाव हो रहा है।

ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के महासचिव बीके निर्वैर ने कहा कि जब चिकित्सक सकारात्मक होंगे मेडिटेशन के अभ्यासी होंगे तो मरीज़ों का भी सही इलाज सम्भव है। कार्यक्रम में ग्लोबल हॉस्पिटल के चिकित्सा निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा, समाज सेवा प्रभाग के अध्यक्ष बीके अमीरचन्द ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह सम्मेलन कई मायनों में अहम होगा। कार्यक्रम में मेडिकल प्रभाग के उपाध्यक्ष डॉ. गिरीश पटेल, डॉ. बनारसी लाल, राजयोगिनी बीके जयंती तथा अमेरिका की बीके चन्दू ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस दौरान कॉन्फ्रेंस में आए सभी डॉक्टर्स को हीलिंग पॉवर की टेक्नीक भी बताई गई।

अलबिदा डायबिटीज

पिछले अंक से क्रमशः

बीमारी एक परंतु रूप अनेक

बीके डॉ. श्रीमंत कुमार
मधुमेह विशेषज्ञ,
ग्लोबल हॉस्पिटल, माउंट आबू

डायबिटीज(मधुमेह) के विभिन्न प्रकार:

टाइप टू डायबिटीज

आज समग्र विश्व में महामारी के रूप में दिखाई देने वाली मुख्य रूप में यह टाइप टू डायबिटीज की बीमारी है। समुदाय डायबिटीज मरीजों में से लगभग 95 प्रतिशत यह टाईप टू से ग्रसित दिखाई देते हैं। इस प्रकार की डायबिटीज प्रायः 30 वर्ष से उर्ध्व व्यक्तियों में ही पाया जाता है। और विशेषतः हमारे जीवन शैली में व्यतिक्रम के कारण ही उत्पन्न होता है। हालांकि यह एक अनुवांशिक बीमारी है अर्थात माता पिता यदि इससे ग्रसित हैं तो बच्चों को भी यह बीमारी हो जाती है। परंतु आजकल माता-पिता संपूर्ण रूप से स्वस्थ होते हुए भी अल्प वयस्क बच्चों में भी यह बीमारी दिखाई देने लगी है, जिसे टाइप टू डायबिटीज ऑफ दी यंग भी कहा जाता है। इसका मुख्य कारण हमारी अस्वस्थकारी जीवन शैली है। टाईप टू डायबिटीज से ग्रसित मरीज अधिकतर शारीरिक रूप से मोटे पाए जाते हैं। परंतु कुछ एक संख्यक वयस्क मरीज शारीरिक रूप से पतले-दुबले भी दिखाई देते हैं।

टाइप टू डायबिटीज के मुख्य कारण

- शारीरिक मोटापा (OBESITY)
- अधिक भोजन (OVER EATING)
- शारीरिक श्रम का अभाव (LACK OF EXERCISE/SEDENTARY LIFE)
- अत्यधिक कार्य व्यस्तता (OVERWORKED)
- शहरी जीवनशैली (URBANISATION)
- बढ़ती उम्र (AGING)
- स्टेरएड् (STEROID) की दवाओं का लंबे समय तक सेवन
- अधिक मिठाइयां नियमित रूप में खाना
- मानसिक दुश्चिन्ता
- अस्वास्थ्यकर भोजन (JUNK FOOD, FAST FOOD, UNHEALTHY FOOD)
- अनाज फल और सब्जियों में प्रयोग होने वाली रसायनिक विषैली दवाइयां (CHEMICALS AND PESTICIDES)

टाइप टू डायबिटीज के लक्षण

मुख्यतः यह एक खामोश बीमारी है। टाइप वन की तरह यह अचानक शुरू नहीं होती है। प्रायः 10-12 साल तक यह बीमारी पहले बार्डरलाइन (प्री डायबिटिक) स्टेज में रहती है। फिर जब ब्लड शुगर 200-300 मी.ली.प्रतिशत होता है, तब तक शरीर में इसके दुष्प्रभाव भी दिखाई देने लगते हैं। बहुत कम संख्यक मरीजों में कुछेक लक्षण अनुभव होते हैं। जैसे कि...

- अधिक प्यास लगना वा गला सूखना
- बार-बार पेशाब आना(रात में 3-4 बार नींद से जागकर पेशाब जाना)
- अधिक भूख लगना, शरीर में बार-बार फोड़े निकलना
- घाव का जल्दी ठीक न होना
- सारे शरीर में खुजली होना
- सारा दिन थका-थका महसूस करना इत्यादि

कुछ विशेष ज्ञातव्य बातें

✔ क्योंकि यह एक खामोश बीमारी हैं, 20 वर्ष से अधिक प्रत्येक व्यक्ति को साल में एक बार अपना ब्लड शुगर अवश्य चेक कर लेना चाहिए। ब्ल्ड शुगर चेक करने का सही तरीका निम्न प्रकार हैः-

ए सवेरे-सवेरे खाली पेट(रात्री भोजन के बाद कम से कम 8 घंटा खाली पेट होना चाहिए) लेबोरेटरी में जाकर चेक करायें, इसे फास्टिंग ग्लूकोज टेस्ट कहा जाता है।

बी सवेरे खाली पेट 75 ग्राम, एनहाइड्रस ग्लूकोज़ पाउडर 250-300 मी.ली. पानी में घोल कर शरबत बना कर पीयें। और दो घंटे तक कुछ न खायें और ब्लड शुगर चेक करायें। इसे पोस्ट ग्लूकोज़ टेस्ट कहते हैं।

✔ जो मोटे हैं, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कोलेस्ट्रॉल, थायराइड संबंधित बीमारियां तो साल में एक बार ब्लड शुगर चेक करा लेना चाहिए।

✔ गर्भवती महिलाएं प्रारंभ में और हर तीन महीने में एक बार अवश्य चेक करायें। यदि पीसीओडी तथा हार्मोन्स संबंधित बीमारियां हैं तो शुगर जरूर चेक करायें। टीनएजर्स बच्चे भी मोटे हैं तो चेक करायें।

✔ अति कार्य व्यस्तता, तनाव ग्रसित व्यक्तियों को भी बीच-बीच में शुगर चेक कराते रहना चाहिए।

यहां करें संपर्कः-
बीके जगतजीत, मो. :- +919413464808, पेशेंट रिलेशन ऑफिसर, ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, माउंट आबू, जिला- सिरोही, राजस्थान (इंडिया)

एशिया बुक रिकॉर्ड होल्डर जादूगर हैरी ने दिखाए हैरतअंगेज कारनामे

राजयोगी जादूगर के कारनामों ने किया अचंभित

जैकपॉट महोत्सव में जादूगर हैरी के साथ मंत्रीगण तथा जनसमूह।

शिव आमंत्रण » अम्बिकापुर/छत्तीसगढ़। अम्बिकापुर में इण्डिया व एशिया बुक रिकॉर्ड होल्डर एवं राजयोगी जादुगर सम्राट हैरी ने अपने जादुई कारनामों से लोगों को दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर दिया। कहीं खाली हाथों से नोटों की बारिश, तो कहीं दिल्ली का मीना बाज़ार, अपने एक से एक कारनामों से सभी को आश्चर्य चकित कर दिया। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, नव विश्व भवन, चोपड़ा पारा अम्बिकापुर के तत्वाधान में सरगुजा संभाग में लगातार 10 दिवसीय हैरत अंगेज प्रस्तुतियां दी गई।

इण्डिया व एशिया बुक रिकॉर्ड होल्डर युवा जादूगर सम्राट हैरी ने अंबिकापुर के कलाकेन्द्र मैदान में अपने जादुई कारनामों से 3000 लोगों को दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर दिया। जिसमें अतिथि के रूप में एडिशनल एस.पी. रामकृष्ण, महापौर अजय तिर्की, पार्षद मनोज कंसारी उपस्थित हुए। खाली हांथों से नोटों की बारिश, दिल्ली का मीना बाजार, पिंजड़े से पंछी सबके सामने देखते ही देखते गायब कर देना ऐसे एक से बढ़कर एक कारनामे दिखाये। सम्राट हैरी ने अतिथियों का सम्मान जादूगरी से अभिनंदन पत्र बनाकर किया। जिससे अतिथिगण अति उत्साहित हो गये। जिसमें उपस्थित थे - कैबिनेट मंत्री टी.एस. सिंहदेव, गृह मंत्री चरण दास महंत, कलेक्टर सारांश मित्तर, एस.पी. सदानंद कुमार, एडिशनल एस.पी. रामकृष्ण, जिला सी.ई.ओ. नम्रता गांधी, जनपद पंचायत उपाध्यक्ष सीतापुर शैलेश सिंहदेव, विधायक अमरजीत भगत और अन्य विधायकगण भी उपस्थित थे। दस दिवसीय कार्यक्रम में सम्राट हैरी ने जादुई कारनामों के माध्यम से वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना जागृत करने के लिए सभी को धर्म का दर्शन कराते हुए बताया, कि सर्व आत्माओं के पिता निराकार परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। उपस्थित जनसमूह तब आश्चर्यचकित हो गया जब जादूगर हैरी ने एक ब्लेड दांतों से चबाकर खाया और मुँह से ही कतारबद्ध 200 ब्लेड निकालते गये। सरगुजा संभाग के चार जिलों में भी सम्राट हैरी ने अमिट छाप छोड़ी। जिसके अंतर्गत बैकुण्ठपुर (1500 लोग), सूरजपुर (1000 लोग), बलरामपुर (1200 लोग), रामानुजगंज (900 लोग), प्रतापपुर (1500 लोग) बतौली (2000 लोग), लखनपुर (2000 लोग), सेंट्रल जेल अंबिकापुर में (2000 कैदियों) का समावेश था।

बड़वानी जेल में बंदियों को बताया अच्छे कर्म और सोच का महत्व

बडवानी जेल अधीक्षक डी.एस. अलावा को ईश्वरीय सौगात देते हुए बीके भगवान।

शिव आमंत्रण » बड़वानी/मप्र। बड़वानी के केन्द्रीय जेल में कर्म गति विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुआ, जहां माउण्ट आबू से आए वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक बीके भगवान ने कैदियों को अच्छे कर्म करो और महान व्यक्ति बनो का संदेश दिया। कार्यक्रम में जेल अधीक्षक डी.एस. अलावा मुख्य रुप से उपस्थित थे। आगे कन्या हॉस्टल में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें सीनियर वार्डन प्यारी मेहता, वार्डन आशा परीहा, वंदना पटेल, स्थानीय सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके मीना समेत बड़ी संख्या में छात्राएं मौजूद थीं। कार्यक्रम में बीके भगवान ने भौतिक शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा को भी अपनाने पर बल दिया। इस दौरान उपस्थित बच्चों ने भी अपने अनुभव सुनाए। इसी क्रम में शासकीय कन्या महाविद्यालय में नैतिक शिक्षा से चरित्रवान जीवन विषय पर आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ. पुरुषोत्तम गौराम, सीनियर प्राचार्य डॉ. कविता भादरिया, प्राध्यापिका डॉ. स्नेहलता मुजालदा ने भी बच्चों को सम्बोधित किया। ऐसे ही मधुबन नर्सिंग कॉलेज, नर्मदा कॉन्वेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल तथा आनंद नगर में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता और सकारात्मक विचारों से तनावमुक्ति विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुए। जहां बीके भगवान ने बच्चों का मार्गदर्शन किया।

बसंत पशु मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते अतिथि एवं उपस्थित जनसमुदाय।

शिव आमंत्रण » भरतपुर/राज.। नगरपालिका रूपवास की तरफ से आयोजित ऐतिहासिक बसंत पशु मेला एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन राजस्थान सरकार के गृह रक्षा एवं नागरिक सुरक्षा विकास मंत्री भजनलाल जाटव, नदबई के विधायक योगेंद्र अवाना, रूपवास बयाना के विधायक अमरसिंह जाटव के द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ को भी मुख्य रूप से आमंत्रित किया गया। ब्रह्माकुमारी बहनों के द्वारा राजस्थान सरकार के गृहमंत्री भजनलाल जाटव को ईश्वरीय सौगात, साहित्य प्रदान कर माउण्ट आबू आने का निमंत्रण भी दिया गया। इस अवसर पर आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन रूपवास के उपखण्ड अधिकारी परशुराम मीणा, रूपवास विकास मंच के संयोजक कोशु पहलवान, रूपवास मेला कार्यक्रम प्रबंधक गोपाल सिंह, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके बबीता, बीके कमलेश की उपस्थिति में रिबन काटकर एवं दीप प्रज्वलन कर किया गया। इस अवसर पर मुख्य अथिति के रूप में अपनी शुभकामना देते हुए परशुराम मीणा ने कहा, कि इस कार्यक्रम ने मेले की सुंदरता को बढ़ाया है, मेरी यही शुभकामना है कि यह संस्था दिनोदिन प्रगति करती रहे। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके बबीता ने मेले का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा, कि मेला मिलन और मिलाप का प्रतीक है, जब आत्मा परमात्मा से बिछड़कर मैली हो जाती है तब परमात्मा आकर हमें सतोप्रधान बनाते हैं जिसकी यादगार में ये मेले मनाये जाते हैं। बीके गीता, बीके कमलेश, बीके सुनीता के द्वारा सभी अतिथियों को प्रदर्शनी का अवलोकन कराया गया। कु. पूजा के द्वारा दिव्य नृत्य प्रस्तुत किये गए। इस अवसर पर हज़ारों भाई-बहनों ने इस कार्यक्रम का लाभ लिया। बीके जयसिंह, बीके मिट्टन, बीके योगिता आदि भी उपस्थित रहे।

सड़क सुरक्षित है पर मन असुरक्षित, रोजाना 400 मौतों में 250 बाइक सवार शामिल

दीप प्रज्वलन कर सड़क सुरक्षा सप्ताह कार्यक्रम का प्रारंभ करते अतिथि।

शिव आमंत्रण » भीलवाड़ा/राजस्थान। सड़क सुरक्षा सप्ताह के कार्यक्रम में ट्रैफिक पुलिस उपनिरीक्षक भागीरथ सिंह ने कहा, कि सड़क तो सुरक्षित है पर मन असुरक्षित है। इसलिए प्रतिदिन सड़क दुर्घटना से 400 लोगों की मृत्यु होती है जिसमें से 250 लोग बाइक सवार होते हैं। दुर्घटनाओं से बचाव के लिए ट्रैफिक नियमों का पालन करें, वाहन की गति पर नियंत्रण रखें, बहुत तेज वाहन न चलायें, सीट बेल्ट व हेलमेट का उपयोग करें, पूरी नींद करके वाहन चलायें, दिमाग स्थिर रखें व मन शांत रखें तो दुर्घटनाएं नहीं होंगी। राजस्थान केभीलवाड़ा में सड़क सुरक्षा सप्ताह के अंतर्गत संस्थान के 'ट्रांसपोर्ट एवं ट्रेवल विंग' व मोटर पार्ट्स डीलर्स एसोसिएशन के संयुक्त तत्वाधान में 'सुरक्षित एवं खुशनुमा यात्रा' विषय पर ट्रांसपोर्ट मार्केट में कार्यशाला का आयोजन हुआ।

कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था ट्रांसपोर्ट व्यवसाय से जुड़े लोगों को आध्यात्मिकता द्वारा मन को तनाव मुक्त व प्रसन्न रखने की कला सिखाना। कार्यक्रम में उपस्थित ट्रक ड्राईवर को लकी कार्ड दिए गए व अतिथियों को स्लोगन प्लेट दी गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ परमात्म स्मृति एवं दीप प्रज्वलन कर हुआ। इसके अंतर्गत ट्रांसपोर्ट व्यवसायी, ट्रक ड्राईवर व आम जनता ने भाग लिया।

जहरीले फल रूपी बुराइयां शिव पर अर्पित करें तो जीवन श्रेष्ठ बन जाएगा

महाशिवरात्री पर पधारे 83वीं अवतरण मनाने पहुंचें अतिथि।

शिव आमंत्रण » भीलाईनगर। देवी देवताओं को श्रीफल और फल चढ़ाकर हम उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते है पर परमात्मा शिव पर अक धतुरा जहरीला फल अर्पित करते है। यदि हम अपने जीवन के जहरीले फल रूपी बुराईयां शिव पर अर्पित करें तो हमारा जीवन श्रेष्ठ बनेगा। हम दुसरों की बातों को गांठ बांध मन में रख लेते है यही गांठ बिमारी बन जाती है, जिसे की आज शिव पर चढ़ाना है। शिव पर बेर के रूप में वैर विरोध चढ़ाना है। हमें निर्वैर, निर्भय बनाना है। उक्त उदगार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा सेक्टर-7 पीस ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम विष विनाशक महायज्ञ के अवसर पर ब्रह्माकुमारी गीता ने कही। महाशिवरात्रि पर्व का आध्यात्मिक अर्थ बताते हुए कहा कि किसी का जन्म रात्रि में होता है तो भी वह अपना जन्मदिन दिन में मनाता है पर भगवान शिव का जन्म सृष्टि पर अज्ञान अंधकार के समय होता है जब बुराईयाँ चरम पर होती है तब परमात्मा शिव का जन्म होता है जिसे हम शिवरात्रि के रूप में मनाते है।

मुख्य अतिथि भिलाई नगर निगम के कमिश्नर एस के सुंदरानी ने कहा कि बाहर की दुनिया अलग है। भिलाई सेवाकेन्द्रों की निदेशिका ब्रह्माकुमारी आशा दीदी ने अपने आशिर्वचन में कहा कि भाग्य विधाता, वरदाता, और भोलेनाथ का दिन है महाशिवरात्रि पर्व। कार्यक्रम के अंत में सभी ने जो सुना है उसे आत्मसात् करने राजयोग द्वारा गहन शांति का अनुभव कर स्थिर मन से स्वयं की चेकिंग करकेअपनी बुराईयों को लिखकर शिव पर अर्पित किया। कार्यक्रम का सुंदर मंच ब्रह्माकुमारी माधुरी ने किया। यह विष विनाशक महायज्ञ मध्यप्रदेश, राजस्थान, ओडिसा और छत्तीसगढ के पांच सौ से भी अधिक सेवाकेन्द्रों में एक ही दिन, एक ही समय में मनाया गया।

मलाड के एक्सपीरिएंसिंग हीलिंग पावर ऑफ साइलेंस विषय पर बीके जयंती के उद्‌गार...

परमात्मा की याद से कर सकते हैं विश्व का परिवर्तन

मलाड के ऐस्पी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में सभा को संबोधित करती बीके जयंती व उपस्थित जनसमुदाय।

शिव आमंत्रण ➤ मलाड/मुंबई। मलाड में आगमन पर ऐस्पी ऑडिटोरियम में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की यूरोप एवं मिडिल ईस्ट की निदेशिका बीके जयंती ने कहा, विश्व में चारों ओर बढ़ती बीमारियां और अज्ञान अंधकार होने के कारण मानव दिशाविहीन बन गया है। इसी समय ज्ञानसूर्य परमात्मा शिव का अवतरण हुआ है। उसकी याद से सिर्फ बीमारियों पर ही नहीं, बल्कि विश्व का परिवर्तन कर सकते हैं। संस्था में यूरोप एवं मिडिल ईस्ट की निदेशिका बीके जयंती के मुम्बई प्रवास के दौरान मलाड में आगमन पर इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। यहां विशेष ब्रह्माकुमारीज़ संस्था के सहयोगी सदस्यों द्वारा बीके जयंती का सम्मान किया गया। इन सदस्यों में अमेरिका स्प्रिंग इंडस्ट्रियलिस्ट किरण पटेल, सूचक हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. अनिल सूचक, जगदीश ठक्कर, सीनियर सिटीज़न ग्रुप के फाउण्डर सुशील सिंघानिया तथा केतन और वैष्णो देवी टेम्पल मलाड के ट्रस्टी गिरिश शामिल रहे। बीके जयंती ने कहा, सूरज का उदय होने के बाद सब उसको देखते हैं। लेकिन भोर के समय जो उठते हैं उनको सेहत के साथ बहुत सारे लाभ होते हैं। वह दूसरे लोगों की तुलना में ज़्यादा चुस्त भी रहते हैं। साइन्स ने हमें बहुत कुछ दिया है, फिर भी इन्सान खुश नहीं है। आज बढ़ने वाली बीमारियों में ज़्यादातर मन की बीमारियां है। यह एक देश की नहीं बल्कि सारे विश्व की समस्या है। इस समय एकांत में बैठ कर परमात्मा शिव से शक्ति प्राप्त कर लेंगे तो बीमारी भी नष्ट होगी, सुख का अनुभव भी होगा और अकेलेपन का एहसास भी नहीं होगा। मतमतांतर के कारण आज संगठन में रहते हुए भी पूरा मूंझा हुआ है। दो व्यक्ति के विचार एक नहीं हो सकते लेकिन एक दूसरे के साथ एडजेस्ट करके भगवान की याद में रास करेंगे तो जीवन सुंदर बन जायेगा। संबंध सुख देने वाले बनेंगे। एक्सपीरिएंसिंग हीलिंग पावर ऑफ साइलेंस विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम में बीके दिव्यप्रभा तथा मलाड सेवाकेन्द्र की प्रभारी बीके कुंती की विशेष उपस्थिति रही। जहां बीके जयंती ने सभी को अपने विचारों से लाभान्वित किया। राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास भी किया।

ब्रह्माकुमारीज़ को महात्मा गांधी व्यसन मुक्ति सेवा पुरस्कार से नवाजा

शिव आमंत्रण ➤ चन्द्रपुर/महाराष्ट्र। महाराष्ट्र सरकार के सामाजिक न्याय एवं विशेष सहाय विभाग द्वारा चंद्रपुर में 7वें राज्यस्तरीय व्यसनमुक्ति साहित्य सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन में देगलुर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र को सरकार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी व्यसनमुक्ति सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया। व्यसनमुक्ति क्षेत्र में की गई सराहनीय सेवाओं के लिए यह पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार गृह राज्यमंत्री हंसराज अहिर, राज्य वित्त मंत्री सुधीर मुनगंटीवार, समाज कल्याण मंत्री राजकुमार बडोले तथा जेष्ठ समाजसेवी तथा सम्मेलन के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. अभय बंग समेत अन्य कई प्रतिष्ठित हस्तियों ने ब्रह्माकुमारीज़ के व्यसनमुक्ति अभियान के निदेशक बीके डॉ. सचिन परब, कल्याण सबज़ोन प्रभारी बीके अल्का, बीके कुंदा तथा देगलूर सेवाकेन्द्र की संचालिका सुमंगला समेत अन्य बीके बहनों को सम्मान दिया। सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी और लिटरेचर प्रदर्शन का आयोजन किया गया था, जिसका उद्‌घाटन अभय बंग समेत अन्य महानुभावों ने अपने कर कमलों से किया।

अन्नामलाई विश्वविद्यालय में ब्रह्माकुमारीज़ के 6 और प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम शुरू

शिव आमंत्रण ➤ माउंट आबू। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के शिक्षा प्रभाग द्वारा पिछले 10 वर्षों से अन्नामलाई विश्वविद्यालय के तकनीकी सहयोग से 14 पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहे हैं, जिसका अभी तक 20 हज़ार से ज़्यादा लोगों ने लाभ लिया है। इस वर्ष अन्नामलाई विश्वविद्यालय में 6 प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं और ये पाठ्यक्रम 6 भाषाओं में उपलब्ध होंगे जिनमें जीवन मूल्य, सहज राजयोग, आध्यात्मिक परामर्श, सम्पूर्ण स्वास्थ्य हेतु जीवनशैली, समग्र वृद्ध प्रक्रिया तथा तनावमुक्त व क्रोधमुक्त जीवन का समावेश है। यह पाठ्यक्रम शैक्षणिक वर्ष 2019-2020 से शुरु होंगे। इस पाठ्यक्रम का शुभारम्भ दिल्ली के तालकटोरा इंडोर स्टेडियम में आयोजित ग्लोबल समिट कार्यक्रम में विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ. हर्षवर्धन, दक्षिणी दिल्ली नगर निगम के महापौर नरेंद्र चावला, शिक्षा प्रभाग के अध्यक्ष बीके मृत्युंजय तथा अन्य अतिथियों के द्वारा हुआ। अत्यन्त हर्ष की बात है कि वैल्यू एजुकेशन की सेवायें दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं।

कॉलेज स्टूडेंट ने बाइक रैली से दिया जागरुकता का संदेश, लोगों को बताए यातायात के नियम

शिव आमंत्रण ➤ मलाड/मुंबई। मुम्बई में ब्रह्माकुमारीज़, मलाड द्वारा सड़क सुरक्षा जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुम्बई ट्रैफिक पुलिस और डालमिया कॉलेज का विशेष योगदान रहा। इस अवसर पर विशेष रुप से आए टी.वी. और फिल्म अभिनेता ऋषिकेश पांडे ने उपस्थित बच्चों को यातायात के नियमों का विशेष रुप से पालन करने कि अपील की। कार्यक्रम में आर.टी.ओ. पुलिस इंस्पेक्टर हीतेन्द्र भवसार, कॉलेज की वाइस प्रिंसिपल माधवी, मलाड सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके कुंती ने भी युवाओं को प्रेरित किया।इसी क्रम में लोगों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरुक करने के लिए शहर में टू व्हीलर रैली का भी आयोजन हुआ, जिसको बीके कुंती ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिसके पश्चात् रैली के प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

संस्कृति

संस्कृति और सभ्यता की धरोहर हमारा देश....

अद्वितीय संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है भारत वर्षः बीके प्रशांति

अभियान के साथ बीके रमा, बीके कल्पना, बीके कमला, बीके ओमप्रकाश, बीके धीरज एवं छात्रायें उपस्थित रहे।

शिव आमंत्रण ➤ छतरपुर/मप्र। भारत दुनिया भर में एक समृद्ध और प्राचीन विरासत, महत्वपूर्ण इतिहास और सबसे पुरानी संस्कृति, अदभुत् कला और साहित्य विशाल जनसांख्यिकी, कई धर्म, जातियाँ और पंथ वाले देश के रूप में जाना जाता है। इसके साथ-साथ अनेकानेक दार्शनिक स्थल, पर्यटन स्थल और मनोरम प्राकृतिक स्थलों की भी विरासत है। भारत देश की विविधता व अनेकता में एकता के कारण ही सारा विश्व के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है और यातायाता विभाग के माध्यम से सारा विश्व भारत में आकर शिक्षा ले रहा है। उक्त व्याख्यान मुम्बई से पधारी बीके प्रशान्ति बहन ने छतरपुर पुलिस कंट्रोलरूम स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में सभा के समक्ष व्यक्त किये।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के शिपिंग, एविएशन, टूरिस्म प्रभाग द्वारा ''मेरा देश मेरी शान'' अभियान चलाया जा रहा है जिसका लक्ष्य विश्व के कोने-कोने तक भारत की महान संस्कृति और सभ्यता का परचम लहराना है। इसके अंतर्गत 70वां गणतत्र दिवस पर दिनांक 26 जनवरी 2019 से 01 फरवरी 2019 तक एक अभियान यात्रा भोपाल से खजुराहो की ओर निकाली जा रही है जो आज दिनांक- 31 जनवरी को छतरपुर पहूंची जिसके अंतर्गत नगर में कई कार्यक्रम आयोजित किए गये। अभियान में मुख्य वक्ता के रूप में मुम्बई की बीके प्रशान्ति बहन, ग्वालियर से बीके ज्योति बहन, आशीष भाई एवं जय भाई शामिल रहे। अभियान के अगले पड़ाव में पुलिस लाईन अंतर्गत पुलिस कंट्रोल रूम स्थित कॉन्फ्रेंस हॉल में पुलिस कर्मियों के साथ नवागत पुलिस अधीक्षक छतरपुर तिलक सिंह के मार्गदर्शन में सफल हुआ जिसमें वर्तमान परिस्थितियों में खुश कैसे रहे इसके लिए ''डोन्ट वरी बी हैप्पी'' विषय को बड़ी ही सहजता से बीके प्रशान्ति बहन ने स्पष्ट किया साथ ही ग्वालियर से पधारी बीके ज्योति बहन ने सभा को मेडिटेशन का अभ्यास कराया। इस मौके पर पुलिस अधीक्षक तिलक सिंह ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम की वर्तमान समय में पुलिस महकमे को अत्यंत आवष्यकता है। साथ ही उन्होनें कहा कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम युवा पुलिस सैनानी को उनके कार्य के प्रति कर्तव्यनिष्ठ बनाने मे सहायक हैं। इस मौके पर रक्षित निरीक्षक योगेन्द्र सिंह प्रमुख रूप उपस्थित रहे।

अभियान का अगला पड़ाव केन्द्रिय विद्यालय छतरपुर में नन्हे-मुन्हे विद्यार्थियों के बीच बीके प्रशान्ति बहन ने ''रिचार्जिंग टेकनिक'' विषय पर उद्बोधन देते हुऐ मेडिटेशन द्वारा वार्षिक परीक्षा में अधिकतक अंक प्राप्त करने की विभिन्न विधियाँ मनोरंजक अंदाज में सिखाईं। इस मौके पर अतिथि के तौर पर विद्यालय प्राचार्य विशन सिंह राठौर के साथ समस्त स्टाफ मौजूद रहा। कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव पं. देवप्रभाकर शास्त्री इंजीनियरिंग कॉलेज में सम्पन्न हुआ जिसमें बीके आशीष भाई ने विद्यार्थियों को मोटीवेट करते हुए उन्हें जीवन का लक्ष्य कैसे निर्धारित करें विषय पर प्रकाश डाला साथ ही साथ प्रशान्ति बहन ने मेडिटेषन के अभ्सास द्वारा स्मरण शक्ति वृद्धि करने के उपाय सुझाये। अंत में कॉलेज प्राचार्य जे. सोनी ने कार्यक्रम की प्रशंसा की । अभियान के साथ छतरपुर से बीके रमा, बीके कल्पना, बीके कमला, बीके ओमप्रकाश अग्रवाल, एवं बीके धीरज उपस्थित रहे।

समस्या समाधान

ब्र.कु. सूरज भाई
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक

राजयोग संसार की सबसे गुह्यतम विद्याओं में से एक है

अनुभव ही योग में सबसे बड़ा गाइड

राजयोग संसार की सबसे गुह्य विद्या है। जिसमें अगर कोई मनुष्य परफेक्ट हो जाए तो उसे संसार की और विद्यायें प्राप्त करने की आवश्यकताएं न रहें। योग की सूक्ष्मता को कोई भी मनुष्य अपने अनुभवों से ही जाना सकता है। अनुभव ही इस सबजेक्ट में सबसे अच्छे गाइड हैं। यूं तो हम जानते हैं कि योग की परिभाषा भगवान ने एक ही लाईन में दे दी कि अपने को आत्मा समझ मुझ परमात्मा बाप को याद करो। परन्तु इसमें अति गुह्यता भी है। क्योंकि जिस चीज का महत्व मालूम होता है उस चीज को हम वैल्यु देते हैं। उसके बारे में हम दृढ़ता पूर्वक पुरूषार्थ करते हैं।

योग का सकाश सबसे बड़ा सहयोग

यदि हमारे शरीर में कोई बीमारी लग जाये और हमें महसूस हो जाये कि ये बीमारी हमें बहुत कष्ट देती है तो हम उस बीमारी को ठीक करने में पूरा जोर लगा देते हैं। इसी तरह योग के बारे में भी दो बातें जो कि साकार मुरलीयों के महावाक्य हैं दोनों जो बच्चे मुझे आठ घण्टा रोज याद करते हैं। वो मेरे सबसे अधिक सहयोगी हैं। जब तुम योगयुक्त होते हो तो विश्व में शांति की किरणें फैलती है। तो बहुत बड़ा सहयोग इस संसार को बदलने में हमारी योगबल का है। और हम बाबा के बहुत सहयोगी है। जिन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। जिन्होंने अपना सबकुछ तन-मन-धन परमात्मा कार्यों में लगा दिया। वही सबसे बड़ा सहयोगी होगें। योग का सकास सबसे बड़ा सहयोग है।

योग से प्रकृति पवित्र बन जाती है

योग अङ्गिन से ही बुराई विनाश की अङ्गिन प्रगट होती है। संसार का शुद्धिकरण होता है। प्रकृति पवित्र बनती है। हम दो मोटी चीजों को देखें प्रकृति में, हवा कितनी दूषित है। न जाने हवा के माध्यम से हमारे शरीर में हम सांस लेते हैं। हमारे शरीर में क्या-क्या जा रहा है। बीमारीयां फैल रही है। आकाश का यदि चित्र खींचा जाए किसी सूक्ष्म माइक्रोस्कोप से तो दिखाई देगा आकाश में गंदगी के सिवाय कुछ नहीं है। तीसरी चीज को भी आप जानते हैं पानी। आज अनेक बीमारीयां दूषित पानी के कारण हो रही है। जो बहुतों को पता नहीं होता। इन तीनों चीजों का प्युरिफिकेशन विनाश काल में हो जायेगा। जिसमें बहुत बड़ी भूमिका होगी हमारी योगबल की। तो हमें श्रेष्ठ योगी बनना है।

अपने संकल्पों से एक-दूसरे को सुख देना होगा

सभी अपने-अपने घरों को भी निर्विघन बनाएं। बाबा का एक संकल्प है। वहीं संकल्प हम सबका भी हो जाये। विनाशकाल में इस संसार में इतनी दुःख, अशांति होगी कि कोई साधन मनुष्य को शांत नहीं कर पायेगा। दवाईयां, डॉक्टर्स, धन-सम्पत्ति, खान-पीना। मनुष्य के दुःखों को समाप्त नहीं कर पायेगा। ऐसे में हमारे सभी स्थान सभी के घर ऐसे सुन्दर तीर्थ बन जाएं। किसी को अशांति हो उसे पता हो इनके घर में जाकर पन्द्रह मिनट बैठ जाएं चित्त शांत हो जाएगा। हमारे दुःख समाप्त हो जाए। ये होने वाला है। और ये सब काम हमें ही करना है। क्योंकि हमारे वायब्रेशन से स्थान के वायब्रेशन को बदलते हैं। हमें बहुत ज्ञान सुनाने की जरूरत नहीं होगी बल्कि हमारी दृष्टि से अपने स्थानों को ऐसा पावरफूल बनाकर अपने श्रेष्ठ भावनाओं से अपनी संकल्पों से हमें दूसरों को सुख देना होगा।

लोग स्वीकार करेंगे दुनिया रहने लायक नहीं रही

संसार की स्थिति दिन प्रतिदिन दैनिय होती जा रही है। अब मानसिक रोग बढ़ रहें हैं। डिप्रेशन बड़ रहें हैं। नींद की समस्या बढ़ रही हैं। शारीरिक रोग बढ़ रहें हैं। भयानक स्थिति होती जा रही हैं। और ऐसा प्रतित हो रहा हैं कि और आने वाले पाँच साल में संसार का हाल और बेहाल हो जायेगा। भगवान का महावाक्य है कि जब संसार का हर व्यक्ति पुकार उठेगा कि हे प्रभु! ये संसार रहने लायक नहीं रहा इसे नष्टकर दो। तब फाइनल विनाश होगा नहीं तो लोग कहेंगे कि इतनी अच्छि दुनिया हे भगवान! तूने खत्म कर दी। जब सभी स्वीकार कर लेंगे कि ये दुनिया रहने लायक नहीं बची है। तो कोई किसी पर दोष नहीं दे पायेगा। भगवान को भी नहीं कह पायेगा कि तुमने ये क्या कर दिया। सबके मन से एक ही आवाज निकलेगी। बहुत अच्छा किया तुमने। तो हमें योगबल को बढ़ाना हैं। योगबल संसार का सबसे बड़ा बल। जिसके पास योगबल होगा। आने वाले समय में वहीं विश्व की स्टेज पर होंगे। आने वाले समय में उन आत्माओं के द्वारा सेवाएं होंगी जो अपने को सर्व खजानों से भरपूर किया होगा। ज्ञान लम्बा-चौड़ा सुनाने का मौका नहीं होगा। लोग सुन नहीं पायेंगे। या घर बैठे टीवी से सुन लिया करेंगे। हम योगबल और सर्व खजानों से सम्पन्न स्थिति के द्वारा आत्माओं की सेवा करेंगे। तो स्वयं का योगबल बढ़ाना है। तो संकल्प करें। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बहुत सारी बातें सुनाकर कहा कि तू योगी बन। योगी ही संसार में सर्वश्रेष्ठ है। योगी तपस्वीयों से भी श्रेष्ठ हैं।

उपलब्धि... प्रति सोमवार सुबह 11:30 बजे एवं शाम 7 बजे किया जाएगा प्रसारण

रेडियो मधुबन 90.4 एफएम पर बच्चों के लिए 'बचपन एक्सप्रेस' कार्यक्रम शुरू

रेडियो मधुबन द्वारा बच्चों का कार्यक्रम में बात करते एंकर।

शिव आमंत्रण » **आबू रोड।** ब्रह्माकुमारीज द्वारा संचालित सामुदायिक रेडियो प्रसारण केंन्द्र रेडियो मधुबन 90.4 एफ एम द्वारा एक नये कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया है। बच्चों से जुड़े संवेदनशील मुद्दों बाल विवाह जैसी कुरीतियां, बाल श्रम जैसे अपराध और शिक्षा बीच में ही छोड़ देने जैसी संगीन समस्याओं पर आधारित है यह नया कार्यक्रम 'बचपन एक्सप्रेस'। बच्चों के अनसुने विचारों को सुने जाने के मंच बने हुए इस कार्यक्रम की रूपरेखा युनाइटेड नेशन की संस्था यूनिसेफ और कम्यूनिटी रेडियो एसोसीएशन(सी.आर.ए)के सहयोग से तैयार की गयी है। जन-जन की आवाज़ रेडियो मधुबन द्वारा यह कार्यक्रम फ़रवरी और मार्च के प्रति सोमवार सुबह 11:30 बजे एवं शाम 7 बजे प्रसारित किया जायेगा। बच्चा हो या बच्ची अगर स्कूल पढ़ने की उम्र में शादी का पाठ पढ़ाया तो मानो जीवन गंवाया, इस सत्यता को रेडियो मधुबन पर विभिन्न गीतों और ड्रामा के माध्यम से भी पेश किया जा रहा है । इसके पहले एपिसोड में दानवाव स्कूल की प्रधानाध्यापिका अलका शर्मा जी ने बताया की 'बचपन में विवाह जीवन भर का एक बोझ बनकर रह जाता है और इसको समाप्त करने के लिए आर्थिक रूढ़ियों को हटाया जाना आवश्यक है'। कार्यक्रम में रेडियो मधुबन से बात करते हुए कुछ बालिकाओं ने विवाह के लिए घर पर हो रही ज़बरदस्ती के बारे में खुल कर बात की, तो वहीँ किसी ने कहा की बाल विवाह के कारण होने वाली प्रेगनेंसी में कई बार बच्चियों की मृत्यु देखी जाती रही है। आने वाले एपिसोड्स में बचपन एक्सप्रेस पर बाल विवाह से जुड़े कानून और शिक्षा से जुड़े अहम पहलुओं पर बातचीत की जाएगी।

राजयोग के नियमित अभ्यास से बचे रहेंगे हृदय रोग से

सूर्य की किरणों में योग करते हुए सबने ली विश्व एक परिवार की प्रतिज्ञा।

शिव आमंत्रण » **अहमदनगर/महा.।** अहमदनगर स्थित साईबन में मधुबन गीता पाठशाला की ओर से हृदयरोग के पेशेंट और उनके परिवार वालों के लिए 'आरोग्यदायी और खुशनुमा जीवन के लिए राजयोग अनुभूति रिट्रीट शिविर' का आयोजन हुआ। विशिष्ट अतिथियों में डिस्ट्रिक्ट हेल्थ ऑफिसर डॉ. संदिप सांगले, जिला आयुष अधिकारी डॉ. दादा साहेब सालुंके, सहायक आयुष अधिकारी डॉ. ज्योति तानपुरे, पुलिस उपनिरीक्षक विनोद चव्हाण, बीके आशा, बीके उज्वला, नेत्रतज्ञ डॉ. प्रकाश कांकरिया, बीके दीपक हरके द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सूरज की किरणों के साथ ज्ञान सूर्य साक्षात् परमपिता परमात्मा की तेजोमय किरणों की मधुर बरसात का अनुभव सभी ने किया। 'भगवान हमारा साथी है' इस भाव के साथ प्रसन्नता और खुशी का वायुमंडल बनता गया। प्रकृति और विश्व की सारी आत्माओं को पवित्रता, शांति और प्यार का सकाश दिया गया। मेरा भारत स्वर्णिम भारत लक्ष्य को सामने रखते हुए एक शिवसंदेश रैली भी निकाली गई। रैली का समापन प्रतिज्ञा से हुआ। मेरा भारत स्वर्णिम भारत बनाने के लिए जाति, धर्म, पंथ और प्रांत की दिवारों को तोड़कर विश्व एक परिवार है इस भावना से अपनी सोच, बोल और व्यवहार में सकारात्मक बदलाव लाना चाहिए इसकी प्रतिज्ञा बीके डॉ. सुधा कांकरिया ने करवाई। 'राजयोग करें, रोग से बचें' हर घर के प्रत्येक सदस्य को राजयोगा मेडिटेशन सीखना चाहिए। उसे अपने जीवन में शामिल करना चाहिए तो ही इन बीमारियों से बच सकते हैं। भविष्य में आपको हृदयरोग नहीं हो इसलिए आपको इस राजयोग के अभ्यास को निरंतर करते रहना चाहिए। जिला आयुष अधिकारी डॉ. दादा साहेब सांगले ने 'खुशनुमा जीवन-आरोग्यदायी जीवन' विषय पर अपने विचार रखे। पुलिस उपनिरीक्षक विनोद चव्हाण ने 'राजयोग से सामाजिक स्वास्थ्य राष्ट्र का उत्थान' विषय पर मार्गदर्शन किया। बीके डॉ. सुधा कांकरिया ने शिविर का उद्देश स्पष्ट करते हुए बताया कि राजयोग सभी समस्याओं की मास्टर की है, इसके साथ ही हृदयरोग और राजयोगा विषय पर चर्चा की।

50वीं स्वर्णिम वर्ष

दादी हृदयमोहनी द्वारा अवयक्त पालना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर मनाया गया स्वर्णिम वर्ष समारोह

अव्यक्त पालना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर भव्य स्वर्णिम समारोह

कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ से पधारे प्रसिद्ध गायक बी.के. युगरतन तथा अन्य भाई बहनें।

शिव आमंत्रण » **छतरपुर/मप्र।** प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दीदी हृदयमोहनी जी के सम्मान में एक कार्यक्रम छतरपुर संस्कार धाम प्रांगण में किया गया। दादी जी सन् 1937 से बाल्यकाल से ही संस्था में समर्पित रूप से सेवाएं प्रदान कर रही हैं। सन् 1937 से 1969 तक ईश्वरीय संदेष एवं प्रारंभिक सेवाओं का कार्य संस्था के संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के माध्यम से सम्पन्न हुआ तथा 1969 में प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के देहावसान के पश्चात् से यही कार्य ईश्वरीय संदेशपुत्री के रूप में आदरणीय दादी हृदयमोहनी जी के द्वारा सम्मपन्न हो रहा है। ईश्वरीय संदेशवाहक के रूप में दादी जी के 50 वर्ष पूर्ण हाने के उपलक्ष्य में दिनांक 5 फरवरी को आभार निदर्शन अव्यक्त पालना के स्वर्णिम वर्ष समारोह के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भोपाल जोन की मुख्य अध्यक्षा आरणीय राजयोगिनी बीके अवधेश बहन जी उपस्थित रहीं। अवधेश बहन जी ने दादी जी के त्याग एवं तपस्यायुक्त जीवन और उनकी अथक सेवाओं के बारे में सभा को बताया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मंचासीन सभी अतिथियों द्वारा दीप प्रज्जवलन कर किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रायपुर, छत्तीसगढ़ से पधारे प्रसिद्ध गायक बीके युगरतन भाई द्वारा रंगारंग गीतों का कार्यक्रम एवं नन्हे-मुन्हे बाल कलाकारों द्वारा संगीतमय नृत्य-नाटिका की प्रस्तुती रही। उक्त कार्यक्रम में बीके मधुकर राव घाडगे (नानाजी) के ईश्वरीय सेवाओं में विशेश योगदान एवं समर्पित रूप से सेवाओं में 50 वर्ष पूर्ण होने पर सम्मानित किया गया। साथ ही साथ कार्यक्रम में पधारी समस्त वरिष्ट बहनों का भी सम्मान किया गया। इस मौके पर छतरपुर जिले एवं सभी तहसीलों से बड़ी संख्या में पधारे लगभग 2000 भाई-बहनों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन छतरपुर सेवाकेन्द्र संचालिका बीके शैलजा के निर्देशन में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

श्रीमद्भागवत ज्ञानयज्ञ...बीके गीता ने रामायण, महाभारत, गीता में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों से कराया रूबरू

पूर्णाहुति पर हवनकुंड में घी-जौ की जगह पर्ची में अपने जीवन की एक बुराई को लिख कर किया स्वाहा

सुबह रोजाना म्यूजिकल एक्सरसाइज के माध्यम से सिखाई स्वस्थ रहने की कला

शिव आमंत्रण ❯ खिमलासा/बीना (मप्र)। ब्रह्माकुमारीज संस्थान के खिमलासा सेवाकेंद्र की ओर से पांच दिवसीय श्रीमद्भागवत ज्ञानयज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें प्रवचनकर्ता बालब्रह्मचारिणी, ब्रह्माकुमारी गीता ने शास्त्रों में छिपे आध्यात्मिक रहस्यों से अवगत कराया। शुभारंभ पर श्रीमद्भागवतजी की विशाल शोभायात्रा निकाली गई, जिसमें ब्रह्माकुमार भाई-बहनें हाथों में संदेश देती तख्तियां लेकर शामिल हुए। इससे लोगों को बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, स्वच्छता और नशामुक्ति का संदेश दिया गया। वहीं पुलवामा में शहीद हुए वीर सैनिकों को सभी भाई-बहनों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजली दी। समापन पर हवन कुंड में घी-हवन सामग्री की जगह लोगों से अपने जीवन में व्याप्त बुराइयों को पर्ची में लिखकर स्वाहा किया। किसी ने हवन कुंड में पर्ची में गुटखा तो किसी ने बीड़ी-सिगरेट से लेकर शराब छोड़ने का संकल्प लिया। कई लोगों ने अपने जीवन में तरक्की में बाधक बन रहीं गलत आदतों, संस्कारों को स्वाहा किया।

पहला दिन: आधुनिक महाभारतकाल में कौरव कौन और पांडव कौन? विषय को स्पष्ट करते हुए प्रवचनकर्ता बीके गीता ने कहा कि चार वेद और छह शास्त्रों का सार है कि यदि अपने कर्मों से किसी को सुख देंगे तो सुख मिलेगा और दुःख देंगे तो दुःख मिलेगा। हमारे कर्म ही तय करते हैं कि हम पांडव सेना के हैं या कौरव सेना के। पांडव अर्थात् परमात्मा से प्रीत करने वाले और कौरव अर्थात् काम-क्रोध के वश कर्म करने वाले, अपने कर्मों को सामने रखकर हम खुद तय कर सकते हैं कि हम किस सेना के हैं। जब एक-एक व्यक्ति का चरित्र श्रीराम की तरह बन जाएगा तो इस धरा पर रामराज्य आ जाएगा।

दूसरा दिन: आत्म ज्ञान का बोध को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा श्रीमद्भागवत गीता में स्पष्ट रूप से लिखा है कि आत्म ज्ञान के बिना परमात्मा से मिलन मनाना संभव नहीं है। गीता में आत्मा और परमात्मा के बारे में गहराई से बताया गया है।

तीसरा दिन: परमात्मा का सत्य परिचय बताते हुए कहा कि सभी वेदों का सार यही है कि परमात्मा शिव एक हैं। वह सभी देवों के भी देव और विश्व की सभी मनुष्यात्माओं के परमपिता परमेश्वर हैं। दुनिया के जितने भी धर्म हैं सभी में उस परम सत्ता, परम ज्योति, पारब्रह्म परमेश्वर परमात्मा को ही सर्वोच्च माना गया है। परमात्मा शिव त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के भी रचयिता त्रिमूर्ति, 33 हजार देवी-देवताओं के भी पिता हैं।

चौथा दिन: सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का रहस्य बताते हुए कहा इस सृष्टि के आदि में यह दुनिया सतयुगी थी, जहां दूध-घी की नदियां बहती थीं। सर्वत्र सुख-शांति, आनंद और प्रेम था। देवी-देवताओं का निवास था और सर्वगुण संपन्न थे। संतान भी योगबल से पैदा होते थे। कर्म बंधन में आते आत्मा के गुण और शक्तियां क्षीण होती गई।

पांचवां दिन: यदि रामजी को मानते हैं तो रामजी का अर्थात् सात्विक भोजन करें और रावण को मानते हैं तो तामसिक भोजन करें। अपना पूरा जीवन ही रामायण हो अर्थात् राम के समान आचरण करने वाला। सतयुग-त्रेता और द्वापरयुग में हमारे पूर्वज देवी-देवता सात्विक भोजन करते थे इसलिए वहां विचार पवित्र, श्रेष्ठ और महान थे। इंदौर से पधारे अंतराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर व बिहेवियर साइंटिस्ट डॉ. अजय शुक्ला ने कहा इन पांच दिनों में बीके गीता दीदी ने जो अमूल्य बातें बताई हैं उसे आत्मसात करेंगे तो जीवन बदल जाएगा। इस दौरान बीना सेवाकेंद्र प्रभारी बीके सरोज, खुरई की प्रभारी बीके किरण, खिमलासा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जानकी, राहतगढ़ सेवाकेंद्र प्रभारी बीके नीलम, बीके शिवानी, बीके सरस्वती, विधायक महेश राय, जनपद सदस्य इंदरसिंह ठाकुर, मजदूर संघ जिलाध्यक्ष सुशील सिरोठिया ने दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

जन्म-जन्म जिसकी तलाश थी वह आ गया है: नारायण

धर्मस्व मंत्री ताम्रध्वज साहू को बीके नारायण शील्ड प्रदान करते हुए।

शिव आमंत्रण ❯ राजिम/छत्तीसगढ़। कुंभ मेले में संस्थान के धार्मिक प्रभाग के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य बीके नारायण ने अपने विचार रखते हुए कहा, कि विश्व में सभी को सुख, शांति, आनंद की तलाश है उसका आधार ज्ञान है और ज्ञान देने वाला ज्ञान दाता निराकार परमपिता परमात्मा शिव है। इस ज्ञान के आधार से हम हर समय अपने आपको खुश व शांत रख सकते हैं। हमारे दिल को आराम देने के लिए परमात्मा शिव इस धरा पर अवतरित हो चुके हैं। छत्तीसगढ़ के राजिम में प्रतिवर्ष महाशिवरात्रि के पर्व पर राजिम कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष इस पावन पर्व के उपलक्ष्य में महानदी, पेरी, सोन्दू इन तीनों नदियों के संगम स्थल पर यह आयोजन हुआ। मेला 19 फरवरी से 4 मार्च तक चला। बीके नारायण ने बताया, कि अब वह सुनहरी घड़ियां हम सभी की नज़रों के सामने हैं क्योंकि परमात्मा शिव वर्तमान समय कलयुग और सतयुग के संगम पर प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के माध्यम से हम सब मनुष्य आत्माओं को जन्म जन्म की प्राप्ति का सुख, शांति का वर्षा दे रहे हैं। शिव के आगमन से नई दुनिया का आगमन निश्चित है उस परमात्मा शिव के अवतरण का यह संदेश सभी आत्माओं तक पहुंच रहा है और हर आत्मा सुख, शांति, पवित्रता का वर्सा ले रही है। वर्तमान समय हम परिवर्तन काल से गुजर रहे हैं जब कलियुग की समाप्ति और सतयुग का आरंभ होता है। इसी संगम पर परमात्मा अवतरित होते हैं और इसी स्वर्णिम वेला में परमात्मा शिव और आत्माओं का मिलन होता है। इसी मिलन के स्वरूप का यादगार पूरे विश्व भर में शिव जयंती मनाई जाती है। हमारी यही शुभ आशा है कि आये हुए लोग परमात्मा शिव को पहचान कर उनसे जन्म-जन्म की आस को पूर्ण करें।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. चरण दास महंत, धर्मस्व पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री ताम्रध्वज साहू, आचार्य महामंडलेश्वर अग्नि पीठाधीश्वर श्रीराम कृष्णानंद महाराज, अमरकटक, बीके पुष्पा एवम् अनेक संत, महात्मा, विधायक उपस्थित थे।

सामाजिक सरोकार राजकोट गुजरात सेवाकेंद्र का आयोजन

600 लोगों की जांची सेहत, मरीजों को दी निःशुल्क दवाइयां

शिव आमंत्रण ❯ राजकोट/गुजरात। मेहुलनगर सेवाकेंद्र के वार्षिक उत्सव और राजकोट के गोल्डन जुबली समारोह के मौके पर गुजरात के राजकोट में स्वास्थ संबंधित लाभ देने का प्रयास किया गया। मेहुलनगर सेवाकेंद्र पर निःशुल्क सर्व रोग निदान कैंप का आयोजन कर सैकड़ों लोगों के स्वास्थ्य की न सिर्फ जांच की गई बल्कि उन्हें निःशुल्क दवाईयां भी वितरित की गईं। इस निःशुल्क कैंप का उद्घाटन करने पहुंची डिप्टी मेयर अश्विन मोलिया ने कहा, कि हम सभी को शारीरिक योग और राजयोग के अभ्यास द्वारा तन तथा मन को स्वस्थ बनाना चाहिए। वहीं राजकोट सबज़ोन की संचालिका बीके भारती ने कहा, कि भारत कर्म प्रधान देश है और हम सभी को श्रेष्ठ कर्म करना चाहिए जिसके लिए श्रेष्ठ संकल्प करना ज़रूरी है। इस दौरान फिज़िशियन डॉ. मिलन घोणिया, डॉ. तुषार व्यास, डॉ. कश्यप, डॉ. हितेश पटेल, डॉ. महेश चावड़ा समेत अनेक चिकित्सकों ने लगभग 600 लोगों के स्वास्थ्य की जांच की और उन्हें दवाईयां निःशुल्क उपलब्ध कराई। शिविर के दौरान अतिथियों को बीके भारती ने राजकोट की गोल्डन जुबली के उपलक्ष्य में मोमेंटो भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके चेतना समेत कई विशिष्ट लोग मौजूद रहे।

मैसूर की प्रभारी बीके लक्ष्मी का सम्मान

मैसूर की प्रभारी बीके लक्ष्मी का सम्मान करते कृषि सेमिनार के आयोजक

शिव आमंत्रण ❯ मैसूर। कृषि सेमिनार में मैसूर की प्रभारी बीके लक्ष्मी को मुख्य अतिथि के तौर पर आमंत्रित किया गया, जहां उन्होंने किसान को देश की रीढ़ की हड्डी बताते हुए उन्हें आन्तरिक रुप से सशक्त बनने की सलाह दी। इस सेमिनार के अंत में बीके लक्ष्मी का सम्मान भी किया गया।

आध्यात्मिक ज्ञान से ही संभव है जीवन में सच्ची खुशी

बीके बीना का शॉल ओढ़ाकर सम्मान करते रोटरी क्लब सदस्य।

शिव आमंत्रण ❯ चेन्नई। चेन्नई ट्रेड सेन्टर के कंवेंशन सेन्टर में रोटरी इंटरनेशनल द्वारा आर.आई डिस्ट्रिक्ट 3160 की 35वीं डिस्ट्रिक्ट कॉन्फ्रेन्स आयोजित की गई, जिसमें ब्रह्माकुमारीज़ मुख्य रुप से आमंत्रित हुए। इस अवसर पर मौजूद 1500 रोटरी क्लब मेम्बर्स को तमिलनाडु ज़ोन की सर्विस कॉर्डिनेटर बीके बीना ने 'खुशी के अनुभव' विषय पर सम्बोधित किया और कहा, कि आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा ही जीवन में सच्ची खुशी प्राप्त की जा सकती है।

शहीद जवानों को बीके भाई-बहनों ने दी श्रद्धांजली

पुलवामा के शहीद जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करते बीके भाई-बहनें

शिव आमंत्रण ❯ नई दिल्ली। पुलवामा में आतंकवादी हमले में हुए शहीद फौजी जवानों को ब्रह्माकुमारीज़ नई दिल्ली, इन्द्रपुरी द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर सेन्टर इंचार्ज बीके बाला ने सभी को देश रक्षक फौजी भाईयों के बलिदान और देश के प्रति समर्पण का महत्व बताते हुए कहा, कि हम सभी भी विश्व के साथ-साथ यज्ञ रक्षक भी हैं और माया के तूफान कई रूपों में हमारे सामने आते हैं जिसका हमें सावधानी से और फौजी भाईयों की ही तरह डट कर सामना करना चाहिए। साथ में बीके गायत्री और बीके अभिनव भी शामिल रहे।

आत्मिक दृष्टि से ही समाज वसुधैव कुटुम्बकम् कहलाएगा

सर्व धर्म सम्मेलन में सभा को संबोधित करती बीके जयंती।

शिव आमंत्रण ❯ इंदौर। समाज में सद्भाव बनाने हेतु इस्लामिक एजुकेशन एंड वेलफेयर सोसाइटी द्वारा आयोजित सर्व धर्म सम्मेलन को संबोधित करते हुए कलानी नगर सेवाकेंद्र प्रभारी बीके जयंती ने कहा, हम सभी एक पिता की संतान हैं, आत्मा आत्मा भाई-भाई हैं। जब हमारी दृष्टि आत्मिक होगी तभी समाज वसुधैव कुटुंबकम कहलायेगा, तभी सभी में भाईचारे की भावना उत्पन्न होगी, आपसी मतभेद समाप्त होगा, एक दूसरे में सौहार्द बढ़ेगा, तभी हम सभी एक बेहतर भारत बनाने में सक्षम बन सकेंगे। इंदौर में अभय प्रशाल स्पोर्ट्स क्लब के लाभ मंडपम में आयोजित इस सम्मेलन की थीम थी 'एक बेहतर भारत का निर्माण'। सभी धर्मों के प्रतिनिधियों के साथ ब्रह्माकुमारीज़ भी विशेष तौर पर आमंत्रित हुईं। वहीं विशिष्ट अतिथियों ने भी सम्मेलन में अपने विचार रखे। अंत में बीके जयंती को मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया।

सार समाचार

पूर्वी दिल्ली में निकाली शिवदर्शन प्रभात फेरी

दिलशाद गार्डन सेवाकेन्द्र द्वारा निकाली प्रभात फेरी में शामिल बीके भाई-बहनें।

शिव आमंत्रण ❯ पूर्वी दिल्ली। जन-जन को परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण का संदेश देने के उद्देश्य से राजधानी दिल्ली में दिलशाद गार्डन के शांति सदन सेवाकेन्द्र द्वारा शिवध्वजारोहण कर प्रभात फेरी निकाली गई। ये फेरी दिलशाद गार्डन सेवाकेन्द्र से होते हुए विवेक विहार की गीता पाठशाला में जाकर समाप्त हुई। जहां आई सर्जन डॉ. मूल चंद, ईस्ट दिल्ली कॉरपोरेशन हॉस्पिटल की चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉ. संध्या, दिलशाद गार्डन सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके इंद्रा मुख्य रुप से मौजूद थी। प्रातः काल निकाली गई इस रैली में सदस्यों ने बैनर एवं शिवध्वज लेकर स्थानीय लोगों को ईश्वरीय संदेश दिया, जिसके पश्चात् विवेक विहार गीता पाठशाला में मौजूद संस्था के वरिष्ठ सदस्यों ने सभी को शिवरात्रि से पूर्व अपने जीवन में महान परिवर्तन करने का संकल्प लेते हुए सच्ची शिवजयंती मनाने का आह्वान किया। इस दौरान छोटे बच्चों के द्वारा कुछ प्रस्तुतियां दी गई, वहीं बीके बहनों ने केक कटिंग कर सभी को बधाई दी।

108 गांवों मे शिव संदेश देने का संकल्प

शिव आमंत्रण ❯ छतरपुर/मप्र। इस वर्ष महाशिवरात्रि पर्व पर 108 गांवों में जाकर जन-जन को परमात्म अवतरण का दिव्य संदेश देने का संकल्प लिया है। इसके अंतर्गत पहला कार्यक्रम ग्राम गौरारी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रभात फेरी से हुई जिसमें ग्राम वासी बड़ी संख्या में शामिल हुए तथा यह फेरी ग्राम के प्रमुख मार्गों से होते हुए कार्यक्रम स्थल तक पहुंची। बीके शैलजा ने उपस्थित सभा को शिवरात्रि पर्व का आध्यात्मिक रहस्य सुनाते हुए बताया, कि शिवरात्रि पर भक्त परंपरागत रूप से शिव की प्रतिमा पर बेर, अक, धतूरा आदि जहरीली सामग्री चढ़ाते हैं जो कि प्रतीकात्मक है। यह मनुष्य के अंदर वैर भाव, ईर्ष्या, निन्दा, छल, कपट, बदले की भावना इत्यादि बुराईयों का प्रतीक है। उन्होंने बताया, कि वर्तमान समय कलयुग के प्रभाव के कारण हर मनुष्य इन बुराईयों से घिरा हुआ है इसलिए आज परिवारिक झगड़े, सामाजिक मतभेद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद इत्यादि अपनी चरम सीमा पर है तथा अब हमें इन सभी बुराईयों को परमात्मा शिव पर भेंट चढ़ाकर सच्ची शिवरात्रि मनानी है। कार्यक्रम का उद्देश स्पष्ट करते हुए उन्होंने बताया, कि महाशिवरात्रि का यह कार्यक्रम एक अभियान के रूप चलाया जाएगा जिसका लक्ष्य जिले के 108 गाँवों में जाकर ग्रामीणों को स्वच्छता और व्यसन मुक्ति के लिए जागरूक करना एवं ईश्वरीय संदेश देकर लोगों को दुःख-अशान्ति से मुक्त करना है।

नवापारा में महाआरती का आयोजन

शिव आमंत्रण ❯ राजिम/छत्तीसगढ़। नवापारा में 15 दिनों तक चलने वाले राजिम पुन्नी मेले में ब्रह्माकुमारीज़ आमंत्रित हुए, इस मेले में महानदी संगम पर छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा हर शाम नदी पर्यावरण व संरक्षण हेतु गंगा आरती की गई, जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर संस्था के धार्मिक प्रभाग के राष्ट्रीय कार्यकारी सदस्य बीके नारायण एवं राज़िम क्षेत्र की प्रभारी बीके पुष्पा विशेष रुप से शामिल हुई और महाआरती की। इस अवसर पर बीके पुष्पा ने आध्यात्मिकता की शक्ति से प्रकृति, वनों का संरक्षण व पोषण करने के लिए परमात्मा के द्वारा सिखाए जा रहे राजयोग का प्रयोग करने की बात कही।

ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा में योग प्रशिक्षकों का किया सम्मान, संभाग के 5 ज़िलों से पहुंचे 250 योग प्रशिक्षक

योग की जानकारी सबको देना ही योगियों का मुख्य कर्तव्य : संजय अग्रवाल

योग प्रशिक्षक कार्यक्रम में बोलते संजय अग्रवाल एवं उपस्थित योग प्रशिक्षक। साथ टिकरापारा सेवाकेंद्र प्रभारी बीके मंजू।

शिव आमंत्रण ❯ विलासपुर। नीतियां बदल सकती हैं किन्तु एक योगी का पथ कभी नहीं बदल सकता इसलिए कभी भी उदास होकर अपने को कमज़ोर न समझें। योग का बल इतना प्रबल होता है कि एक साधारण व्यक्ति भी असाधारण कार्य करने की क्षमता रखता है। इस क्षेत्र में अनेक संस्थाएं कार्य कर रही हैं। भले ही वे अपने स्तर पर कार्य कर रही हों परन्तु लक्ष्य एवं विचार सभी के एक ही हैं। ये बातें संभाग स्तरीय योग जागरण यात्रा में शामिल योगयात्रियों के सम्मान समारोह के लिए ब्रह्माकुमारीज़ टिकरापारा में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित योग प्रशिक्षकों को संबोधित करते हुए छत्तीसगढ़ योग आयोग के पूर्व अध्यक्ष संजय अग्रवाल ने कही। आपने बताया, कि हम ज़्यादातर वस्तुएं ज़रूरत के कारण नहीं बल्कि आकर्षण के कारण खरीद लेते हैं जो सालों साल आलमारियों में रखी रहती हैं और जो वस्तुएं स्थिर होती हैं उनमें नकारात्मक ऊर्जा होती हैं। आज ज़्यादातर हम भोजन के समय टीवी और मोबाइल की दुनिया में कहीं और खोए होते हैं और अपनी दिनचर्या को खराब कर दिया है, हमारे शरीर के पांच तत्वों में एक भी तत्व असंतुलित हो तो शरीर रोगग्रस्त हो जाता है। अग्नि तत्व बढ़ने से वात बढ़ता है, जल तत्व बढ़ने से कफ बढ़ता है, दोनों बढ़ने से पित्त बढ़ता है और तीनों बिगड़ जाएं तो रक्तदोष हो जाता है जिससे फिर शरीर में रोग आ जाता है और खुशियां समाप्त हो जाती हैं। आज घर में धन, संपदा, ऐश्वर्य तो है किन्तु आपसी तालमेल नहीं है, चेहरे की खुशी गायब है। हम बाहर के लोगों से तो हंसकर बात करते हैं किन्तु घर में आते ही तनाव में आ जाते हैं। इसलिए रात्रि भोजन भी टीवी व मोबाइल बंद करके घर के सभी सदस्यों के साथ मिलकर करें। लोगों को योग की जानकारी देना ही हम सभी योगियों का मुख्य कर्तव्य व सबसे बड़ा सहयोग है। गायत्री परिवार के प्रमुख सी.पी. सिंह ने कहा, कि मनुष्य जीवन श्रेष्ठ जीवन है। स्वयं के कल्याण के साथ लोक कल्याण भी करना है तब मनुष्य में देवत्व का उदय हो सकता है। रायपुर से पधारी महिला पतंजलि की प्रदेश प्रभारी गंगा अग्रवाल ने कहा, कि प्रतिदिन एक घण्टा योगाभ्यास ज़रूर करें। कार्यक्रम में अटल विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जी.डी. शर्मा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य डॉ. रवि श्रीनिवास एवं शरद बल्हाल, रेलवे अधिकारी पी.एन. खत्री, महाराष्ट्र मण्डल के अध्यक्ष प्रकाश शितुत, गुजराती समाज के सक्रिय सदस्य नटवर सोनछात्रा एवं गोपाल कक्कड़, नगर के गणमान्य नागरिक एवं संभाग के 5 ज़िलों से पधारे लगभग 500 योग प्रशिक्षक उपस्थित हुए।

सकारात्मक विचारों से मिलती है जीवन में सफलता

पाथवे ऑफ सक्सेस कार्यशाला में उपस्थित छात्र तथा बीके यीशु

शिव आमंत्रण ❯ गाज़ियाबाद/उप्र। सकारात्मक विचारों के ज़रिये कैसे सफलता की सीढ़ियों तक पहुंचा जा सकता है, इसे एक कार्यशाला में विशेषज्ञों ने विभिन्न वैज्ञानिक तकनीक के ज़रिये विद्यार्थियों को समझाया। उन्हें विभिन्न मुद्राओं की वैज्ञानिक विधियों के ज़रिये नकारात्मक विचारों को दिलों दिमाग से बाहर निकाल फेंकने की तरकीबें बताई। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा, कि रोजाना जो कुछ भी आप करें, ध्यान लगाने के बाद उन पर विचार करें। आप सोचें कि आज आपने क्या सकारात्मक कार्य किया? क्या सकारात्मक विचार आपके दिमाग में आये? आप जब इन बातों व विचारों को जानने लगेंगे तो पाएंगे कि आपके भीतर सकारात्मक ऊर्जा का अर्जन हो रहा है। आपके भीतर एक ठहराव आ रहा है। आप निश्चिन्तता की ओर बढ़ने लगे हैं। बस यही जीवन को स्थिर करने का ठोस उपाय है, जो आपको हमेशा सफलता की सीढ़ियों तक पहुंचाएगा।

नागपुरवासियों को सिखाई तनाव प्रबंधन की योग कला

तनाव प्रबन्धन की कला सिखाते बीके शक्तिराज एवंम् योग का अनुभव करते लोग।

शिव आमंत्रण ❯ नागपुर। महाराष्ट्र की उपराजधानी और संतरों की नगरी नागपुर के रहिवासियों को खुशियों की नई सौगात मिली है। जामठा स्थित विश्व शांति सरोवर में हाल ही में वाह जिंदगी वाह - खुशियों का बिग बाजार विषय के तहत त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। शिविर को अंतरराष्ट्रीय ट्रेनर एवं मोटिवेशनल वक्ता मुख्यालय माउंट आबू से पधारे बीके शक्तिराज सिंह ने मार्गदर्शित किया। शिविर में मेमोरी मैनेजमेंट, तनाव प्रबन्धन की कला और राजयोग मेडिटेशन समेत स्वस्थ जीवन हेतु उपयोगी अन्य व्यवहारिक बातों की जानकारी दी गई। वही मन की शक्ति द्वारा सिरदर्द, डायबिटीज, ब्लड प्रेशर, एसीडिटी, अस्थमा आदि रोगों पर विजय पाने की विधि भी समझाई गई। शिविर के समापन सत्र में प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए।

'गॉड ऑफ गॉड्स' फिल्म में एक दृश्य का अवलोकन करते धर्मगुरु

'गॉड ऑफ गॉड्स' फिल्म का दिल्ली से शुभारंभ

'गॉड ऑफ गॉड्स' का राष्ट्रीय शुभारंभ करते अतिथि।

शिव आमंत्रण ▸ नई दिल्ली। महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य पर ब्रह्माकुमारी संस्था के फिल्म डिवीजन द्वारा निर्मित 'गॉड ऑफ गॉड्स' देवों के भगवान फिल्म का राष्ट्रीय शुभारम्भ आज स्थानीय ओडियन सिनेमाघर में हुआ। विभिन्न धर्म सम्प्रदाय के नेताओं ने सम्मिलित रूप में दीप प्रज्वलन कर इस फिल्म का शुभारम्भ करने के पश्चात इस फिल्म का स्क्रीनिंग एवं मीडियाप्रीव्यू भी उसी सिनेमा घर में हुआ। 'ईश्वर भक्ति से देश भक्ति की ओर एक यात्रा' मर्म पर आधारित एवं मानवीय मूल्यों औंर धार्मिक एकता का संदेश देने बाली यह डेढ़ घंटे की यह फिल्म को सभी नेताओं ने सराहा और समग्र देश तथा विदेशों में अनेक भाषाओं में इसे प्रदर्शित करने के लिए आग्रह किया। जैन धर्मगुरू आचार्य डॉ लोकेश मुनी ने कहा कि यह फिल्म जब हम एक ही ईश्वर को, एक ही लाईट को जान जायेगें तो एकता, भाईचारे, सदभाव,, प्रेम व शान्ति का स्वप्न साकार होगा। यह स्वार्थ से उठकर परार्थ, परमार्थ की ले जाने व धर्म हमें तोड़ना नहीं जोड़ना सिखाता है संदेश देती है। इस अवसर पर अपने व्यक्तव्य में लोकेश मुनि ने पाकिस्तान सेना के बंदी विंग कमांडर अभिनंदन की तुरंत रिहा के लिए पाकिस्तान के ऊपर दबाव डालने तथा सभी एक होकर ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए सभी धर्म के नेताओं को और देशवासियों को अपील की। उन्होंने कहा की सभी मनुष्य आत्माओं के परमपिता एक निराकार परमात्मा ही है, इसी संदेश को फैलाने वाली यह फिल्म सभी धर्मों को और समग्र विश्व को एकता के सूत्र में बांधने की क्षमता रखती है। भारत में बहाई धर्म के नेशनल ट्रस्टी डॉ. एके मर्चेन्ट ने कहा कि यह फिल्म लोगों में विशेषकर युवा पीढ़ी को शिक्षित करने व समझाने के लिए कि सभी धर्मों को संदेश एक है कि परमात्मा एक है। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था एवं फिम्म के निर्माता द्वारा किये गये प्रयासों की सराहना की। महाशक्तिपीठ के स्वामी सर्वानन्द सरस्वती जी ने कहा कि यह फिल्म सनातम धर्म व फिलॉसफी के बिल्कुल समीप लाकर व भ्रांतियों को दूर करने तथा आज के समय के लिए उपयोगी, आचरणीय, अनुकरणीय एवं शान्ति और ईश्वर की प्राप्ति का साधन है।

दिल्ली के रामलीला मैदान में सामूहिक योग कार्यक्रम आयोजित

शिव आमंत्रण ▸ दिल्ली। दिल्ली के शालीमार बाग स्थित रामलीला मैदान में विशाल पैमाने पर आयोजित सामूहिक राजयोग कार्य म सम्पन्न हुआ। संस्थान के आतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन, ओम शांति रिट्रीट सेन्टर की निदेशिका बीके आशा, पीस ऑफ माइंड चैनल के सीडीएम् बीके रवि समेत कई बीके सदस्यों द्वारा शिवध्वजारोहन कर कार्यक्रम का आगाज हुआ। वही रैली निकालकर सभी को शांति का सन्देश दिया गया। इस मौके पर हिमांशु आर्ट इंस्टीट्यूशन और ब्रह्माकुमारिज के संयुक्त प्रयास से मेरी जिन्दगी का लक्ष विषय के तहत स्पॉट पेंटिंग प्रतियोगिता आयोजित हुई जिसमें विजेता बच्चों को प्रमाणपत्र भी भेट किये गए।

शालिमार बाग योग कार्यक्रम के तहत निकाली गई शोभायात्रा एवम् राजयोग के लिए उपस्थित बीके भाई बहनें।

पहल लोगों ने बढ़-चढ़कर लिया भाग

ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन

शिव आमंत्रण ▸ राजकोट । राजकोट के रविरत्ना पार्क सेवाकेन्द्र द्वारा सोमेश्वर महादेव मंदिर में मेगा ब्लड डोनेशन कैम्प का आयोजन हुआ, जिसका शुभारम्भ एम.डी फिज़ीशियन डॉ. कमल पारिक, किडनी स्पेशालिस्ट डॉ. मयूर मक्शाना, रविरत्ना पार्क सेवाकेन्द्र प्रभारी बीके नलिनी, पंचशील सेवाकेन्द्र से आई वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके अंजू ने दीप जलाकर किया। इस दौरान आए हुए मेहमानों ने रक्त दान करने का महत्व बताया, वहीं दूसरी ओर कई लोगों ने रक्त दान कर औरों की ज़िन्दगी को बचाने का महान कार्य किया।

सूचना

सामाजिक सेवाओं तथा आंतरिक सशक्तिकरण के प्रयास के साथ निकाला गया मासिक **शिव आमंत्रण समाचार पत्र** एक संपूर्ण अखबार है। इसमें आप सभी पाठकों का लगातार सहयोग मिल रहा है, यही हमारी ताकत है।

वार्षिक मूल्य ▸ 110 रुपए
तीन वर्ष ▸ 330
आजीवन ▸ 2500 रुपए

पत्र व्यवहार का पता

संपादक ▸ ब्र.कु. कोमल
ब्रह्माकुमारीज़ शिव आमंत्रण ऑफिस,
शांतिवन, आबू रोड, जिला- सिरोही,
राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो ▸ 9414172596, 9413384884
Email ▸ shivamantran@bkivv.org
▸ amantran.bihar@gmail.com

इंटरनेशनल संस्करण की शुरुआत

गॉडलीवुड स्टूडियो प्रतिदिन नया आयाम तय कर रहा है। चाहे स्थानीय भाषाओं को लेकर हो या हर वर्ग की बेहतरी के लिए। गॉडलीवुड स्टूडियो में अब नालेज आफ लाईट इंटरनेशनल एपिसोड प्रारम्भ हुआ है। जिसमें विदेश के संस्था से जुड़े सौ प्रतिष्ठित वक्ताओं ने इसमें अपना योगदान दिया है। अब तक सौ से ज्यादा एपिसोड रिकार्ड किये जा चुके हैं। यह अंग्रेजी भाषा में है। जिससे पश्चिमी देशों के लोगों के लिए उनकी समस्याओं को सुलझाने में मदद करेगा। लम्बे समय से इसकी जरूरत महसूस की जा रही थी। यह प्रयास रंग लाया। अब ओम शांति चैनल तथा अन्य माध्यमों द्वारा भी लोगों तक पहुंचाने का प्रयास किया जायेगा।

बीके हरीलाल, कार्यकारी निदेशक, गॉडलीवुड स्टूडियो, माउंट आबू (राजस्थान)

स्व प्रबंधन

सृष्टि-चक्र की हर एक घटना कल्याणकारी

बीके ऊषा, स्व प्रबंधन विशेषज्ञ, माउंट आबू

एक और सत्य घटना भी हमें याद आती है

"एक बार एक भाई की कार एक्सीडेंट हो गया और उसमें उसके दोनों पैरों में फ्रैक्चर हो गए और वह हॉस्पीटल में था। जैसे ही हमें पता चला तो हम उनको मिलने लिए हॉस्पीटल गये। हमने उस भाई से कहा 'भगवान को याद करो सब ठीक हो जायेगा।' यह सुनते ही उस भाई को बहुत गुस्सा आया और कहने लगा 'भगवान का नाम मत लो, भगवान बहुत बुरा है, मेरे साथ भगवान ने ऐसा क्यों किया?' वह कहने लगा, 'बहनजी, मैंने कभी किसी का बुरा नहीं किया फिर भगवान ने ऐसा क्यों किया? हमें बड़ा आश्चर्य लग रहा था क्योंकि यह शब्द किसी नास्तिक के नहीं थे। भगवान में आस्था रखने वाले के मुख से ऐसे शब्द निकल रहे थे। इस घटना से उसकी भगवान में आस्था हिल गई थी और वह बड़ा दु:खी हो रहा था। आखिर हमें महसूस होने लगा कि जितना ज्यादा देर यहाँ खड़े रहगें उतना इस भाई का गुस्सा बढ़ता जायेगा तो बेहतर है कि हम बाहर चले जाएँ। धीरे-धीरे करके हम बाहर जाने लगे तो उस भाई की पत्नी ने हमें देखा और वह तुरन्त बाहर आकर हमसे माफी मांगने लगी और कहने लगी कि 'हम उनके पति की बातों का बुरा न मानें और इस समय उनकी मानसिक स्थिति को समझने का प्रयत्न करें।' हमने उनको पुछा कि 'ऐसी क्या बात है जो एक एक्सीडेंट में सिर्फ फ्रैक्चर ही तो हुआ है लेकिन जान तो बच गई।' तब उसकी पत्नी ने बताया कि उसके पति लाईन्स या रोटरी कलब के गवर्नर थे और हमेशा समाज में बहुत अच्छे-अच्छे कार्य करते थे। हर जरूरतमंद की मदद करते थे लेकिन अब उनका कार्य-काल समाप्त हो रहा था और उन्हें विदेश में किसी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जाना था और जहाँ उन्हें एवार्ड देकर सम्मानित किया जाना था, लेकिन दस दिन पहले उनका एक्सीडेंट हो गया और जाहिर है कि दस दिन के अन्दर तो वह ठीक होकर जा नहीं सकते है। वह सोचते थे कि उस सम्मेलन में दुनिया भर के बड़े-बड़े लोगों के बीच इतना सम्मान मिलना था, लेकिन अब कुछ भी नहीं मिलेगा इसलिए उनको दु:ख हो रहा था और बार-बार यहीं कह रहे थे कि भगवान ने मेरे साथ ही ऐसा क्यों किया? उसके मन में यह बात थी कि मैंने जो कर्म किया उसका फल लेने का समय आया तो भगवान ने मेरे हाथ से फल क्यों छीन लिया। हमारे सामने किसी ने उसे कहा कि देखो भाई कोई पूर्व कर्म का फल भी तो भोगना चाहता है तब उसने कहा कि पूर्व कर्म के फल की कहां मना है परन्तु वहां से वापस आने के बाद भगवान फल देता। हम तो वहां से चले गये परन्तु आठ-दस दिन के बाद सतगुरूवार का भोग (प्रसाद) लेकर जाते हैं, हो सकता है कि भाई की मानसिक स्थिति ठीक हो।

जीवन में जो होता अच्छा ही होता है

हम परमात्मा प्रसाद लेकर अस्पताल पहुंचे तो वह भाई और उसकी पत्नी दोनों बहुत खुश नजर आ रहे थे। हमें देखकर उस भाई ने कहा आओ बहन जी आओ, देखो भगवान जो करता है वह अच्छा ही होता है।' मुझे फिर आश्चर्य हुआ तब उन्होंने मुझे अखबार उठाकर दिखाया कि जिस हवाई जहाज में वह जाने वाला था वह बीच में ही किसी तकनीकि खराबी की वजह से दुर्घटना ग्रस्त हो गया है। उसमें सवार सारे यात्री मारे गये।' वह भाई कहने लगा कि 'आज अगर मैं जिन्दा हूँ तो इस छोटे से एक्सीडेंट की वजह से, नहीं तो उसी जहाज में होता तो मेरी भी जान जाती।' उस भाई की सारी मानसिकता बदल गई थी और वह अच्छी-अच्छी बातें करने लगे कि बहनजी मैंने कभी किसी का बुरा नहीं किया था न इसीलिए मेरे साथ ऐसा हुआ। अब वह अच्छी-अच्छी बातें करने लगे कि 'होनी तो मेरे सामने आनी ही थी लेकिन भगवान ने उसे सूली से कांटा कर दिया। सिर्फ दो पैर ही फैक्चर हुए और वह भी था वह भी थोड़े दिनों में ठीक हो जायेंगे। उसको बाद कहने लगा कि 'सचमुच आज मुझे ऐसा महसूस हो रहा है कि जैसे भगवान ने मुझे सबसे बड़ा एवार्ड दिया है, जो एक नया जीवनदान दिया है.....

हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखें

जब वह भाई इतनी अच्छी बातें कर रहा था तो उसकी पत्नी ने कहा अगर यह ज्ञान दस दिन पहले आ गया होता था तो कितना अच्छा होता, मेरे जीवन के सबसे खराब दिन गये तो यह दस दिन गये। न जाने भगवान को कितनी गाली दी होगी और जो भी आता था और उसने भी अगर भगवान का नाम लिया तो उनके साथ भी संबन्ध खराब होने जैसा व्यवहार करता था, फिर मुझे एक-एक को बाहर ले जाकर हाथ जोड़कर माफी मांगनी पड़ती थी। उस बहन ने कहा, बहनजी, मैंने अपने कर्मों के लिए इतनी माफी किसी से नहीं मांगी जितना इसके कर्म के लिए मांगनी पड़ी, तो यह ज्ञान पहले क्यों नहीं आता? मैंने उस बहन से कहा 'बहनजी समय का शुक्र मानो कि समय ने दस दिन में परदा खोल दिया कि इस घटना में क्या अच्छा समाया हुआ था, कभी-कभी जीवन किसी घटना का परदा समय एक साल के बाद खोलता कि उसमें क्या अच्छा समाया हुआ होता है, तब वह साल कैसा जाता, और एक साल बाद जब सच्चाई सामने आती है तब हम यही कहते हैं कि अच्छा हुआ था, ऐसा नहीं होता तो पता नहीं आज क्या हो जाना था।' इसलिए कम से कम जब कोई घटना आती है तो पहले ही सकरात्मक दृष्टिकोण जीवन में अपनायें कि 'जो हुआ वह अच्छा, फिर कोई भी घटना हमें दु:खी, परेशान या अफसोस नहीं कर सकेगी। सकारात्मक दृष्टिकोण ही जीवन में आध्ययत्मिकता का व्यावहारिक स्वरूप है।

क्रमश:.....

मुंबई के एक सभागार में आशीर्वचन देने के पश्चात 103 वर्षीय दादी जानकी...

जब आपसी मतभेद समाप्त होगा, तभी एक-दूसरे में स्नेह-सौहार्द बढ़ेगा:बीके कमलेश

103वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में महाराष्ट्र जोन का आयोजन, पुणे विद्यापीठ ने दिया अवार्ड।

शिव आमंत्रण हरदूआगंज/उप्र। शिव जयंती महोत्सव के शुभारंभ पर पुलवामा हमले में शहीद हुए जवानों को सभी बीके भाई-बहनों ने श्रद्धांजली देते हुए उनकी आत्मा की शांति की कामना की। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि भारत का रक्षक भगवान है। अब समय आ गया है कि सरकार समाधान के लिए ब्रह्माकुमारीज़ जैसे संस्थान से भी विचार-विमर्श करे इससे सबके लिए कल्याणकारी समाधान निकाला जा सकता है।

इस अवसर पर ब्रह्माकुमारी कमलेश बहन ने शिव का ध्वज फहराया तथा ईश्वरीय ज्ञान जीवन में धारण करने की प्रतिज्ञा कराई कि हम सभी एक परमात्मा पिता की संतान हैं, आत्मा-आत्मा भाई-भाई हैं। जब हमारी दृष्टि आत्मिक होगी तभी समाज वसुधैव कुटुंबकम कहलायेगा, तभी सभी में भाईचारे की भावना उत्पन्न होगी, आपसी मतभेद समाप्त होगा, एक दूसरे में सौहार्द्र बढ़ेगा, तभी हम सभी एक बेहतर भारत बनाने में सक्षम बन सकेंगे। तभी हम दुनिया में आतंकवाद पर भी नियंत्रण पाया जा सकता है।

ये रहे उपस्थित...

कार्यक्रम में उपस्थित पुलिस उप निरीक्षक इंचार्ज पनैठी, एफएम न्यूज चैनल के प्रोपराइटर मोहित, तालानगरी औद्योगिक विकास एसोसिएशन के महामंत्री सुनील दत्ता, उद्योगपति बहन दिव्यानी, बीजेपी नेता अशोक, ब्र.कु. कमलेश, सत्य प्रकाश, मोनिका, सीमा, रूबी, हर्षा, नीरू, हेमा, शिवा, राखी, प्रेरणा के साथ और भी अन्य भाई बहन शामिल हुए।

शिव जयंती महोत्सव में शहीदों को दी श्रद्धांजलि

शिवजयंती के मौके पर अनेक भाई-बहनों के साथ पुलिस कर्मचारी भी शामिल होते हुए।

सागर में शिव जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया

शिव आमंत्रण सागर/मप्र। ब्रह्माकुमारी सेवाकेंद्र पर 83वीं शिव जयंती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान नगर में शिव संदेश यात्रा निकाली गई। इसमें बुराइयों को प्रतीक बनाकर लोगों को व्यसन मुक्त बनने, जीवन में अच्छाई धारण करने का संदेश दिया गया। सेवाकेंद्र संचालिका बीके छाया ने शिव ध्वज फहराकर महोत्सव की शुरुआत की। इसके अलावा सागर के गौरझामर सेवाकेंद्र, राहतगढ़, केसली, बंडा, मालथौन, गौरतगंज सहित गीतापाठशालाओं पर शिवध्वज फहराया गया।

किसान मेला एवं ज्ञान संगोष्ठी आयोजित

यौगिक खेती पर नाटक कर किसानों को प्रेरित करते कलाकार।

शिव आमंत्रण हरदूआगंज/उप्र। शिवजयंती किसान भाई अपने खेत में बहुत मेहनत करते हैं। खाद बीज आदि अच्छे से अच्छा डालते हैं। इसमें एक बात और एड कर लीजिए कि सुबह शाम अपने खेत पर जाकर कुछ देर परमात्मा की याद में बैठिए। परमात्मा से योग की किरणें लेकर अपनी फसल को दीजिए तो आपकी पैदावार अधिक भी होगी तथा पौष्टिक भी होगी। अनेक बीमारियों से भी फसल की रक्षा हो जाएगी। ब्रह्माकुमार सत्य प्रकाश ने जनपद अलीगढ में हो रही शाश्वत यौगिक खेती का उदाहरण देते हुए बताया कि यह एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा बहुत कम खर्च में अधिक पैदावार ली जा सकती है। ब्रह्माकुमारी मीनू ने गीतों के माध्यम से शाश्वत यौगिक खेती विषय पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर परमात्म ज्ञान द्वारा शांति और खुशी विषय पर स्टाल भी लगाई गई जिसका अवलोकन मंडलायुक्त अलीगढ़ अजय दीप सिंह आईएएस ने किया तथा बहुत उपयोगी बताया। मंडलायुक्त अजय दीप सिंह आईएएस ने शाश्वत यौगिक खेती को बहुत उपयोगी बताया तथा इसे अपनाने का किसानों को सुझाव दिया। इस अवसर पर प्रकृति की पुकार नाटक का मंचन किया गया जिसे देखकर उपस्थित कृषकों ने वृक्षों का महत्व समझा। आयुक्त अलीगढ मंडल अजय दीप सिंह, आई ए एस , डीडी एग्रीकल्चर, राजेश कुमार, ब्रह्माकुमारी कमलेश, ब्रह्माकुमार सत्यप्रकाश , ब्रह्माकुमारी मीनू, कृषि वैज्ञानिकगण।

मैसूर में 18 फीट ऊंचा महाशिवलिंग बनाया

शिवलिंग का उद्घाटन करते हुए सुत्तुर पीठाधीश्वर, चुनानागिरि पीठाधीश्वर तथा पूर्व विधायक वस आदि एवं उपस्थित लोग।

शिव आमंत्रण मैसूर। कर्नाटक के मैसूर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 18 फीट ऊंचा महाशिवलिंग बनाया गया है और वह सत्तुर श्री शिवरात्रिश्वरा शिवयोगी के जतरा जुबली सेलिब्रेशन्स में लगाया गया। इस शिवलिंग को 1 लाख एल.ई.डी द्वारा सजाए जाने पर वंडर बुक ऑफ रिकॉर्ड में भी दर्ज किया जा चुका है। इस मौके पर सुत्तुर पीठाधीश्वर, चुनानागिरि पीठाधीश्वर तथा पूर्व विधायक वसु, बीके प्रभामणि समेत अन्य अतिथियों ने महाशिवलिंग दर्शन का दीप प्रज्वलन एवं रिबन काटकर शुभारंभ किया जिसका लाखों लोगों ने अवलोकन कर परमात्मा शिव का सत्य परिचय प्राप्त किया।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय शांतिवन आबू रोड में 21 दिवसीय फेस्टिवल आयोजित

फेस्टिवल में एक लाख से अधिक लोगों ने जाने हेल्थ-वेल्थ और हैप्पीनेस के जाने राज

जन-जन की आवाज़ रेडियो मधुबन द्वारा यह कार्यक्रम फ़रवरी और मार्च के प्रति सोमवार सुबह 11:30 बजे एवं शाम 7 बजे प्रसारित किया जायेगा।

शिव आमंत्रण ❯ आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज संस्था के सोशल एक्टिविटी ग्रुप द्वारा संस्था के शांतिवन में 21 दिवसीय हेल्थ, वेल्थ, हैप्पीनेस आध्यात्मिक मेला का आयोजन किया गया। मेले में एक लाख से अधिक लोगों ने पहुंचकर जीवन में हेल्थ-वेल्थ और हैप्पीनेस के राज जाने। इसके उद्घाटन पर ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा कि यह आध्यात्मिक मेला व्यक्ति को नर से नारायण बनायेगा। इसका अवलोकन प्रत्येक व्यक्ति करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही जो ग्रामीणों को जैविक, यौगिक खेती, जल संवर्धन और नशामुक्ति का प्रशिक्षण दिया जा रहा है वह सराहनीय है। इससे आस पास के लोगों को इसके प्रति जागरूकता आयेगी। परमात्मा का दर्शन और स्वर्गिक दुनिया निश्चित तौर पर लोगों को आकर्षित करने वाली है। कार्यक्रम में आबू रेवदर विधायक जगसीराम कोली ने कहा कि यह संस्थान लगातार लोगों की बेहतरी के लिए प्रयास कर रहा है। जो जन जन में ईश्वरीय संदेश के साथ सरकारी मुहिम को आगे बढ़ाने में मदद की है उससे शिवरात्रि महोत्सव का मेला सार्थक हो गया। आबू पिण्डवाड़ा विधायक समाराम गरासिया ने कहा कि 15 दिनों तक यह संस्थान पूरे गॉव गॉव में जाकर लोगों का पानी, बिजली, खेती, स्वच्छता और नशामुक्ति का अभियान चलाया है वह बहुत ही लाभकारी होगा। इस अवसर पर संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि यह स्वर्गिक दुनिया निश्चित तौर पर लोगों को लुभा रही है। यही आने वाली दुनिया होगी जिसमें हमें चलना है। इसलिए हमें अभी से अपने जीवन में मूल्यों को धारण करने का प्रयास करना चाहिए। यह उसका लाईव चित्रण है। कार्यक्रम में संस्था के सूचना निदेशक बीके करूणा ने कहा कि आस पास के लोगों के लिए इस बार शिवरात्रि पर ऐसा अनोखा मेला सौगात के रूप में मिला है जो जीवन बदलने वाला है। समारोह में शांतिवन के प्रबन्धक बीके भूपला तथा नगरपालिका चेयरमैन सुरेश सिंदल ने कहा कि शहर को साफ सुथरा रखने में इस संस्थान ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसलिए यह मेला भी निश्चित तौर पर लोगों के लिए उपयोगी होगा। इस मौके पर संस्थान की कोषाधिकारी ईशू दादी, सोशल एक्टीविटी ग्रुप के अध्यक्ष बीके भरत, शिवसेना के उपप्रमुख उमेश छंगाणी, साइंटिस्ट एवं इंजिनियरविंग के बीके मोहन सिंघल, बीके अवतार ने भी अपने अपने विचार व्यक्त किये। इस कार्यक्रम में बीके मोहन, बीके भानू, बीके रामसुख मिश्रा, अनूप सिंह, बीके सचिन, बीके देव, बीके कोमल, बीके अमरदीप, बीके जीतू, बीके चन्दा, बीके कृष्णा, बीके ध्रुपा समेत बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। ये लगे स्टॉलः जैविक यौगिक खेती, जल संवर्धन, स्वच्छ स्वस्थ भारत, नशामुक्ति, वैल्यू गेम, 4डी शो, खुशियों का बिग बाजार, सतयुग राजदरबार लगाया गया था।

भदोही

योग से समस्या समाधान कार्यक्रम में बीके सूरज के उद्गार...

जीवन में जो घटित हो रहा है उसे अंतर्मन से स्वीकार करें

कार्यक्रम का आगाज़ करते हुब बीके सुरज भाई, बीके रूपेश, समाजसेवी अब्दुल हादी और अन्य अतिथि।

शिव आमंत्रण ❯ भदोही। पुलवामा में शहीद हुए जवानों को सभी भाई-बहनों ने मौन में खड़े होकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद शैलेजा ने नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में बीके गीता बहन ने कहा कि अपनी सोच बदले इस संबंध मे प्रधानमंत्री का यादगार संस्मरण सुनाया की उन्होंने कहा कचरे बाली आयी है तो उनकी मां ने कहा कि कि वो सफाई बाली है कचरे बाले तो हम हैं। ब्रह्माकुमारीज द्वारा योग से सर्व समस्याओं का समाधान विषय पर आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए माउण्ट आबू से पधारे ब्र.कु.राजयोगी सूर्य भाईजी ने कहा कि मानव जीवन को सुगम बनाने का सबसे सरल उपाय है कि हमारे जीवन में जो भी घटनाएं घटित हो रही है उसे हम अंतरमन से स्वीकार कर लें। उन्होंने कहा कि यदि हमारी आत्मिक स्थिति मजबूत है तो कोई भी परिस्थिति या समस्या हमें विचलित नहीं कर सकती है। भौतिकता की चकाचौंध ने मानव मन को इतना दूषित कर दिया है वह इन साधनों में ही सुख और शांति की तलाश कर रहा है। जबकि सुख और शांति का शाश्वत स्रोत तो परमात्मा है। उसकी याद में बैठने से हमें स्वतः ही सुख और शांति की अनुभूति होने लगती है। राजयोग का अभ्यास हमारे मन की शक्ति बढ़ाता है इसलिए हमें प्रतिदिन अपने लिए आधा घंटा समय निकालकर राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करना चाहिए। इससे हमारे जीवन में सकारात्मक बदलाव आता है।

ब्रह्मकुमारीज विश्व शांति भवन भदोही के मेडिटेशन हाल में माउंट आबू से पधारे हुए आदरणीय राजयोगी बी के सूरज भाई जी ने अमृतबेले सुबह 3.30 से 4.45 का योग कराया। आदरणीय भाई जी ने आत्मा को परमपिता परमात्मा की सर्व शक्तियां प्रेम, पवित्रता, सुख, शांति, शक्ति, ज्ञान, आनंद से भरपूर कर दिया, फिर इन शक्तियों को सारे विश्व में फैलाकर सर्व विश्व की आत्माओं के सुख शांति और समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर भदोही सेवाकेन्द्र पर सैकड़ों की संख्या में लोग अमृतबेले पहुंचे और स्वयं को भरपूर किया। इस अवसर पर भदोही के बीधायक रवींद्र नाथ त्रिपाठी, समाज सेवी अब्दुल हादी, माउंट आबू से पधारे हुए मुख्य अतिथि आदरणीय बी के सूरज भाई, बी के रूपेश भाई, बी के गीता बहन, भदोही सेवाकेन्द्र प्रभारी बी के विजयलक्ष्मी दीदी उपस्थित रहे।

नई राहें

बीके पुष्पेन्द्र

उत्सव के रूप में मनाएं 'परीक्षा परिणाम'

अप्रैल में ज्यादातर कक्षाओं के परीक्षा परिणाम आ जाते हैं। ऐसे में कम नंबर आने या परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने पर कई विद्यार्थी निराशा और अवसाद में डूब जाते हैं। कई बच्चों के मन में घोर निराशा छा जाती है। ऐसी स्थिति में माता-पिता का दायित्व और बढ़ जाता है। चूंकि विद्यार्थी जीवन की कठिन परिस्थितियों से अनभिज्ञ होते हैं ऐसे में वह परीक्षा परिणाम को ही जीवन मान लेते हैं। माता-पिता और बड़े भाई-बहनों को चाहिए कि वह बच्चों को समझाएं कि किसी एक परीक्षा में असफल होना जीवन नहीं है। उनका हौसला बढ़ाते हुए उन्हें ये एहसास कराएं कि जीवन के हर मोड़ पर हम सभी आपके साथ खड़े हैं। यदि इस बार असफल हो भी गए तो कोई बात नहीं। सफलता-असफलता जीवन के दो पहलू हैं। दुनिया में जितने महापुरुष हुए हैं या जिन्होंने महान कार्य किए हैं उन्होंने भी अपने जीवन में असफलता का स्वाद चखा है। दुःख-दर्द सहन करते हुए लोगों का तिरस्कार सहा है। लेकिन जीवन इससे अमूल्य, आपको आगे बढ़ना है।

किसी दवा से कम नहीं है सकारात्मक मोटिवेशन...

बच्चों को समझाएं कि सबसे बड़ी सफलता है जीवन को मूल्यों और सिद्धांतों के साथ जीना। असफलता से ज्यादा ये मायने रखता है कि हमने सफलता के लिए कितनी ईमानदारी के साथ प्रयास किया है। जरूरी नहीं है कि परीक्षा में कम नंबर आए तो आप कमजोर हो। आप परमात्मा पिता की प्रिय संतान हो, आपको जीवन में महान कार्य करना है। परीक्षा परिणाम यदि बच्चे के मन मुआफिक नहीं भी आया है तो उसे यह एहसास नहीं होने दें कि आप उससे नाराज हैं। क्योंकि ऐसी स्थिति में बच्चा पहले से ही डरा और सहमा हुआ होता है। ऊपर से अभिभावकों की नाराजगी से उसका दर्द और बढ़ जाता है। बच्चे के परीक्षा परिणाम को उत्सव के रूप में मनाएं। ताकि भविष्य के लिए वह तैयार हो सके कि माता-पिता सफलता और असफलता में मेरे साथ हैं। आज घरों में बच्चों को सबसे ज्यादा अपनों के सकारात्मक मोटिवेशन की जरूरत है। मोटिवेशन बच्चों के लिए किसी दवा से कम नहीं होता है। बच्चे सबसे ज्यादा बड़ों को फॉलो या कॉपी करते हैं। ऐसे में हमारा आचरण सभ्य, सुसंस्कृत और मर्यादा के अनुकूल हो। उन्हें कोई भी निर्देश देने के पहले वह बात हमारे जीवन में भी हो। बच्चों के सामने हताशा या निराशा भरी बातों से बचें। घर का माहौल जितना सकारात्मक व उत्साह भरा होगा वैसा ही बच्चे सीखते हैं।

सम्मानजनक व्यवहार करें...

देखने आता है कि कई अभिभावक ज्यादातर समय अपने बच्चे को बुद्धु, नालायक, शैतान जैसे शब्दों से पुकारते हैं। मनोविज्ञान के मुताबिक यदि कोई शब्द हम 20-25 बार सुनते हैं तो वह हमारे अंतर्मन में चला जाता है। जो बात हमारे अंतर्मन में सेव हो जाती है फिर वैसे ही हमारे मन में विचार आते हैं और उसी तरह हमारे कर्म होते जाते हैं। जब आप किसी बच्चे को दिन में कई बार बुद्धु कहेंगे तो एक दिन वह भी मान लेगा कि मैं बुद्धु हूं। मुझमें अन्य बच्चों की अपेक्षा कम बुद्धि है, मेरा दिमाग कमजोर है। परीक्षा में मेरे अच्छे नंबर नहीं आ सकते हैं। हमारे एक-एक शब्द का बच्चों के मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, इसलिए शब्द रूपी बाण चुने हुए हों। बच्चों को हौसला और हिम्मत देने वाले हों, न कि उन्हें गिराने वाले।

हर बच्चा अपने आप में अनोखा है...

इस दुनिया में प्रत्येक बच्चा अपने आप में विशिष्ट, अनोखा और उत्कृष्ट है। क्योंकि प्रत्येक आत्मा अपने साथ पूर्व जन्म के संस्कार और आदतें लेकर आती है। इसलिए कभी भी अपने बच्चे की तुलना अन्य से न करें। उसमें जो खूबी है वह अन्य में नहीं हो सकती है। यही कारण है कि प्रत्येक बच्चे की पसंद-नापसंद और रुचि अलग-अलग होती है। हमारे साथ जीवन में जो भी घटता है सभी में कुछ न कुछ कल्याण समाया होता है। गीता में परमात्मा ने कहा है कि जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है अच्छा हो रहा है और जो होने वाला है वह बहुत ही अच्छा है। तुम्हारा क्या था जो दुःख करते हो। ये सभी जो इन आंखों से देखते हो सब यहीं रह जाएगा।

लेखक शिव आमंत्रण के संयुक्त संपादक हैं।

थाईलैंड में मोरल अवार्ड से सम्मानित...

बीके ऊषा और बीके विजय को मोरल अवार्ड से नवाजा

शिव आमंत्रण » नखोन पथोम/थाईलैंड। थाईलैण्ड की नखोन पथोम राजाबट्ट यूनिवर्सिटी द्वारा आई.सी.ए.सी के आर्ट एण्ड कल्चर नेटवर्क की 9वें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बीके उषा को मोरल अवार्ड 2019 से नवाज़ा गया। ये अवार्ड खुद फिलीपीन्स की राजकुमारी मारिया अमोर तथा कम्बोडिया की राजकुमारी एवं क्वीन मदर ऑफ घाना ने थाईलैण्ड के टॉप गवर्नमेंट ऑफिशियल्स की मौजूदगी में दिया। मोरल अवार्ड समेत पीस मेडल तथा सर्टिफिकेट ऑफ एप्रिसिएशन से भी बीके उषा को सम्मानित किया गया। इस मौके पर उनके साथ नेपाल के राजयोग प्रशिक्षक बीके विजय भी वहां मौजूद थे, जिन्हें नेपाल में किए गए मानवीय कार्यों के लिए मोरल अवार्ड का सम्मान दिया गया। इस अवसर पर 40 से अधिक देशों के कार्मिकों को समाज में उनके द्वारा किए गए नैतिक भलाई एवं पुण्य कार्य के लिए अवार्ड से सम्मानित किया गया था। इस दौरान बीके उषा ने विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षुओं की एक समूह बैठक में भी भाग लिया, जहां उन्होंने भिक्षुओं के मुद्दों और समस्याओं पर चर्चा की। आज हर कोई खुशी की तलाश कर रहा है और आध्यात्मिकता ही ऐसा माध्यम है जिसके अभ्यास से सच्ची खुशी को प्राप्त किया जा सकता है। राजयोग मेडिटेशन द्वारा परमपिता परमात्मा से संबंध रखते हुए विभिन्न उपलब्धियां प्राप्त करने की एक तकनीक है। अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के विभिन्न प्रभागों द्वारा हर क्षेत्र के लोगों के लिए की जा रही ईश्वरीय सेवाओं से भी अवगत कराया।

थाईलैंड में मोरल अवार्ड प्राप्त करने के पश्चात ग्रुप के साथ बीके ऊषा एवम् बीके विजय।

हॉलीवुड स्टूडियो में ब्रह्माकुमारीज़ के गीत की रिकॉर्डिंग हुई

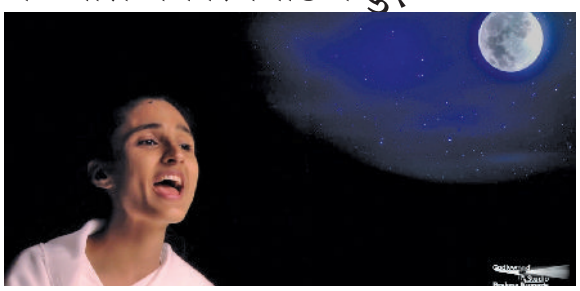

बीके हरमन कौर कैलिफोर्निया के हॉलीवुड कैपिटल स्टूडियो में प्रस्तुति देते

शिव आमंत्रण » कैलिफोर्निया। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के गॉडलीवुड स्टूडियो द्वारा रीज़नल कल्चर को लेके विभिन्न भाषाओं में कार्य म बनाए जाते है, इसमें विविध भाषाओं में 1100 से अधिक गीत बनाए जा चुके हैं। जिसमें वेस्टर्न म्यूज़िक पर आधारित अंग्रेजी गीतों को भी बनाने की शुरुआत की गई है। इसी के चलते ऑस्ट्रेलिया की बीके हरमन कौर द्वारा वेस्टर्न म्यूज़िक पर आधारित गीत 'पिलर टू द् मून' का निर्माण कैलिफोर्निया में हॉलीवुड के कैपिटल स्टूडियो में किया गया है जो कि संस्थान के लिए गौरव की बात है। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के इतिहास में ये पहली बार है जब संस्थान के किसी गीत की रीकॉर्डिंग दुनिया की श्रेष्ठ चित्र निर्माण भूमि अमेरिका में की गई हो। अपने प्रभावशाली और अत्याधुनिक रिकॉर्डिंग उपकरणों तथा जाने-माने कलाकारों में फ्रैंक सिनात्रा, नेट किंग कोल, डीन मार्टिन, बारबरा स्ट्रिसैंड, पॉल मैककार्टनी और बीच बॉयज़ के प्रभावशाली लाइन-अप के लिए विश्व प्रसिद्ध है।अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकों और ग्लोबल बीके परिवार के लिए प्रस्तुत ये गीत ऑस्ट्रेलिया की बीके हरमन द्वारा लिखित, रचित है और गाया गया है। इस गीत को कैपिटल स्टूडियो द्वारा अरेंज, मिक्स और मास्टर किया गया, वहीं गॉडलीवुड स्टूडियो में इस गीत की एडिटिंग और फिल्मिंग की गई है।

अचीविंग सक्सेस लीडिंग कार्यक्रम

कार्यक्रम में बीके परिवार के साथ बीके चार्ली तथा अन्य।

शिव आमंत्रण » सिंगापुर। ऑस्ट्रेलिया में ब्रह्माकुमारीज के डायरेक्टर बीके चार्ली 5 दिवसीय प्रवास पर सिंगापुर पहुंचे जहां स्थानीय बीके मेम्बर्स ने उनका हार्दिक स्वागत किया। उनके आगमन पर ब्रह्माकुमारीज़ के सम्पर्क में रहने वाले लोगों के लिए बेदोक के सिंगापुर सिलट फेडरेशन में एक इवेंट आयोजित हुआ, जिसमें 500 से अधिक लोगों ने सहभागिता की। इस आयोजन में परिवारों के वरिष्ठ सदस्यों से लेकर नन्हें बच्चों ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की, जहां उन्हें बीके चार्ली ने अचीविंग सक्सेस लीडिंग विषय के तहत जीवन जीने के कई प्रेरणादायी टिप्स दिए। इस अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से भोजन की व्यवस्था भी प्रदान की गई थी जिसकी तैयारी में सिंगापुर में ब्रह्माकुमारीज़ की नेशनल कॉर्डिनेटर बीके भारती समेत प्रत्येक सदस्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी ' म में मेडिटेशन, माइंड फुलनेस विषय के अन्तर्गत आयोजित पब्लिक कार्य' म में सैकड़ों लोगों को बीके चार्ली ने अपने व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों से लाभान्वित किया। आगे सिटी बैंक समेत अन्य कई स्थानों में भी कार्य' म आयोजित किए गए।

सार समाचार

सकारात्मक विचारों से होगा श्रेष्ठ भाग्य निर्माण

शिव आमंत्रण » देनपसार। इंडोनेशिया में बाली की राजधानी देनपसार में बिल्डर्स और कान्ट्रेक्टर्स के स्टाफ के लिए गेट टुगेदर होटल निर्मला के बौलरुम में आयोजित हुआ। इस अवसर पर इंडोनेशिया में ब्रह्माकुमारीज़ की नेशनल कॉर्डिनेटर बीके जानकी ने मैनेजिंग इनर एनर्जी विषय पर सभी को सम्बोधित किया और जीवन को सरल बनाने के लिए सकारात्मक विचारों से श्रेष्ठ भाग्य, मेडिटेशन द्वारा तनाव की समाप्ति समेत अन्य कई मुख्य बिन्दुओं पर विशेष प्रकाश डाला। इस अवसर पर बडुंग में कन्स्ट्रक्शन ग्रुप गपेन्सी के हेड आई मेड सुजाना समेत उनका स्टाफ मुख्य रुप से मौजूद रहा।

नई परियोजना गार्डन-लाइक सिटी' लॉन्च

शिव आमंत्रण » सेंट पीटर्सबर्ग। रूस के सेंट पीटर्सबर्ग स्थित लाइटहाउस में एक नई परियोजना 'गार्डन-लाइक सिटी' लॉन्च की गई। विशेष महिलाओं के लिए समर्पित इस परियोजना को शहर की सरकार की सामाजिक नीति और महिलाओं के गठबंधन समिति द्वारा समर्थन दिया गया है। इस मौके पर रशिया में सेंट पीटर्सबर्ग की निदेशिका बीके संतोष, महाभारत का रूसी अनुवाद करने वाले इंडोलॉजिस्ट प्रो. यारोस्लाव वासिलकोव, सेंट पीटर्सबर्ग में आर्मेनियन ऑटोनोमी के वाईस चेयरपर्सन नुने एस्ट्रोवा समेत गई गणमान्य अतिथि मुख्य रूप से मौजूद थे। इस मौके पर बीके संतोष ने इस ब्रह्मांड का मूल नियम परस्पर निर्भरता को बताते हुए, परियोजना की जानकारी दी।

स्कूली बच्चों को बताए राजयोग के लाभ

शिव आमंत्रण » बाली। बाली की राजधानी देनपसार के थियोलीना एफएम और पिलर प्रिंट के कर्मचारियों के नेतृत्व में एक स्थानीय प्रकाशन कंपनी द्वारा लगभग 60 स्कूली बच्चों को युवा लेखक बनने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस मौके पर विद्यार्थियों को संबोधित करने के लिए विशेष तौर पर आमंत्रित इंडोनेशिया में ब्रह्माकुमारीज की नेशनल कोऑर्डिनेटर बीके जानकी ने अपने उद्बोधन में राजयोग द्वारा होने वाले लाभों की जानकारी देते हुए जीवन में सदैव नवीनता लाने की बात कही।

अपने कर्म क्षेत्र पर सदा रखें करुणा का भाव

शिव आमंत्रण » न्यूयार्क/यूसए। न्यूयार्क यूएस में रखा गया ब्रह्माकुमारीज़ का एक कार्यक्रम में सबको दिया गया परमात्म संदेश। जहां अपने कर्म क्षेत्र पर सदा करूणा एवं दया का भाव बनाये रखने का संदेश दिया गया। इस तरह के भाव रखने से हमारे अंदर देवताई गुण हमेशा बरकरार रहता है।

Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2018-20, Licensed to Post without pre-payment No. RJ/WR/WPP/18/2018
Posted at Shantivan P.O. Dt. 18 to 20 of Each Month

आयोजन नेपाल के दांग जिले में तुलसीपुर सेवाकेंद्र के 25 वर्ष पूर्ण

रजत जयंती पर आध्यात्मिक समागम संपन्न

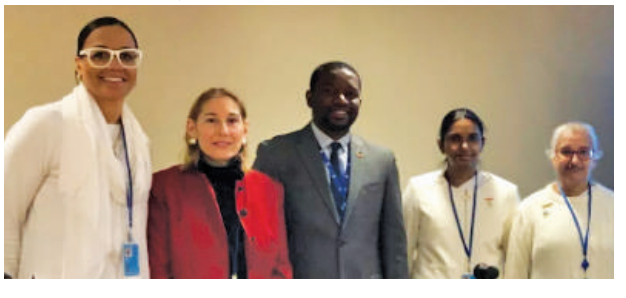

शिव आमंत्रण » तुलसीपुर। नेपाल के दांग जिले में तुलसीपुर ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र को 25 वर्ष पूर्ण होने पर आध्यात्मिक समागम आयोजित हुआ। दीप प्रज्वलन द्वारा शुभारम्भ हुए इस रजत जयंती समारोह में मुख्य अतिथि संसद सभामुख कृष्णबहादुर महरा ने अपने विचार रखे। बीके सदस्यों में पश्चिम नेपाल की निदेशिका बीके परिणीता, बीके गीता तो वही अन्य अतिथियों में न्यायाधीश शिवनारायण यादव, उपमहानगरपालिका का मेयर घनश्याम पाण्डे भी मौजूद रहे। समारोह की शुरूवात जहाँ सांस्कृतिक नृत्य से हुई वही शिवध्वज लेकर बीके सदस्यों द्वारा शोभायात्रा भी निकाली गई।

रजत जयंती समारोह में सम्मानित वरिष्ठ भाई-बहनें।

प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा प्रकाशित एवं डी.बी. सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित ● सलाहकार संपादक: प्रो. कमल दीक्षित ● संपादक: ब्र.कु. कोमल ● संयुक्त संपादक: ब्र.कु. पुष्पेन्द्र ● लेआउट: अमर (नोएडा) ● RNI No.: RJHIN/2013/53539